"परमानन्द-सागर"

1. जन्म-समय

१ (सारंग)

आजु नंदराय कैं आनन्द भयौ।
नाचति गोपी करति कुलाहल मंगलचारु ठयौ।।
राती पियरी चोली पहिरें नौतन झूमक सारी।
चोबा चंदन अंग लगायें सैंदुर माँग सँवारी।।
माखन दूध दह्यो भरि भाजन सकल ग्वाल लै आए।
बाजत बेनु बिषान महुवरी गावत गीत सुहाए।।
हरद दूब अच्छित दधि कुमकुम आँगन बाढी कीच।
तारी[1] दै दै हँसत परस्पर लागि लागि भुज बीच।।
कहुँब बेद-धुनि करत महामुनि पंच सबद ढमढोल।
'परमानंद' फिरत गोकुल में आनँद हृदय कलोल।।

२ (सारंग)

आजु बधाये[2] कौ दिन नीकौ।
नंद-घरुनि जसोमति जायौ है लाल भाँवतौ जी कौ।।
पंच सबद बाजन बाजत हैं घर घर तैं आयौ टीकौ।
मंगल कलस लियें ब्रज सुंदरि ग्वाल बनावत छीकौ।।
देंहिं[1] असीस गरग जु महामुनि जीवौ कोटि बरीसौ।
'परमानन्ददास' कौ ठाकुर गोप-भेष जगदीसौ।।

(३) (सारंग)

नंद ! बधाई दीजै ग्वालनि।
तुम्हारे ब स्याम मनोहर आए गोकुल के प्रतिपालनि।।

---

१. हँसत परस्पर प्रेम मुदित मन लागि (च) २. बधाई (ग. ज.)
२. देत असीस सकल गोपीजन जीवौ (ग. ज.)

गोपिनि[1] बहुविध भूषन दीजै विप्रनि दीजै गाइ।
गोकुल मंगल[2] महामहोच्छौ कमलनयन ब्रजराइ।।
नाचहिं गोपी औरु ग्वाल सब गावहिं गीत रसाल।
'परमानंद' प्रभु तुम चिरजीवहु नंद गोप के लाल।।

(४) (सारंग)

घर घर ग्वाल देत हैं हेरी।
बाजत ताल पखाज बाँसुरी ढोल दमामाँ भेरी।।
झोंटति लूटत खात मिठाई कहि न सकत कोउ फेरी।
उनमद ग्वाल करत कौतूहल[3] ब्रज–बनिता सब घेरी।।
ध्वजा पताका तोरन माला सबै सँवारत सेरी।
जै जै कृष्ण कहत 'परमानन्द' प्रगट्यो कंस कौ बैरी।।

(५) (सारंग)

गोकुल में बाजति कहाँ[4] बधाई।
भीर भई है नंद के द्वारें अष्ट महासिद्धि आई।।
ब्रह्मादिक इंद्रादिक जाकी चरन–रेनु नहिं पाई।
सोई नंद कौ पूत कहावत कौतुक सुनु मेरी माई।।
ध्रुव अंबरीष प्रह्लाद विभीषन नित नित महिमा गाई।
सो हरि 'परमानन्द' कौ ठाकुर ब्रजजन केलि कराई।।

(६) (धनाश्री)

जसोदा सोबन फूलें फूली।
तुम्हारें पूत भयो कुल–मंडन वासुदेव सम तूली।।
देहिं असीस बिरध ते ग्वालिनि गाँव गाँव तें आईं।
लै लै भेट सबै नीकी[5] सी मंगलचारु बधाईं।।
ऐसे दसक होंहिं जो औरें सब कोऊ सचु पावै।
बाढौ बंस नंद बाबा कौ 'परमानँद' गुन गावै।।

(७) (सारंग)

भादौं की रयनि अँधियारी•।
गरजत गगन दामिनी कोंधति गोकुल चले मुरारी।।

---

१. जुवतिनि (आ.), २. मंडन, ३. कोलाहल, ४. आज, ५. सबै मिलि निकसीं।

• 'सूरसागर' (नागरी प्र. स.) पद सं० १२६ में केवल पहिली तुक में सादृश्य–भ्रम होता है परन्तु दोनों पृथक् पृथक् हैं।

सेस सहस फन बूँद निवारत सेत छत्र सिर तान्यों।
वसुदेव–अंक मध्य जग–जीवन कहा करैगौ पान्यों।।
जमुना थाह भई तिहिं औसर आवत जात न जान्यों।
आनँद भयौ 'दास परमानँद' देव मुनिन मन मान्यों।।

८ (कान्हरौ)

जनमत ही आनंद भयौ।
नव निधि प्रगट भई नँद द्वारें सब दुख दूरि गयौ।।
वसुदेव देवकी मतौ उपायो पलना मेलि[1] लयौ।
कमला[2] कंत दियो हुंकारौ जमुना थाह[3] भयौ।।
नंद जसोदा के मन आनँद गरग बुलाइ लयौ।
'परमानँद' प्रभु असुर–निकंदन गोकुल प्रगट भयौ।।

९ (नायकी)

जनम लियौ सुभ लगुन विचार।
कृष्णपक्ष भादौं निसि आठें नछत्र रोहिनी अरु बुधवार।।
संख चक्र गदा पद्म पीतपट क्रीट मुकुट अरु मनि उजियार।
मुदित भए वसुदेव देवकी 'परमानन्ददास' बलिहार।।

१० (कान्हरौ)

आठें भादौं की अर्द्ध राति।
जनम लियो जगदीस मधुपुरी जग में जादौ जाति।।
बालक बदन देवकी देख्यौ उठि धाई अकुलात।
ऐसौ अद्‌भुत रूप चतुर्भुज देख्यौ वसुदेव तात।।
तेजोमय वपु धर्‌यौ मनोहर चितवत चितयौ न जात।
'परमानन्ददास' कौ ठाकुर नैननि ही मुसिक्यात।।

११ (पूर्वी)

रानी जू जायौ पूत सुलच्छन।
बिप्रनि दान देति[4] मनि भूषन बधूनि कों पट दच्छन।।
जनमत गयौ घोष कौ नसिकें सकल संताप ततच्छन।
'परमानन्द' प्रभु प्रगट भए हैं निज भक्तनि के रच्छन।।

---

१. माँझि, २. कमलनयन जब दियो
३. पार दयो (ग), ४. दिए मनि कंचन

१२ (कान्हरौ)

यह धन धर्म ही तें पायौ।
नीकें राखि जसोदा मइया नारायन घर आयौ।।
जा धन कों मुनि जप तप साधत[1] निगमहु पार न पायो।
सो धन धरयो छीरसागर में ब्रह्मा जाइ जगायो।।
जा धन तें गोकुल सुख लहिए बिगरे काज सँवारै।
सो धन बार बार उर अंतर 'परमानन्द' बिचारै।।

१३ (नायकी)

प्रगटे मोहन मंगल माई।
कृष्ण पक्ष भादौं निसि आठें घर घर बजति बधाई।।
बंदीजन औ भाट ब्राह्मन देस देस तै आए।
दिए पटंबर भूषन अंबर जो जाके मन भाए।।
तुम बिन और कौन त्रिभुवन में दियो मनहिं बढाई।
'परमानन्द' प्रभु के हित कारन औ सब जात जिबाई।।

१४ (बिलावल)

प्रगट भए हरि श्रीगोकुल में।
नाचत गोपी गोप परस्पर, आनँद प्रेम भरे हैं मन में।।
गृह गृह[2] तै गोपी सब निकसीं कंचन थार धरें हाथन में।
'परमानन्ददास' कौ ठाकुर प्रगटे नंद–जसोदा गृह में।।

१५ (धनाश्री)

नंद ! महोच्छौ हो बड कीजै।
अपने लाल पर बारि न्यौछावरि सब काहूकौं दीजै।।
विप्रनि देहु गाँइ अरु सोंनो भाटनि रूपौ दाम।
जुवतिनि देहु पटंबर भूषन पूजैं मन के काम।।
नाचहु गावहु करहु बधाई अजन जनम हरि लीनौं।
इह अवतार बाल–लीला–रस 'परमानन्द' हिं दीनौं।।

१६ (सारंग)

दधिकादौ आँगन नंद के।
मंगलचारु भयौ दसहूँ दिसि प्रगटे आनँदकंद के।।

---

१. खोजत, वेदहु पार (छ), २. घर घर तें व्रजरानी धावति

गाँइ गोप गोपीजन क्रीडत रहसत बालमुकुन्द के।
मानों लाभ भयो त्रिभुवन में मिटे सकल भव फंद के।।
बरषत सुमन देव मुनि हरषत गावत जस स्रुति–छंद के।
जो सुख नंद जसोदा रानी सो सुख 'परमानन्द' के।।

१७ (धनाश्री)

ब्रज[1] में बाजति आज बधाई।
नंद महर–घर पुत्र–जनम भयौ मेवा बहुत लुटाई।।
गाँव–गाँव तै बाला आईं स्रवन सुनत उठि धाईं।
देति असीस जियौ जसुमति-सुत हमें बहुत सचु पाई।।
बाजत ताल मृदंग बाँसुरी मानिनि मंगल गाई।
चोबा चंदन और अरगजा केसरि छोरि छिटाई।।
भादौं मास अष्टमी के दिन रितु वरषा बरसाई।
सुभ नछत्र सुभ बार घरी गुरु पत्री बाँचि सुनाई।।
दान मान दीजै बंदीजन ग्वालिनि बहु पहिराई।
'परमानन्ददास–कौ ठाकुर कीरति जग में गाई।।

१८ (मारू)

ब्रज में होत कुलाहल भारी।
आनँद मगन ग्वाल सब नाचत देत दिवावत[2] गारी।।
नंदराइ के भवन जु आवति आनंदित ब्रज–नारी।
पुत्र–जनम सुनि हरष भयो है 'परमानँद' बलिहारी।।

१९ (सारंग)

नंद–गृह बाजति आज बधाई।
जुरि आई सब भीर आँगन[3] में जनमे कुँवर कन्हाई।।
सुनत चलीं सब ब्रज की सुंदरि कर लिएँ कंचन थाल।
कुमकुम केसर अच्छित श्रीफल चलति ललित गति चाल।।
आज भइया यह भली भई है नंद–घर ढोटा जायौ।
हृदै–कमल फूल्यौ जु हमारौ सुनत बहुत सुख पायौ।।
दान मान विप्रनि बहु दीन्हे सबकी लेत असीस।
पुहपनि वृष्टि करत 'परमानँद' सुर जु कोटि तेतीस।।

---

१. ब्रजपुर बाजति, २. परस्पर तारी, ३. भवन

२० (सारंग)

चलो भइया आनंदराइ पें जैये।
जसुमति लाल लाडिलौ जनम्यो कछुक बधाई पैये।।
जाचकजन आवत माँगन कौं सुरभि हेम पद दीन्हें।
दुख दारिद्र नसे सबहिंन के जनम अजाची कीन्हे।।
घुरत विमान सब्द सहनाई बाजति है जु बधाई।
मानिनि सब मिलि मंगल गावति मोतिनि चौक पुराई।।
कौन पुन्य तप किए नंद जू कहत न आवै पार।
'परमानंद' प्रभु वैकुंठ जाकें ब्रज लीनौ अवतार।।

२१ (देवगंधार)

ब्रज में फूले फिरत अहीर।
नंद महर घर ढोटा जायौ सुख–निधि स्याम सरीर।।
मंगल कलस दूब दधि अच्छित वेद पढत द्विज धीर।
माँगन ग्वालि बधाई आईं देहु जसोदा चीर।।
फूले नंद ग्वाल पहिराए छिरकत कुमकुम–नीर।
'परमानंददास' कौ ठाकुर प्रगट्यो जादौ वीर।।

२२ (देवगंधार)

आजु अति बाढ्यो है अनुराग।
पूत भयो री नंद महर कें बडी वैस बड भाग।।
दई सबच्छ लच्छ द्वै गैयाँ नंद बढायौ ताग।
गुनी[1] गनक बंदीजन मागध पायौ अपनौ लाग।।
कूदें[2] ग्वाल मनौ रन जीते आनँद फूले वाग।
हरद दूब दधि माखन छिरकत मच्यौ भदैंया फाग।।
गोपी गोप ओप सबके मन गावत मंगल राग।
'परमानंददास' भक्तनि कौ भयौ परम सुहाग।।

२३ (सहानौ)

रावरि के गोप कहें आज ब्रज दूनी ओप
कान दै सुनौ बाजैं गोकुल में मंदिलरा।

---

१. *मागध सूत बदित बंदीजन पायो (अ)*
२. *कूके (आ.)*

जसुदा कें पूत भयौ वृषभानु सों जाइ कह्यो,
जहाँ तहाँ दौरी लै दूध घृत–गगरा।।
गो–वृन्द आगें धरें पाछें तिय मन हरें
चालि ना सकत कोऊ पावै नहिं डगरा।
'परमानंद' गिरिधरन जनम भयौ मन–हरन
फूल्यो फूल्यो फिरै जहाँ नारद सौ भँवरा।।

२४ (सारंग)

गह्यौ नंद सब गोपिनि मिलिकें दीजै हमहिं बधाई।
अखिल भुवन की कान्ह महानिधि सो तुम्हरे घर आई।।
नाचत[1] ग्वाल गावें सब व्रजजन आनँद उर न समाई।
कच-लर-कुच-ऊपर लटकति है यह छबि बरनी न जाई।।
मनभाए पट भूषन दीन्हे ग्वालनि सब पहिराई।
'परमानंद' नंद–घर–आनँद गोपी महानिधि पाई।।

२५ (सारंग)

नंद तुम्हारें आयो पूत।
खोलि भंडार अब देहु बधाई तेरौ भाग्य अद्‌भूत।।
लै लै घृत दधि देहरी पखारे तोरन माल बँधाए।
कंचन बसन अलंकृत रोरी विप्रनि धेनु दिवाए।।
विप्र सबै मिलि करत बेद–धुनि हरषित मंगल गाए।
सब दुख दूरि गए 'परमानन्द' आनँद उर न समाए।।

२६ (सारंग)

नंद महर कै ढोटा जायौ।
जननी जसुमति बदन निहारति सब गोपिनि मिलि मंगल गायौ।।
भवन चतुर्दस भई बधाई आनँद ढोल बजायौ।
गोकुल में कौतूहल माँच्यौ ग्वालिनि नाच्यौ गायौ।।
गुनी गंधर्व चारन बंदीजन स्रवन सुनत उठि धाए।
'परमानँद' प्रभु परम कृपानिधि श्रीपति भूतल आए।।

२७ (मारू)

सबतैं नंदराइ बडभागी।
प्रगट्यो मनमोहन जिनकें कीरति जग में छाई।।

---

१. बाजत तूर होत कौतूहल मंगलचारु सुहाई (ङ)

दिए कनक मनि दान अचल द्विज देखे ऐसे त्यागी।
'परमानन्द' बसौ गोकुल में फिरि कमला पग लागी।।

२८ (सारंग)

सबै मिलि मंगल गावहु माई।
आजु कान्ह[1] कौ जनम दिवस है बाजत रंग बधाई।।
आँगन लीपहु[2] चौक पुराबहु विप्र पढन लागौ बेदा।
करहु सिंगार स्यामसुंदर कौ चोबा चंदन मेदा।।
आनँद भरी जसोदा[3] मईया फूलन अंग समाई।
'परमानंददास' मन[4] इच्छत बहुत न्यौछावरि पाई।।

२९ (धनाश्री)

जसोदा आपनु मंगल गावै।
आज लाल की[5] बरस गांठि है मोतिन चौक पुरावै।।
गाँव–गाँव तें जाति आपुनी ग्वालिनि[6] न्योंति बुलावै।
अनूचान[7] मुनि गरग परासुर तिनपैं बेद पढावै।।
हरदी तेल सुगंध सुबासित लालन[8] उबटि नह्मवै।
हरि तन ऊपर बारि न्योंछावरि जन 'परमानँद' पावै।।

३० (विभास)

लाल की बरस–गाँठि है आज।
बाजन बाजें सब विधि नीकें कृष्ण–न्हवावन काज।।
फूले फिरत सबै रँग भीने पुनि पुनि देत असीस।
'परमानँद प्रभु अति ही मनोहर जीवौ कोटि बरीस।।

३१ (धनाश्री)

सुनि–सुनि आज सुदिन सुभ गाई।
बरस गाँठि गिरधरनलाल की बहुरि कुसल सों आई।।

---

१. लाल (अ. आ. ग. च.) लाल की बरस गाँठि है (ङ)
२. आँगन चंदन चौक
३. नंद जू की रानी फूली अंग न माई (अ. आ.) आनंद उमगि नंद जू की रानी प्रेम न हृदै समाई, फूली फिरत जसोधा रानी आनँद उर न समाई।
४. तिहि औसर (अ. आ. ग.) रानी जू आपनु (ज) ऐसा भी प्रारम्भ है
५. कौ जन्म –द्योस है (ङ) ६. गोपिनि (अ. आ.)
७. अनाचार अरु गरग. ८. लालै (अ. आ.)

गोपी सब मिलि मंगल गावतिं मोतिनि चौक पुराई।
बिबिध सुगंध उबटनौ करिकें कुँवर कान्ह अन्हवाई।।
पीताम्बर आभूषन सखियन करि सिंगार बनाई।
निरखि निरखि मुख कमलनयन कौ उर आनँद न समाई।।
तिलक करति अच्छित दै जसुमति सुत की लेत बलाई।
'परमानँद' प्रभु सब मन भायौ नंद–सुवन सुखदाई।।

३२ (देवगंधार)

आजु गोकुल में बजत बधाई।
नंद महर कैं पुत्र भयो है आनँद मंगल गाई।।
गाम गाम तैं जाति आपनी घर–घर तैं सब आइ।
उदय भयौ जादौ–कुल दीपक आनँद की निधि छाई।।
हरदी तेल फुलेल अच्छित दधि बंदनबार बँधाई।
नंदीसुर नँदराई घर–घर सबहिंन देत बधाई।।
आज लाल कौ जन्म–द्यौस है मंगलचारु सुहाई।
'परमानंददास' की जीवनि तीन लोक सचु पाई।।

३३ (जैतश्री)

जनम–दिवस की बानिक हेली मोपें बरनी न जाई।
निरखि कुँवरई कुँवर कान्ह की क्योंहू मन न अघाई।।
कियौ है सिंगार रोहिनी आपनु ब्रज सेनी समुदाई।
अरी ! वह ठाढौ है सिंघद्वार चलहु किन देखिये।।
पाग सुरंगी कुंकुमरंगी पेच रतन के झलकै।
ढिंग मुक्तावलि चौकी चमकै दमकत भाल रुपलकै।।
लटकन कैऊ जटित जराऊ अवत सिखरि पर ललकै।
मयूर चंद्रिका खचित मनि में जगमग जगमग झलकौ।।
कुसुम गुच्छ बहु बरन मंजरी उरसी है आऐं बाऐं।
उठति झकोरै खिरकि खिरकि सग बगे कच दरसाऐं।।
ढरकि रही दच्छिन दिसि हेली केस निकस रहे बाँऐ।
परमानंद मधु ऐंन सुरंजित पान बहुल से खाँऐ।।
अरी ! रम मारग सब रोक्यो है सजनी नैननि अंजन दीने।
तउ दृग अनुचर कृपा कटाच्छ सजि भौंह बंक मधु पीने।।

अनी सनी सुख अरुन हिडोरें प्रगटत भाव नवीने।
मृगमद तिलक पातरी रेखा सुभग सघन बन कीने।।
अरी ! रुचिर कपोल लोल मद उन्नत मंडित अच्छत रोरी।
गंडस्थली भाव–निधि मईयाँ केसरि बंदन–खौरी।।
द्वै द्वै लटकारी घुँघरारी बिलुलित माँझ ठगौरी।
भृकुटी अग्र फरक सरकनि में ब्रजजन होत हैं बौरी।।
अरी ! बदन सदन रखवारौ बाँकौ ललित लिलाट डिठोंना
नील कञ्ज रस में सौरभ सखि ! लेत हैं मधुकर छोंना।।
नग –बेसरि के नग बहु मौलिक ढरकनि माँझ ढरोंना।
हँसत लसत दसनावलि कोंधति चिबुक सुढार सलौना
अरी ! करनफूल मोतिनि के झूमक जगर–मगर मेरी माई।
सुंदर सींव मनोहर ग्रीवा ब्रज सब रह्यौ लुभाई।।
परति त्रिबली ठोढी घाटी प्रेम–सुहाई।
चढति है ब्रज–भामिनी ध्याना बस क्योंहू चढ्यौ न जाई।।
पीत है बागौ पीत काछनी प्रीति रंग सों ओपै।
चंद्रहार बैजंती चोहरी दामा दोहरी रोपै।।
चंपकली अरु छरा धुकधुकी कछु बाहर कछु गोपै।
हीरा हार हेल चमक की कहि न जात कछु मोपै।।
कनक सूत्र कौस्तुभमनि पहुँची अरु मनि–गन की भीर।
बनमाला बधना तिरछोंही दिपति नाभि सर तीर।।
गोलाकृति चौकी की पचलर माँझ मोर पिक कीर।
ए भूषन सबु आपु गढाए धनि धनि नंद अहीर।।
कठुला कंठसरी पन्ननि की हँसुली हेम जराऊ।
भुज मूलनि कृष्णागर बादर कीने हैं बलदाऊ।।
और अरगजा है घर के सब छिरको आए महल अगाऊ
है सरस अबीर निभाव.....भटू अरु झाऊ।।
टोडर पहुँची गजरा पहुँचिनि हाथ साँकरी सोभा।
अँगुरी दल मुद्रिका बिराजित जनु दामिनी के गोभा।।
कनक अरुन नव ग्रही केयूरनि विसद पिरोजनि ओभा।
.....।।
चरनकमल तल अरुन तरुन सखि ! नूपुर चूरा राजै।
लटक मटक पद पटक हटक में मधुरें मधुरे बाजै।।

नख ससि ब्यास प्रताप रश्मि बल दुति दिनकर की लाजें।
कंजाकृति दावनु फिरि आयौ पुरट कौर सुभ्राजें।।
अरी ! चौखटि सीढी अरु कोरनि पर फैलि रहे उजियारे।
चपला छटा कौन में ऐसे आभरन न्यारे न्यारे।।
उमड्यौ है गोकुल सिगरौ देखन कहा बिरध कहा बारे।
श्रीअंग सजल नील आभा के सब पर अंबर ढारे।।
चौंर ढरत चहुँधा तें हेली ! गाइक आगें गावैं।
भादौं की आठें कौं निज जसु प्रमुदित टेरि सुनावैं।।
बीरा सोंज सुगंध संमिल करि श्रीदामाजू खवावैं।
बोलत में मकरंद माधुरी चहुँदिसि तें चलि आवैं।।
घोष नृपति जू ढिंग ठाढें हैं दान करत बहु भाई।
हरष न माइ कंदरा उर में ऐसौ ढोटा पाई।।
घर घर द्विज ठाढे जूथनि सौं ते सब लए बुलाई।
तिनसौं राइ असीस पढावत फुनि फुनि वेद पढाई।।
इहि औसर 'परमानँद' ढाढी बहुत न्यौछावरि लीनी।
श्रीब्रजराज भाग की हेली सरस प्रसंसा कीनी।।
व्रजवधू हेरि रंक भिच्छुक कौ उनिहूँ कछु कछु दीनी।
आगे कहा कहूँ सुनि सजनी मनसा वा रँग भीनी।।

पलना

३४ (आसावरी)

माई ! कमलनयन स्यामसुंदर झूलत हैं पलना।
बाल लीला गावति सब गोकुल की ललना।।
अरुन तरुन चरन–कमल नख मनि ससि–जोती।
कुंचित[1] कच भँवराकृति लटकै गज–मोती।।
अँगुठा गहि कमल–पानि मेलत मुख माहीं।
अपनौ प्रतिबिंब देखि फुनि–फुनि मुसिकाहीं।।
जसुमति के पुन्य–पुंज निरखि[2] निरखि लालै।
'परमानंद' स्वामी गोपाल सुत सनेह पालै।।

---

१. *कुटिल केस (घ)*
२. *वारि वारि (अ. आ.)*

३५ (बिलावल)

• हालरू हलरावति माता।
बलि बलि जाउँ घोष सुख दाता।।
अति लोहित कर चरन सरोजें।
जे ब्रह्मादिक मनसा खोजें।।
जसुमति अपनौ पुन्य बिचारै।
बार बार मुख–कमल निहारै।।
सकल भुवन–पति गरुडागामी।
नंद–सुवन 'परमानँद'–स्वामी।।

३६ (आसावरी)

•• बारी मेरे लटकन पगु धरौ छतियाँ।
कमल–नयन बलि जाउँ बदन की
सोहति हैं नान्ही नान्ही दूध की द्वै दतियाँ।
इह मेरी इह तेरी इह बाबा नंद की इह बलभद्र की
इह ताकी जु झुलावै तेरौ पलना।
इहाँ तै चलि खरु खाति पिबति जलु
परिहरौ रुदन हँसौ मेरे ललना।।
रुनक–झुनक पग बजति पैजनियाँ
अलबल अलकल बोलौ मधु[1] बनिया।
'परमानँद' प्रभु त्रिभुवन–ठाकुर
ताहि खिलाबति नंद[2] जू की रनिया।।

३७ (आसावरी)

माई री ! मीठे हरिजू के बोलना।
पाँइ पेंजनिया रुन–झुन बाजै आँगन आँगन डोलना।।
कज्जर तिलक कंठ कठुलाबलि पीताबंर के चोलना।
'परमानंददास' की जीवनि गोपी झुलाबति झोलना।।

• *हालरौ हलरावै माता' से भी प्रारम्भ। इसी तुक से सूरसागर पद सं. ६६४ भी है।*

•• *हौ। बलि लटकन, वारी मेरे मोहन....ऐसे भी प्रारम्भ हैं.*

१. *मृदु.*

२. *नंद की घरनियाँ।*

३८ (देवगंधार)

•नंद–भवन में अबही देखा लरिका एक भला।
कहा कहौं अँग अँग की सोभा कोटिक काम कला।।
गावति हँसति हँसावति ग्वालनि झुलवति पकरि डला।
'परमानंददास' कौ ठाकुर मोहन नंद–लला।।

३९ (कान्हरौ)

रतन–जटित कंचन मनिमै नंद–सदन[1] मधि पालनों।
तापर गजमोतिनि लर लटकति[2]
तहाँ झूलत जसुदा जू कौ लालनों।।
किलकि–किलकि हुलसति[3] मन ही मन
चितवति नैन बिसालनों।
'परमानँद' प्रभु की छबि निरखति
आवति छिनु छिनु ब्रज–बालनों।।

४० (सारंग)

पालना झूलत बाल गोपाल।
गादी बैठि झुलावति जसुमति अति फूलीं देखतिं ब्रजबाल
कबहुँक गोद रोहिनी लैकै बोलति मैं बलिहारी लाल।
कबहुँक कनियाँ लेति गोपिका झुँझना दै जु खिलात उताल
कबहुँक नंदराइ लै पौढत ब्रजभूषन इत उत बलराम।
इह सुख धनि–धनि 'परमानँद' कों मनबांछित पूरे सब काम।।

४१ (सारंग)

झूलौ पालने हो लालन लेहुँ बलैयाँ तेरी।
गाऊँ गीत कहि जसुमति रानी चुटकी दै दै रीझे री ।।
हरि हँसि देत करत किलकारी द्वै दतियाँ सुभ दरसै री।
'परमानंद' बारनै कीजै तन मन धन लै सुत पै री।।

४२ (सारंग)

आजु मृदंग मेघ–धुनि गाजै।
सुनियत मंगलचार महर कें भुवन बधाई बाजै।।

• अद्‌भुत त देख्यो नंद–भवन में ....., ए भई..... ऐसे भी प्रारम्भ हैं,
१. भवन, २. लटकति अति तहाँ, ३. विलसति, विहँसति

हेरी दै–दै गाँइ खिलावौ गोप–भीर दरवाजै।
धाइ नंद जू देत बधाई ब्रज मंगलनि निबाजै।।
आँगनि हरदी कीच मचाई एक भरै इक भाजै।
एक नँद जू कों गारी गावै चढी अटारी छाजै।।
अति आनंद बढ्यौ गोकुल में विप्र वेद–धुनि साजै।
भादौं मास अँधियारी आठै सुत भयौ दिनन सु नाजै।।
भक्तनि हित अवतार लियौ है कंस निकंदन काजै।
'परमानंद' पालने झूलत बालमुकुंद बिराजै।।

४३ (बिलावल)

झुलाबति पलना महरि सुत कौं कर लिएँ नवनीत।
नैन अंजन दै गाल मसि बिंदुका औ उढयो पटपीत।।
बेंनी देखति मंद हँसति है कबहुँ होति भयभीत।
दै कर तारी[1] नाचति गोपी गावति मधुरे गीत।।
राई लोंन लै ऊपर बारति होत सकल अँग प्रीत।
परब्रह्म[2] गोकुल में झूलै 'परमानंद' पुनीत।।

४४ (मालकोस)

नंद कौ लाल झूलत पलना हँसत करत किलकइया।
पलना बाँध्यो रंगमहल में पचरँग डोरिनि मइया।।
मोर पपैया पाट के लटकन देखि देखि हुलसइया।
जगन्नाथ जीवन–धन माधौ 'परमानँद' बलि जइया।।

४५ (बिलावल)

जयोदा ! तेरे भागि की कही न जाइ।
जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्लभ सो प्रगटी है आइ।।
सिव नारद सनकादिक महामुनि मिलबे करत उपाय।
ते नँदलाल धूरि धूसर बपु रहति कंठ[3] लपटाइ।।
रतन जटित पौढाइ पालनें बदन देखि मुसिक्याइ।
झूलौ मेरे लाल ! जाउँ बलिहारी 'परमानँद' जस गाइ।।

---

१. *तार नचावति,*
२. *पूरन ब्रह्म,*
३. *गोद लै माइ*

स्वामिनी जी कौ जन्म समय–

४६ (गुर्जरी)

आजु रावलि में जै–जैकार।
प्रगट भई वृषभान गोप कें श्रीराधा अवतार।।
गृह–गृह तें सब चलीं बेगिही गावति मंगलचार।
प्रगट भई सोभा त्रिभुवन की रूप रासि सुखकार।।
नाचत गावत करत कुतूहल[1] भीर गई अति द्वार।
'परमानँद' वृषभानु–किसोरी[2] जोरी नंददुलार।।

४७ (भैरव)

श्रीराधा जू कौ जनम सुन्यौ मेरी माई !
साजि[3] सिंगार चलीं ब्रज गोपी[4] घर–घर बजति बधाई।।
अति सुकुवाँरि घरी सुभ लच्छन कीरति नै है जाई।
'परमानँद' करी न्यौछावरि घर–घर बात लुटाई।।

४८ (सारंग)

आजु बधाई की बिधि नीकी।
प्रगटी सुता वृषभानु गोप कैं परम भाँवती जी की।।
जिहिं देखत त्रिभुवन की सोभा लागति है अति फीकी।
'परमानँद' बलि बलि इहि जोरी सुंदर साँवरे पी की।।

४९ (सारंग)

प्रगट्यो सब ब्रज कौ सिंगार।
कीरति–कूँखि औतरी कन्या सुंदरता कौ सार।।
नख सिख रूप कहाँ लौं बरनौं कोटि मदन बलिहार।
'परमानँद' प्रभु के हित कारन लखि राधा औतार।

५० (कान्हरौ)

आठें भादौं की उजियारी।
प्रगट भई श्रीकुवँरि राधिका सकल–सिरोमनि प्यारी।।
गुन औ रूप कहाँ लौं बरनौं अँग–अँग रंग सुढारी।
सुंदर गिरिवर–धर सम जोरी बिधिना हाथ सँवारी।।
देखि–देखि फूलति ब्रज–भामिनि न्योंछावरि करि बारी।
'परमानँद' स्वामिनि ब्रज प्रगटी श्रीवृषभानु–दुलारी।।

---

१. वधाई, २. नंदिनी, ३. सकल सिंगारि, ४. सुंदरि (ग)

५१ (सारंग)

नगर में बाजति कहाँ बधाई।
श्रीवृषभान गोप कै कन्या अद्‌भुत सुंदरताई।।
जै जैकार भयो बसुधा में इंद्र निसान बजाए।
ब्रज जुवती मिलि मंगल गावें आँगन चौक पुराए।।
घर–घर सबहिन तोरन बाँधे कंचन कलस सुहाई।
बड़ौ भाग वृषभान गोप कौ नंद–सुवन सुखदाई।।
घर–घर तैं आईं व्रजनारी आनँद मंगल गावें।
एक एक कुमकुम रोरिनि सौं मोतिनि चौक पुरावें।।
हरषत लोग नगर व्रज–वासी भेट विविध बिध लावैं।
'परमानंददास' कौ ठाकुर बानी सुनत गति पावैं।।

५२ (गूजरी)

प्रगटी वृषभानु–गृह लली।
घर–घर तैं सब गोप बधूएँ मंगल साजि चली।।
ता दिन तैं ब्रज मंडल फूल्यौ फूली कुंज–गली।
फूल्यौ आँगन नंदराइ कौ मानौं कमल कली।।
बरसाने में रंग बढ्यो अति छिरकत घोष–गली।
'परमानंद' नंद–नंदन की जोरी सुघर मिली।।

५३ (गूजरी)

आजु फिरति दुहाई नंद की।
श्रीदामा यों कहत सखनि सौं बात परम आनंद की।।
कुवँरि भई वृषभान नृपति घर जीवनि गोकुलचंद की।
नागरि चिरजीयौ ये जोरी राधा–परमानंद' की।।

५४ (सारंग)

रसिकिनी राधा पलना झूलै।
देखि देखि गोपीजन फूलै।।
रतनजटित कौ पलना सोहै।
निरखि निरखि जननी मन मोहै।।
सोभा की सागर सुकुमारी।
उमा रमा रति कहा बिचारी।।

डोरी एँचति भौंह मरोरै।
बार बार कीरति तृन तोरै।।
तिहि छिन की सोभा कछु न्यारी।
अखिल भुवन–पति हाथ सँवारी।।
मुख पर अंबर बारति मइया।
आनँद भयौ 'परमानँद' भइया।।

५५ (रामकली)

पलना झूलति लली वृषभान की।
चंदन कौ पलना बर मनिमै हलरावति सखि गान की।।
सोहें बितान नवल पलना पर चित्र विचित्र सुबान की।
मुक्ता मनि झालर चहुँ ओरें पच रँग डोरी तान की।।
हँसति लसति मुख अति सुंदर पर वारौं कोटिक काम की।
'परमानंद दास' मन भावति करि विधिना या जाम की।।

2. छठी

५६ (सारंग)

आजु छठी जसुमति के सुत की चलहु बँधावन[1] माई।
भूषन बसन साजि मंगल लै सकल सिंगार बनाई।।
भली बात बिधि करी बैस बड सुत पायौ नँदराई।
पुन्य पुंज फूले ब्रजवासी घर घर होत बधाई।।
पूरन काम भए जिन जन के जीवहिंगे जसु गाई।
'परमानंद' बात भई मन की मुद मरजाद न पाई[2]।।

५७ (सारंग)

मंगल द्यौस छठी कौ आयौ।
आनंदे ब्रजराज जसोदा मानहुँ अधन धन पायौ।।
कुँवर न्हवाइ जसोदा[3] रानी कुल देव्या के पाँइ परायौ।
बहु[4] प्रकार व्यंजन धरि आगें सब विधि भलो मनायौ।।
सब ब्रजनारि बँधावन आईं सुत[5] कौं तिलक बनायौ[6]।
जै–जैकार होत गोकुल में 'परमानँद' जसु गायौ।।

---

१. सबै जुरि जाई (आ.), २. माई (ग), ३. जसोमति (क),
४. बलि प्रकार विधि के करि करि आगें धरि भलो० (क. ङ),
५. हरषित मंगल गायो (आ.), ६. करायो

५८ (धनाश्री)

मंगल आजु महा मंगल घर नंद महर कैं छठी छाजै।
तूरा ताल झाँझ झल्लरि वर मधुर मंदिलरा बाजै।।
मंडल रचनि रचनि पुष्पनि के कमल कली कुँजनि भ्राजै।
दीपाबलि घृत–पूरि पात्र भरि कोटिक चंद–छिपा छाजै।।
गावत गीत गोपीजन सुंदर[१] होत कुतूहल सिसु जाजै।
नील पीत पट बसन अधिक वर जसुमति देति सबै साजै।।
यह छबि उपमा को कवि बरनै रसना इक सकुचति लाजै।
प्रगटे 'परमानँद' सुख सागर जगत हेत संतन–काजै।।

५९ (बिहागरौ)

मंगल आजु महोच्छव है ब्रज द्यौस छठी कौ है अति नीकौ।
गावति मनभावति ब्रज–सुंदरि अति ही आनँद सबै जीकौ।।
दीपक पंगति भवननि–राजति
कुमकुम[२] फल कदली अवली कौ।
बाजत तूर पखाबज झालरि[३]
बोलत सत–बानी सुकवी कौ।।
पूजति छठी पुजावत द्विजवर
जागत निसि न मिलत पल की कौ।
रतन–चौक राजत चौकी पर
मंगल दीप निकट वर घी कौ।।
कनक रचित लेखिनि मसिदानी
धरी जहँ चित्र रह्यो अंबी कौ।
नर नारिनि वर[४] बीरा दीने
चंदन बंदन केसर टीकौ।।
अति आनंद होत सब ब्रज में ग्वालनि गोपी भयौ[५] मन हीकौ।
'परमानँद' अति पुलक होत तन अंगनि अंग सबै परतीकौ।।

---

१. *सुस्वर (बं. ६।४)*
२. *कुसुम माल कदली (बं.६।४) आवज झालरि बोलत. बानी सुक पी कौ (बं. १।२)*
३. *सुर विमल पल. (बं. १।२)*
४. *माला बीरा दिए (वं.६।४),*
५. *टर्‌यो मन विरहीकौ (बं. ६।४)*

६० (धनाश्री)

आजु महरघर छठी जागति निसा गावतिं गुन ब्रज की नारी
बाजत मंदिलरा होत कुतूहल जन सब भए हृदै सुखकारी
रोपत कदली माल कुसुम वर सुजन मंडप भारी।
बंदनवार बँधी चहुँ ओरैं दीपनि रचि हाटक थारी।।
रच्यौ विचित्र चंडी कौ पूजन जसुमति रानी सुकुमारी।
करि उपचार पुजावति द्विजवर खंग कोसतें करि न्यारी।।
पत्र लेखिनी वर मसिदानी लेख लिखनिकी करि तैयारी।।
सिव-सनकादिक मुनि-ब्रह्मादिक खोजत दिवस निसै ज्यारी
माला तिलक बसन बीरा दै दाग मान करि मनुहारी।
'परमानंद' नंदलाला पै तन मन धन सरबसु बारी।।

६१ (बिहागरौ)

ब्रजपुर घर–घर अति आनंद।
प्रगट्यो है जसुमति के ढोटा दूर गए दुख–दंद।।
सोंज छठी (की) लाईं ब्रज–बनिता गावति गीत सुछंद।
नंदराइ तब छठी पूजिकें दिए दान सुख–कंद।।
भीतर जाइ महरि पें देखें सुन्दर मुख अरविंद।
करत आरती अवलोकत तब 'परमानँद' मन फंद।।

3. बाल–लीला

नामकरण–

६२ सारंग

आजु महा मंगल महरानें।
पंच सबद सुनि बजति बधाई घर घर भेरि बखानें।।
ग्वालि लिएँ काँवरि गो–रस की बधू सिंगार जु ठानें।
बाजत तूर तरुनि मिलि नाचतिं दधि के माट दुरानें।।
नाम करन जब कियो गरग मुनि नंदादिक बहु दानें।
पाबन जस गावत 'परमानँद जाहिं परेसुर जानें।।

६३ (धनाश्री)

गोकुल में आजु कुलाहल माई।
ना जानौं ये अष्ट महासिधि कहौ कहाँ तै आई।।

बोले नाम–करन[1] के कारन गरग विमल जसु गायो।।
'परमानँद' संतन–हित–कारन श्रीपति गोकुल आयो।।

६४ (विलावल)

नंदद–घर आए गरग मुनि[2] ग्यानी।
राम–कृष्ण कौ नाम–करन हित जदु–कुल के सनमानी।।
गजमोतिनि के चौक पुराए नामकरन–विधि ठानी।
मंगल गीत गबावति जसुदा बोलति अमृत बानी।।
प्रथमै सुनहु बडे ढोटा के नाम राम बलदेव।
हलधर और नाम संकरषन कोऊ न जानत भेव।।
अब[3] कहौं नाम तुम्हारे सुत के सुनौ चित्त दै नंद।
कृष्ण नाम नाराइन केसौ औ हरि परमानंद।।
पद्मनाभ माधौ मधुसूदन वासुदेव भगवान।
और अनंत नाम हैं इनके कहौं कहाँ लौं आन।।
नंद–सुवन त्रिभुवन के ठाकुर तिनके नाम धराए।
'परमानँद' प्रभु अखिल लोकपति गोप–भेष धरि आए।।

अन्न–प्राशन–

६५ (सारंग)

इह मेरे लाल कौ अन्नप्रासनु।
भोजन दछिना बहुत द्विजनि कौं दैहों मनि-मै आसनु।।
पाइस भरि कर पल्लव लेहु सब गुरु–जन अनुसासनु।
'परमानँद' अभिलाष जसोदा बेगि बढै षटमासनु।।

६६ (सारंग)

अन्नप्रासन–दिन नंदलाल कौ करति जसोदा माई।
ब्राह्मन देव पूजि कुल–देवी बहुतै दच्छिना पाई।।
कुटुँब जिंबाइ पटंबर दीन्हे भवन आपुने आए।
मागध भाट सूत सनमाने सबहिंनि हरष बढाए।।

---

१. *नाम धरन के काजें (१२८।६)*
२. *गरग विधि जानी*
३. *अब ए नाम तिहारे सुत के*

जो जिहिं जाँच्यो[1] सो तिहिं पायौ नंदराय बड[2] दानी।
भक्त हेत प्रगटे जग–जीवन 'परमानँद' गुनगानी।।

६७ (सारंग)

सुदिन सँवारौ सोधि कें लाल जू भोजन कीजै।
कुलदेवता मनाइ हरष सौं इहै मानि मन लीजै।।
ब्राह्मण–भोजन बहुत दच्छिना अति आदर सौं दीजै।
आसीरबाद देत सब ही मिलि मन इच्छित[3] फल लीजै।।
बाढौ बेलि अति लाल लडैंते लोचन–पुट अमृत–रस पीजै।
'परमानंद' कहति नँदरानी देखि देखि मुख जीजै।।

६८ (सारंग)

जसुमति रानी खीर खबाबत प्रथम सुभग दिन मानी।
अति आनंद बढ्यौ श्रीगोकुल विप्रनि दिए बहु दानी।।
लाल जू कौं गोद लै बैठे नंदराइ बडभागी।
खीर खाँड घृत मुखै चटावत देखि जननि अनुरागी।।
मुखै पोंछि जसुदा कर लेखे गुरुजन के पद[4] लागी।
'परमानंद' लाल चिरजीवौ सविता सों वर माँगी।।

६९ (सारंग)

प्रथमै खीर खवाई गोकुल–चंदा।
प्रात जसोमति गीत गबाए भए सबै आनंदा।।
हरषित सबै मनोरथ पुजए जो जनमे नँद–नंदा।
जुवती–जन पहिरें पट–भूषन गावति छंदन–छंदा।।
नंद जू की रानी अति हरषानी गारि सुनी अति मंदा।
'परमानँद' तहँ द्वारें देखत जनम–जनम कौ बंदा।।

कर्णवेध–

७० (धनाश्री)

मईया ! मोहि कर दै री पूआ।
झूठी बानि कहा बौरावति कहतिऽब सूआ सूआ।।
कान छिदाबन कही सुदिन कब है है री मईया।
पूत बुलाइ गरग कों बूझौं तिथि अरु बार जु देइ दिखइया।।

---

१. चाह्यो। २. बहु। ३. वांछित। ४. पग।

दियो चखोडा गोरोचन सारौ विप्र–चरन लै धरइया।
'परमानँद' आनँद ब्रजवासी देति न्योंछावरि करत बधइया[1]

७१ (सारंग)

गोपालै[2] बेध–करन कौ कीजै।
गुरु बल तिथि बल नछत्र[3] बार बल सुभघरी बिचारि लीजै
गनक निपुन द्वै चार बैठिकें मतौ विचार्यौ नीकौ।
मुहूरत जामें दोस रहित होइ सुखसागर ह्वै जी कौ।।
दियो मुहूरत सब सुखदाता चीत्यो मनोरथ पाए।
नारि श्रीमंतिनि[4] गीत गवाए दिए भूषन मन भाए।।
जसुमति मात गोद लै बैठी लाल देखि मन हरषे।
सुचि माता के गोद बैठि कें मूँदि स्रवन मन करषे।।
कनक सूची लै स्रवननि दीनी बेधत बार न लागी।
बाल[5] रुदन जब करनहिं लाग्यो रोहिनी मात लै भागी।।
चुचकारति चुंबति चापति हिय लेउँ बलैया तेरी।
देत दान नँदराय बिप्रनि कौं कहें 'परमानंद' टेरी।।

७२ (सारंग)

सूची पढि दीन[6] द्विज देवा।
जातें पीर न होइ करन कों हम करि हैं तब सेवा।।
कहति जसोदा द्विजवर देवा ! तब मन भायौ करिहैं।
गोकुल के प्रतिपालन लाइक गोपनंद कैं रहिहैं।।
ऐसौ सुख अपने दृग देखौं सकल संपदा बाढ़ी।
यातैं कहा अधिक चहियतु[7] है अष्ट महासिधि ठाढी।।
चिरजीवौ यह नंद लाल तेरौ द्विजवर बोले बानी।
नंदराइ–जस जुग–जुग बाढौ 'परमानंद' बखानी।।

---

१. *वडैया (क),*
२. *गोपाल कों (अ),*
३. *नखत*
४. *सीमंतिनि*
५. *अतिसै रुदन करन जब लागे तब रोहिनि०*
६. *दई द्विजवर देवा*
७. *कहियतु है*

शयनोत्थित–

७३ (विभास)

• प्रातसमै भयो राजीवलोचन। संग सखा ठाढे गोमोचन
बिकसित कमल रटत अलिस्रेनी। उठहु गोपाल गुहौं तेरीबेनी–
खीर खाँड घृत भोजन कीजै। सद्य दूध धौरीकौ पीजै।
'परमानँद' प्रभुसब सुखदानी उठहु गोपाल कहति नँदरानी।।

७४ (विभास)

भयो पाछिलौ पहर।
रामकृष्ण कहि टेरन लागे बाबा नंद महर।।
ब्रह्म मुहूरत भयो साँवरे सु रँभन लागीं धेनु।
उठु बलभद्र बछरुआ ढीलहु गोपनु[1] पूरे बेनु।।
गोप बधू दधि मंथन लागीं विप्र पढ़न लागे बेद।
'परमानँद' स्वामी मनमोहन गोकुल के दुख–छेद।।

७५ (विलावल)

•• प्रात समै भयो साँवलिया हो जागौ।
नंद जसोदा के मन आनँद गाँइ दुहन कौं भाजन माँगौ।।
रवि के उदै कमल प्रकासे भ्रमर उडि चले तमचुर बासे।
गोप–बधू दधि मंथन लागी हरिजू की लीला[2] गावन लागी।
बिकसित कमल रटत[3] अलिस्रेनी उठहु गोपाल गुहौं तेरी बेनी।।
'परमानंददास' मन भायो[4] चरनकमल–रज देखन आयो[5]।।

७६ (विभास)

माई ! हौं आनँद गुन गाऊँ।
गोकुल की चिंतामनि माधौ जो माँगौं सो पाऊँ।।
जब तैं कमलनयन ब्रज आए सकल संपदा बाढी।
नंदराइ के द्वारें देखौ अष्ट महा सिद्धि ठाढी।।

• *भयो कृष्ण राजीव० (ड. ग. घ. ड़ च) । और भयो राजीव० (ज. च) से भी प्रारंभ हैं।*

१. ग्वालन (छ)

•• *प्रात भयो लालन तुम जागौ (बंध ३।१) से भी प्रारम्भ है.*

२. लीला के रस पागी. ३. चलत. (ग. ज.) ४. भावै (इ. घ.) ५. आवै (इ. घ.)

फूले फले सदा वृन्दावन कामधेनु दुहि लीजै।
माँगे मेघ इंद्र बरसावै कृष्ण–कृपा सुख[1] जीजै।।
कहति जसोदा सखियनु आगै हरि उतकरष जनावै।
परमानंददास' कौ ठाकुर मुरली मनोहर भावै।।

७७ (भैरव)

जागौ मेरे ! लाल जगत–उजियारे।
कोटि मदन बारौ मुसकनि पर कमलनयन मेरे नैननि तारे।।
सँग[2] लेहु ग्वालबाल अरु बछरा जमुना के तीर जाहु मेरे प्यारे
'परमानंद' कहति[3] नँदरानी दूर जिनिजाहु मेरे ब्रजरखवारे

७८ (विभास)

ललित लाल श्रीगोपाल ! सोइए न प्रातकाल
जसुदा मईया लेति बलैया भोर भयौ प्यारे।
उठौ देव करौं सेव दरस[4] दीजै वासुदेव !
नंदराइ दुहत गाँइ पीजिए पय बारे।।
रवि की किरन प्रगट भई उठौ लाल निसा गई
जहाँ[5] तहाँ दधिमथन करति गात गुन तिहारे।
नंदकुमार उठे विहँसि कृपा–दृष्टि सब पै बरसि
जुगल चरन–कमलनि पर 'परमानँद' बारे।।

कलेऊ–

७६ (भैरों)

करहु कलेऊ राम–कृष्ण मिलि कहति जसोदा मैया।
पाछैं बच्छ ग्वाल सब सँग लै चलौ चरावन गैया।।
औट्यो दूध सद्य धौरी कौ रुचि करि भोजन कीजै।
जग–जीवन ब्रजराज लाडिले जननी कौ सुख दीजै।।
सीस मुकुट कटि काछनी पीत बसन उर धारौ।
कर मुरली लकुटी लै मोहन मनमथ दरप निवारौ।।

---

१. कृपा तैं जीजै (इ. ध.) कृपा करि. (च)
२. करिकै कलेउ लाल संग लेहु बच्छ ग्वाल, जमुना के तीर बन जइये सवारे। (ग)
३. दास की जीवनि दूर० (ग) ४. जागिए देवाधिदेव
५ जहाँ तहाँ दुहत धेनु गावत गुन० (ब) १।१)

मृगमद तिलक स्रवनकुंडल मनि–कौस्तुभ कंठ बनावौ।
'परमानंददास' कौ ठाकुर ब्रजजन मोद बढ़ावौ।।

८० (रामकली)

री ग्वालिनि ! पिछवारे ह्वै बोल सुनायौ।
कमलनयन जब करत कलेऊ कौर न मुख लौं आयौ।।
अरी मईया इक बन ब्याई गईया बछरा उहाँई बिसरायौ।
अब ही घेरि खरिक में लाऊँ ता कारन उठि धायौ।।
मुरली न लीनी लकुटिया न लीनी अरबराइ कोऊ सखा न बुलायौ।
गुप्त प्रीति मोहन–मोहिनि की जस 'परमानँद' गायौ।।

८१ (सारंग)

•गोपाल माई ! माँगत हैं दधि–रोटी।
लौन्यों[1] सहित देहु तुम मोकों सुपक्व[2] सुमंगल मोटी।।
आरि[3] न करौ जाउँ बलिहारी अंगन काहे कों लोटी।
जोई मांगौ सोई देहुँ दामोदर[4] छाँडहु इहि मति खोटी।।
करि मनुहारि कलेऊ दीनों हाथ[5] चुपरि मुख चोटी।
'परमानँद' प्रभु चलेऽब चरावन हाथ लकुटिया छोटी ••।।

मंगल आरती–

८२ (भैरव)

मंगल आरती करि मन मोर मंगल राधा जुगलकिसोर।
मंगल जमुनतट मंगल बंसीवट मंगल धीर समीरे तोर।।
मंगल ब्रज मंगल वृन्दावन मंगल गिरि गोवर्धन गोर।
मंगल महाबन मंगल मधुवन मंगल रावरि खगके रोर।।
मंगल नंदगाँव बरसानौ मंगल सरस साँकरी खोर।
मंगल नंद जसोदा मंगल 'परमानँद' गावत उठि भोर।।

• *गोविंदमाँगत हैं० (इ. ग. घ. ङ च.) गोविंद माई० से भी प्रारंभ हैं।*

१. माखन सहित देहु मो जननी सुभ्र सुकोमल मोटी। २. सुभग (ख)

३. जो कछु माँगौ सो देउं मेरे ललना काहें कों अँगना लोटी।
कर गहि उछंग लेति महतारी हाथ फिरावति चोटी।।

४. मनमोहन बं. ३।१।३१३, ५. माखन चुपरी रोटी (वं. ३।१।३१३)

•• *सूरसागर पं. स. ७८१ में भी 'गोपाल दधि माँगत अरु रोटी' तुक से पाठ भेद के साथ प्रारंभ।*

८३ (भैरव)

मंगल आरती करि मन मोर। ब्रह्म निसा बीती भयो भोर।
मंगल बाजत झालर ताल मंगलरूप उठौ नंदलाल।।
मंगल बाजत बीन मृदंग–मंगल बाँसुरि सरस उपंग
मंगल धूप–दीप कर जोरि। मंगल गावति–नवलकिसोरि।
मंगल उदयौ मंगल रास। मंगल मन 'परमानँददास'।।

प्रातः मुख दर्शन–

८४ (भैरव)

आछौ नीकौ लौनौ मुख भोर ही दिखाइये।
निसि के उनीदे नैना बैना तुतरात मीठे
भाँवते हो जी के मेरे सुखहिं बढाइये।
सकल सुख–करन त्रिविध ताप हरन
उर कौ तिमिर बाढ्यो तुरत नसाइये।
द्वार ठाढे ग्वालबाल करऊ कलेऊ लाल।
मिसि रोटी मोटी छोटी माखन सौं खाइये।।
तनक सौ मेरौ कन्हाई[1] वार फेरि डारि माई[2]
बैनी तौ गुहों बनाई गहरु न लाइये।
'परमानंद' जन जननी मुदित मन।
फूली फूली फूली[3] अंग अंग न समाइये।।

८५ (भैरव)

•उठु गोपाल ! प्रातकाल देखौं मुख तेरौ।
पाछें गृह काज करौं नित्य–नेंम मेरौ।।
विगत निसा अरुन दिसा उदित भयौ भान।
गुंजति अलि पंकज बन जागहु भगवान।।
बंदीजन द्वार ठाडे करत हैं कैवार।
सरस[4] बैन गाबत हैं[5] लीला अवतार।।

---

१. *कन्हैया (ग० छ०), २. मैया (ग० छ०), ३. डोलै (ग० ज०)*
• *जागहु गोपाल लाल मुख देखौं तेरो (इ. ग. घ. ङ च. छ.) से भी प्रारम्भ है,*
४. *सरस बंस प्रसंस गावत सब लीला (इ. ग. घ. ङ. च.),*
५. *हरिलीला (ग. ङ. च. छ.),*

'परमानँद' स्वामी गोपाल[1] जगत[2] मंगल रूप।
वेद पुरान कथत[3] ज्ञान महिमा अनूप।।

८६ (रामग्री)

लाल कौ मुख देखन हौं आई।
कालि मुख देखि गई दधि बेचन जातहिं गयो बिकाई।।
नितै दूनौ दाम भयो घर गाइनि[4] बछिया जाई।
आई हौं धाइ थँमाइ साथ की मोहन देहु जगाई।।
सुनि तिय बचन विहँसि उठि बैठे नागरि निकट बुलाई।।
'परमानंद' सयानी ग्वालिनि चली सँकेत बताई।।

८७ (विभास)

हौं परभात समै उठि आई कमलनैन[5] देखन कौं तिहारौ मुख।
गोरस बेचन जात मधुपुरी लाभ होइ मारग पाऊँ सुख।।
करत कलेऊ स्याम मनोहर नेंकु चितै हम तन कीजै रुख।
तुम सपने मोहि मिलिकें बिछुरे कहा कहौं रजनी–जनित दुख
प्रीतजु एक नंदनंदन[6] सौं इहि बिधि कहि सब बात जनाई।।
'परमानंददास' वह नागरि नागर सौं मनसा अरुझाई।।

८८ (बिलावल)

प्रात समै उठि चलहु नंद–गृह राम–कृष्ण मुख देखिये।
आनँद में दिन जाइ सखी री ! जनमु सुफल करि लेखिये
प्रथम काल हरि आनँदकारी पाछें भवन कारज कीजिये।
राम–कृष्ण पुनि बनहिं जाइँगे चरनकमल रज लीजिये।।
कोइक गोपिका ब्रज में सयानी स्याम महात्तम सोई जानै।
'परमानँद' प्रभु जद्दपि बालक नारायन करि सोई मानै।।

बाल–लीला

८९ (कान्हरौ)

• जसुमति तुम्हारौ घर सुबसु बसौ।
सुनिरी ! जसोदा ! या ढोटा कौ न्हात हूँ जिनि बार खसौ

---

१. दयाल (इ. घ. ङ च. छ.) २. परम (अ.)
३. पढत (घ. ड. च . छ.), गावत हैं लीला अनूप (अ. क.), ४. काजर (अ)
५. नंदनंदन (बं. १५।२।१६) ६. लाल गिरधर सों,
• रानी जू तिहारो (ग) से भी प्रारम्भ है

देहिं असीस सकल गोपीजन कोउऽब गावौ कोउ हँसौ।
देखि–देखि मुख कमलनयन कौ आनँद प्रेम हियौ हुलसौ।।
कोऊ करत बेद मंगल धुनि कोऊ अति आनंद लसौ।
'परमानंद' नंद–घर आनँद पुत्र–जनमु भयौ जगत जसौ।।

६० (कान्हरौ)

हरि कौ विमल जस गावति गोपंगना।
मनिमै आंगन नंदराइ कें
बाल गोपाल तहाँ करै रिंगना।।
गिरि गिरि उठत[1] घुटुरुअनि टेकत
जानु पानि मेरौ छगन–मगना।
धूसर धूरि उठाइ गोद लै
मात जसौदा के प्रेम कौ भजना।।
त्रिपद पुहुपि मापि तब[2] न आलस भयौ
अब जु कठिन भयौ देहरी कौ लंघना।
'परमानँद' प्रभु भगत–बछल हरि
रुचिर हार बर कंठ सोहै बघना•।।

६१ (बिलावल)

मनिमै आँगन नंद के खेलत दोउ भैया।
गौर स्याम जोरी बनी बल कुँबर कन्हैया।।
नूपुर[3] कंकन किंकिनी रुन[4] झुन झुन बाजै।
मोहि रही ब्रज सुंदरी मनसा सुत लाजै।।
संगै संगै जसोमति रोहिनी हित जन्हैया।
चुटुकी दै दै नचावही सुत जानि नन्हैया।।
नील पीत पट ओढनी देखत मोहि भावै।
बाल लीला[5] विनोद[6] सों 'परमानंद' गावै••।।

---

१. परत (घ. ज.), २. मापी (ई. च. च.) नापी (ज.) मापति न.

• भावसाम्य सूरसागर पद सं. ७३१ में पदपरिवर्तन के साथ छपा है।

३. गौर स्याम..... और 'नूपुर कंकन'.....इन तुकों के मध्य में–
लटकन लटक लटूरिया मसि बिंदु गोरोचन।
हरिमुख अलबल बोलिनी, भगतनि अध मोचन।। ('क' पत्र १२३ में अधिक पाठ)

४. रुन झुन अति, ५. लीला बाल विनोद, ६ विनोद सुख (ई. घ.)

•• भाव साम्य रूसकर पद सं. 'मनिमय आँगन वंद' के ये पाठभेद के साथ

६२ (बिलावल)

लाल कौ सिंगार बनावत[१] मैया।
करि उबटनौ न्हवावत[२] सुत कौ हरि–हलधर दोउ भैया।।
हँसुली हेम हमेल अरु दुलरी बनमाला उर पहरैया।
'परमानंददास' की जीवनि हँसि–हँसि बाबा लेत बलैया।।

६२ (अ) (आसावरी)

बोलन लागे[३] मईया मईया।
बाबा[४] कहत नंदराइ[५] सों अरु हलधर सों भईया।।
खेलत[६] फिरत सकल गोकुल में घर घर होत बधइया।
'परमानंददास'[७] कौ ठाकुर ब्रजजन केलि करइया•।।

६३ (बिलावल)

भावैं हरि के बाल–विनोद।
केसौ राम निरखि मुख प्रहसित मुदित रोहिनी जननी[८] जसोद।।
आँगन[९] पंक–राग तन सोभित चल नूपुर–धुनि सुनि मन–मोद।
परम सनेह बढावत मातनि रबकि–रबकि बैठत चढि गोद।।
अतिसै चपल सकल-सुख-दाइक निसि दिनि रहत केलि-रस ओद।
'परमानँद' प्रभु अंबुज लोचन फिरि–फिरि चितबत ब्रज[१०] जन कोद••।।

६४ (बिलावल)

बाल–दसा गोविंद[११] की सब काहू भावै।
जाके भवन मँहिं जात है लै गोद खिलावै।।
स्याम सुंदर मुख निरखिकें अबिरल[१२] सचु पावै।
लाल बाल[१३] कहि गोपिका हँसि कंठ[१४] लगावै।।

---

१. करावत, २. न्हवाये रुचि सों,
३. ..... लागे गिरिधर मैया मैया (च) लागे मोहन मईया, ४. बाबा बाबा नंदराइ सों
५. नंदमहर सों (ई. घ.), ६. सब गोकुल में आनँद उपज्यो घर घर होत बधैया।
७. नंदनंदनकी या छबि ऊपर 'परमानँद' बलि जैया।
• कहन लागे मोहन मैया मैया' तुक से 'सूरसागर पद. सं. ७७३ में भी।
८. मात, ९. अंजन नैन राग सोहत, १०. निज, ११. गोपाल (ई. घ. च)
•• भाव साम्य–सूरसागर प. सं. ७३७ तथा सूरसागर की छाप से 'भावत हरि कौ बाल विनोद' ए सर. बं. १२८। ६ में भी
१२. अवला, १३. लाल लाल कहि ग्वालिनी, १४. भलौ मनावै।

चुटकी दै दै प्रेम–मुदित कर ताल बजावै।
'परमानंद' प्रभु नाचही बस[1] ताइ जनावै[2]।।

६५ (बिलावल)

नंद जू के लालन की छबि आछी।
चरन[3] पेंजनियाँ घुम घुम बाजै चलत पूँछ गहि बाछी।।
अरुन अधर दधि मुख सौं[4] लपट्यो अति राजत तन छीटें छाछी।
'परमानँद' प्रभु बालक–लीला हँसि[5] हँसिकें फिरी पाछी।।

६६ (बिलावल)

हरि–लीला गावति गोपीजन आनँदहि निसिदिन जाई।
बाल–चरित्र विचित्र मनोहर कमल–नयन ब्रज[6] सुखदाई।।
दोहन मंथन[7] खंडन लेपनगृह मज्जनसुत पति सेवा।
चारि जाम अवकास नहीं छिनु[8] सुमिरन कृष्ण कृष्ण[9] देवा
भवन भवन प्रति दीप विराजित कर कंकन नूपुर बाजै।
'परमानंद' घोष कौतूहल देखि भाँति[10] सुर–पति लाजै।।

६७ (बिलावल)

बाल–बिनोद गोपाल के देखत मोहि भावै।
प्रेम पुलकि आनंद भारी जसोमति गुन गावै।।
बल–समेत घन साँवरौ आँगन धावै।
बदन चूँबि कौरा[11] लियें सुत जानि खिलावै।।
सिब बिरंचि मुनि देवता जाकौ अंत न[12] पावै।
सो 'परमानँद' ग्वालि कौ हँसि भलौ मनावै।।

६८ (बिलावल)

सो गोविंद तुम्हारे ब्रज बालक।
प्रगट भए घनस्याम चतुर्भुज धरै दनुज–कुल–कालक।।
कमलापति त्रिभुवनपति नाइक भुवन चतुर्दस नाइक सोई।
उत्पति प्रलय पालकौ कर्त्ता जाके कियें सबै कछु होई।।

---

१. सिसुनाइ जनावै, २. नचावै (ग), ३. पाँइ पेंजनी रुन झुन बाजत
४. दधि मुख लपटानों नौतन राजत छीटें छाछी, ५. हँसि चितवति फिरि पाछी
६. ब्रजजन सुख, ७. मंडन (ग) मंथन खंडन गृह लेपन मंडन सुत
८. पल, ९. देव–देवा, १०. विभव (ग) भाँति सुरपति जिय लाजै
११. बदन चूंमि गोदी लए, १२. पार. (च)

सुनहु नंद उपनंद कथा इह ईस[1] क्षीर समुद्र कौ बासी।
बसुधाभार–उतारन आयौ[2] परब्रह्म[3] बैकुंठ–निवासी।।
ब्रह्मा महादेव इंद्रादिक बिनती कै इहाँ लै आए।
'परमानंददास' कौ ठाकुर बहुत पुन्य तप कै तुम पाए।।

९९ (पंचम)

हरि जू की बालक–लीला भावति[4]।
माखन दूध दही की चोरी सोई जसोदा गावति।।
सकट–विभंग[5] पूतना–सोषन तृनावर्त बध कीनों।
ऊखल–बंधन जमल–उधारन भगतनि कौं सुख दीनों।
बच्छ-चरावनि मुरली-बजावनि जमुना-कच्छ बिहारी।
'परमानंददास' की जीवनि वृंदावन संचारी।।

१०० (गुर्जरी)

जनम फल मानति जसोदा[6] माई।
जब नँदलाल धूरि–धूसर बपु गरें[7] रहत लपटाई।।
गोद बैठि[8] गहि चिबुक मनोहर बात कहत तुतराई।
अति आनंद प्रेम पुलकित तन मुख चुंबति न अघाई।।
आरत चित्त बिलोकि बदन छबि[9] फुनि–फुनि लेति बलाई
'परमानंद' मोद छिनु–छिनु कौ क्योंहू[10] कह्यौ न जाई।।

१०१ (धनाश्री)

हँसत गोपाल नंद के आगें नंद स्वरूप न जानें[11]।
निर्गुन ब्रह्म सगुन[12] जे लीला ताहिऽब सुत करि मानें।।
एक समै पूजा के औसर नंद समाधि लगाई।
सालिग्राम मेलि मुख महियाँ बैठि रहे अरगाई।।
जब नँद ध्यान बिसर्जन कीनौ मूरति आगें नाहीं।
कहौ[13] मेरे कान्ह ! देवता कहा भए यहै विस्मय चित माँहीं।।
मुख तें काढि लिए जग–जीवन[14] दिये नंद जू के हाथ।
'परमानँद' स्वामी मनमोहन खेल रच्यौ ब्रजनाथ।।

---

१. आयो., २. कारन प्रगट ब्रह्म..... ।, ३. पूरन (ई), ४. भावै। गावै।,
५. बिभंजन, ६. जसुमति, ७. रहत कंठ लपटाई।, ८. बैठारि।, ९. बिधु।,
१०. मोपै कह्यो क्यों हू न बरनौ जाई।, ११. जान्यो,
१२. सगुन लीला धरि सोई सुत करि मान्यो।
१३. कह्यो गोपाल देवता का भयो ये विस्मय मन।
१४. नँदनंदन (ग) तबै जदुनदंन दियो नंद।

१०२ (धनाश्री)

पाँडे भोग लगाइ न पावै।
करि करि पाक जबहिं अरपत है तबहि छुई छुइ आवै।।
मैं आदर करि ब्राह्मन न्योंत्यौ तू गोपाल ! खिझावै।
वे अपुने ठाकुरै जिवावत तू बैसोई होई आवै।।
तू इहि बात न जानै री मईया कत मोहि दोस लगावै।
'परमानँद' इह नैन मूँदिकें मोहीकौं जु बुलावै।।

१०३ (आसावरी)

पुरोहित आयो नृप[1] के द्वारे।
जसुमति अति आनँद मुदित मन आसन पै बैठारे।।
पिता–सदन कुल प्रोहित मानति दोउ कर चरन पखारे।
तेल लगाइ दंतधावन करि न्हाइ बसन तन धारे।।
कर्‌यौ पाक प्रोहित अपनी रुचि विंजन विविध नियारे।
करि सामग्री भोग समरप्यो बात करत हरि वारे।।
नैन खोलि प्रोहित जब देख्यो जेमत स्याम भोग छ्वै डारे।
पुनि पकवान बनाइ स्वच्छ करि भोग धर्‌यो लै सरस सँभारे
तीन बार याही विधि कीन्हों प्रोहित मनहिं विचारे।
यह अवतार प्रगट पुरुषोत्तम भक्तनि हित वपु धारे।।
बहु अपराध किए प्रभु मेरे छमहु नाथ ! जु हमारे।
पुनि पुनि जूँठन कौ पय पीवत 'परमानंद' समूह जहाँरे।।

१०४ (धनाश्री)

बाल बिनोद खरे जिय भावत।
मुख–प्रतिबिंब पकरिवे कौं हरि हुलसि घुटरुअन धावत।।
कमलनयन माखन माँगत[2] है ग्वालिनि[3] सैन बतावत।
सबद जोरि बोल्यो चाहत है[4] प्रगट बचन नहिं आवत।।
कोटि ब्रह्मांड खंड की सोभा[5] सिसुता माँहि दिखावत[6]।
'परमानँद' स्वामी जग–मंगल[7] जसुमति प्रीति बढावत•।।

---

१. घर (बं. ५।६), २. के कारन (ग), ३. करि करि सैन (अ), ४. है हरि (अ) मुख, ५. महिमा (अ), ६. दुरावत (अ), ७. मनमोहन

• भाव–साम्य सूरसागर प० सं० ७२० में बाल विनोद खरौ जिय भावत " तुक से पाठ भेद के साथ।

१०५ (सारंग)

आँगन खेलहु झनक मनक।
लरिका जूथ संग[1] लियें बालक तनक–तनक।।
अहो लाल ! पैया[2] लागौं पर–घर जैबौ छाँडहु खनक खनक।
'परमानंद' कहति नँदरानी अंग–अंग बनक[3] बनक।।

१०६ (सारंग)

एक समै जसुमति अपनी सखी सौं बात[4] कहति मुसिकाँइ।
मो देखत कब धौं मेरौ ललना भूमि धरहिंगे पाँइ।।
फिरि[5] मोसौं मईया कब कहिहैं कुँवर कछुक तुतराइ[6]।
अरिहैं कबहुँ दूध दधि कारन तन गोरज लपटाइ।।
खरिक दुहावन जात मोहि कब आनि मिलहिंगे धाइ।
वह धौं द्यौस होइगौ कबहूँ ललन दुहेंगे गाई।।
सौंपि[7] देहुँगी सुतहि चरावन गैयाँ घर बनराइ।
इहि अभिलाष करति जसुमति जिय 'परमानँद' बलि जाइ।।

१०७ (सारंग)

तुम जु मनावति सोइ दिन आयो।
अपनों[8] बोलु करहु किनि जसुमति कान्ह घुटुरुअनि धायो
अब पाइँनि चलिहैं ठाडे ह्वै महरिऽब जाइ बधायो।
ब्रज[9] में आनँद भयो सबनिकें दिन–दिन होत सवायो।।
इतनौ बोल[10] सुनत नँदरानी मोतिनि[11] चौक पुरायो।
बाजत तूर तरुनि मिलि गावति लाल पटा बैठायो।।
'परमानँद' रानी धन खरचति जिहि बिधि बेद बतायो।
या दिन कों तरसतिं मेरी सजनी दई अँगुरियाँ लायो।।

---

१. सकल गोकुल के बालक।
२. तो पैयां । ३. बानक।
४. बातें कहति बनाइ (ई. घ.)
५. पनि. ६. हँसि आइ।
७. सौंपे सुतहिं चरावनि गैयां सुनि सजनी नँदराइ।,
८ .साँचौ।
९. घर में मंगल होत सबनिकें (अ)
१०. बचन (अ), ११. लालन उबटि न्हवायो।

१०८ (सारंग)

• मेरें गोपाल लडाइतौ।
अपनौं काहू छुवनि न दैहौं काहे कों लोगु बडाइतौ।।
काहू के[1] धन गोरस बहुतेरौ लैन उधार न जाइबौ।
राखौंगी कंठ लाइ[2] स्याम कौं पलना घालि[3] झुलाइबौ।।
परम विचित्र पाँइ पेंजनियाँ अरु[4] घूँघरू बनाइबौ।
'परमानंद' नंद[5] के आगै लै लै नाम बुलाइबौ••।।

१०९ (सारंग)

सुनु सुत ! एक कथा कहौं प्यारी।
कमल[6] नयन–मन आनँद उपज्यो रसिकसिरोमनि देत हुँकारी
दसरथ नृपति[6] हुते रघुबंसी तिनके प्रगट भए सुत चारी।
तिनमें एक राम ब्रत–धारी जनकसुता ताकी वर नारी।।
तात–वचन मानि राज तज्यौ है भ्राता सहित चले बनचारी
धावत कनक–मृगा के पाछें राजीव–लोचन केलि–बिहारी।।
राबन हरन कियो सीता कौ सुनि नँद–नंदन नींद निवारी[7]।
'परमानँद' प्रभु चाप रटत कर लछमन देहु[8] जननि–भ्रम भारी

११० (गौरी)

बिमल जस वृंदावन के चंद कौ।
कहाँ प्रकास सोम सूरज कौ सो[9] मेरे गोविंद कौ।।
कहति जसोधा औरनि[10] आगें बैभव आनँदकंद कौ।
खेलत[11] फिरत गोप–बालक[12] सँग ठाकुर'परमानन्द 'को।।

• *मेरौ (अ. ङ च.) माई ! मेरौ.*
मेरे गुपाल लडैती अपनों याही तें लोग बडैंती. इस प्रकार से भी प्रारंभ है।

१. मेरे ई (ग) अपने २. लगाइ लाल कों पलना।
३. माँझि (ई. घ) मेलि (ग) ४. कटि (ग) चलन घुटुरुवन धाइबौ।
४. नंदरायजू के आँगन लै लै० (ग) नंद के आँगन।
•• सरस्वती भंडार काँकरोली बंध १७।३ में किंचित् पाठान्तरों के साथ
५. नंद–नंदन मन। ६. नृप जो हैं। ७. बिसारी। उघारी। ८. दै जननी।
भाव साम्य–सूरसागर प. ० ८१६ के साथ
६. जो (घ. ज.), १०. सखियनि (ग. च.)
११. ग्वाल मंडली संग लिएँ खेलत ठाकुर (११३. ६) खेलत फिरत सकल गोकुल में ठाकुर (१३०।१), १२. ग्वालनि (ङ)

१११ (धनाश्री)

बदन[१] निहारति है नँदरानी।
कोटिकाम कोटिक चंद्रमा कोटिक रबि बारति जिय जानी।।
सिव बिरंजि जाकौ पार न पावत सेस सहस गावत रसना री।।
गोद खिलावत महरि[२] जसोदा परमानंद' कियौ बलिहारी।।

११२ (गुर्जरी)

मैया भूषन अपने लैरी !
मोर के चंद काच के मनियाँ गुहि गुंजाफल दै री।।
दुरी–दुरा कौ खेल सखनि में खेलन हौं जु न पाउँ।
मुख ससि प्रवाह[३] बाँह तर राखौं या छबि कहाँ दुराउँ।।
आजु सदन वृषभान गोप कें खेलन हौं जु गयौ।
सगरे सखा अरग[४] से भागे हौं ही चोर भयौ।।
तब[५] महरि वृषभान गोप की गहि अँचरा मोहि रोक्यो।
चूँबि[६] बदन मिष्टान्न हाथ दै अंग अंग अवलोक्यौ।।
तब वृषभानु सभा तै आए नंदकुमार न होई।
'परमानंद' कुँवरि कौ दूलह कहत हुते वर सोई।।

११३ (गौरी)

तेरी लाल ! लागहु मोहि बलाइ।
बाल गोपाल छगनवाँ मेरे चलहु न आँगन[७] धाइ।।
लटं[८] लटकनु मटकनु कर पहुँची नूपुर बाजहीं पाइ।
चुटकी दै दै नचावति[९] हरि कों हँसति[१०] जसोदा माई।।

---

१. *बदन छबि (इ.)*
२. *मात (च)*
३. *प्रभा*
४. *अरगटे,*
५. *तब वृषभान गोप की धरनी अंचरा गहि०*
६. *मुख चुंबन नवनीत हाथ (च)*
लाल तेरी लागौ..... से भी प्रारंभ है।
७. *अगँना (घ. ङ) चलौ अंगना धाइ।*
८. *लालजू के लटकन०। लर लटकन। लटकत कर०*
९. *ग्वालि नचावति हँसति (ज)*
१०. *मुदित (इ. घ. बलि गई जसुधा)*

आनँद भरी नंद जू की नारी निरखि[1] अनूपम भाइ।
'परमानंद' लाल[2] गिरिधर कौं हरषि लिये उर लाइ।।

११४ (गौरी)

कमल–दल नैननि रीझी री ! माई।
मधुर हास लीला अवलोकनि हरि मनु[3] लियो है चुराई।।
सुंदर बदन नासिका सुंदर भौंह कामधनु टेढी।
मृगमद तिलक अलक घुँघरारे गुही है जसोदा मेढी।।
जानु पाँति रेंगत आँगन में राम–कृष्ण की जोरी।
'परमानंद नंदनंदन सों प्रीति न[4] बाढी थोरी।।

११५ (केदारौ)

तुम्हारे लाल ! रूप पर हौं बारी।
मृगमद–तिलक कंठ कठुलामनि[5] मुख मुसकावनि प्यारी।।
घूँघर वारे बार स्याम के लट लटकत गजमोती।
देखि सरूप नंदनंदन कौ प्रान बारतिं सब जुवती[6]।।
कर पोहोंची हँसली तेरे[7] मोहन पीत झँगुलिया सोहै।
'परमानँद स्वामी ब्रजनाइकु[8] देखि ब्रह्म हर मोहै।।

११६ (केदारौ)

•चितै धौं हरि के वदन की ओर।
चंद्र कोटि बारौं या ऊपर इह[9] धौं साहु कि चोर।।
असित अरुन उज्ज्वल दीसत हैं दोउ नैन के डोर।
मानहुँ रस्मि पान के कारन बैठे निकट चकोर।।
सुनहु जसोदा ! एहीं[10] न बूझिये कवन ज्ञान है तोर।
'परमानँद' स्वामी बालक[11] है नाहिंन तरुन किसोर••।।

---

१. अँग अँग निरखति भाइ० । फूली अंग न माइ।
२. मदनमोहन कों (ख. ङ.) नंदनंदन कों राखौं उर लपटाइ।
३. चित। ४. निरंतर थोरी।
५. कठुलावलि।
६. जोती। ७. प्यारे। ८. बहु नाइक (च) दास कौ ठाकुर
• चितबौं (इ) ऐसा भी प्रारंभ है। ९. यहै साहु० (ग. ङ छ.)
१०. ऐसी (ग)। ११. लरिका।
•• भावसाम्य–सूरसागर पद सं० ६७७ चितैं धौं कमलनैन की ओर'' पाठ भेद के साथ।

११७ (रामग्री)

इह तन बारि डारौं कमलनयन पर साँवलियौ मोहि भावै रे
चरन कमल की रेनु जसोदा लै लै सिरहि चढावै रे।।
लै उछंग मुख निरखनि[१] लागी रहि[२] रहि लौन उतारै रै।
कौन[३] निरासी दृष्टि लगाई लै लै अंचर झारै[४] रे।।
तू मेरौ बालक[५] हो जदुनंदन तोहि बिसंभरु राखै रे।
'परमानंद' स्वामी[६] चिरजीवहु बार बार यों भाखै रे।।

११८ (सारंग)

रहे री ! ग्वालि जोबन मदमाती।
मेरे छगन मगन से लालहिं कत लै उछंग लगावति छाती
खीजत तें अबही राखे हैं नान्हीं[७] नान्ही उठति द्वै दूध की दाँती
खेलनि दै घर जाइ[८] आपने डोलति[९] कहा इतौ इतराती।।
उठि चली ग्वालि लाल लागे रोवन तब जसुमति लाई[१०] बहु भाँती।
'परमानँद' वे[११] ओट दै अंचर फिरि आई नैननि मुसकाती।।

११९ (बिलावल)

ए बसुदेव के दोउ ढोटा।
गौर स्याम तन नील पीत पट कल हंसनि के जोटा।।
कुंडल एक बाम स्रुति जाकें सो रोहिनी कौ अंसु।
उर बनमाल देवकी–नंदन जाहि डरत है कंसु।।
लै राखे ब्रज–सखा नंद गृह बालक–त्रास दुराइ।
द्वै समान विराट के से लोचन उदित भए हैं आइ।।
काली–दवन पूतना–सोषन लीला गुननि अगाध।
'परमानँद' प्रभु प्रगट दमन–खलु अभय करन सुर–साधु।।

---

१. चुंबन (च) चुंवन दै दै, २. राई लोंन (ग. ज.),
३. काहू निगोडी नें दृष्टि लगाई फिरफिर अंचल (च.),
४. डारै (ड) ढारै. (ई),
५. जीवन तू मेरौ बालक तोहि० (च.), बाल होइ जदुनंदन०। (क) दाता तू मेरो जीवन तोहि।
६. जसोदा रानी बार बार मुख भाखै रे. (च) कहति नंदरानी वार।
७. सोहत न्हानी न्हानी दूध की दाँती. (अ), ८. जाउ. (ग),
९. काहे कों एतौ, १०. फेरी,
११. ओट दै (ग) । प्रीति अंतरगत फिरि

१२० (विभास)

•सुनिरी ! जसोदा आजु कहूँ तै गोकुल में एक पंडित आयौ
अपने सुतकौ हाथ दिखावहु सोई कहि है जोई विधि निर्मायौ
सुनतहिं[1] पठयो जन देखनिकौं आनि बुलाइ दियौ अरघासन
पाँइ पखारि पूछि अंजलि लै तब द्विज पें माँग्यो अनुसासन
मुखपखारि काजर टिकुली दै झगुली हरि–नख कंठ बनायौ
सुंदर तात मात कनियाँ लै विप्र चरन बंदन करवायौ।।
दै असीस कर धरि करि देख्यौ सुनि विसाल–नैनी सुतके गुन
लोचन चिह्न होइ इह श्रीपति उदर दाम पावन सुभ बंदन
हस्त सूत पग दूत बहुत गुन भूमंडल या सम नहिं कोऊ।
'परमानंद' करी न्योंछावरि हरषे नंद जसोदा दोऊ।।

१२१ (विलावल)

कब री ! कन्हैया मोसों मैया कहि बोलैगौ।
नंद जू सों बाबा हलधर सों भैया भैया
रुनक झुनक आँगन में खेलैगौ।।
आनँद कौ दिन तबहिं गिनौंगी माई
खरिक बछरुआ हँसि हँसि खोलैगौ।।
'परमानंद' प्रभु नवल कुँवर मेरौ
गाँइनि के संग ब्रज में कलोलैगौ।।

१२२ (राग कान्हरौ)

जसुमति–गृह आवति गोपीजन।
वासर–ताप निवारन कारन
बारंबार कमल मुख निरखन।।
चाहत पकरि देहरी लाँघन[2]
किलकि किलकि हुलसत मन ही मन।
राई लोंन उतारि दुहौं कर
वारि फेरि डारत तन मन धन।।
गहि[3] उछंग चाँपति हियौ भरि
प्रेम–बिबस लागे दृग ढरकन।

• *सुनो हो जसोदा..... से भी प्रारम्भ है, १. तुरतहिं।*
२. उलंघन. (ग) लंघन (घ), ३. उत्संग (घ) लालै लेति उछंग चाँपि हिय प्रेम।

लै[३] चली पलना पौढावनि कों
अरकसाय पौढे सुंदर घन।।
देति[४] असीस सकल गोपीजन
चिरजियो जो लौं जल गंग जमुन।
'परमानंददास' कौ ठाकुर,
भक्त–बछल भक्तनि[५] मन–रंजन।।

१२३ (रामकली)

करवट प्रथम लई नंद नंदन।
ताकौ महरि महोच्छव मानत भवन लिपायौ चंदन।।
बोलीं सकल घोष की नारीं तिनकौ कियौ बंदन।
मंगल गीत गवावति हरषति हँसति कछू मुख मंदन।।
या विधि भई घरी द्वै चारिक तबै कुँवर उठि जागे।
भूलि गई संभ्रम में सुत कों कछु इक रोवन लागे।।
दई लात गिरि गयौ सकट धसि तबै सबै उठि दौरे।
विसमै भए बिलोकत नैननि भूले से कछु बौरे।।
लिए उठाइ कुँवर ब्रजरानी रहसि कंठ लपटाई।
प्रेम–बिवस आपुनि न सँभारति 'परमानँद' बलि जाई।।

१२४ (नट)

दोऊ कर चोंखनी मुख चोंखत।
नितप्रति मुदित जसोदा रानी बल मोहन तन पोषत।।
नंदराइ बड भाग तुम्हारौ बाबा कहि मुख घोषत।
'परमानंददास' कौ ठाकुर प्रान पूतना पल में सोषत।।

१२५ (कान्हरौ)

मेरे छगन मगन वारे कन्हैया बन में खेलन जात।
नेंक उरै धौं आइ लाल है रहे मलिन गात।।
संग के लरिका बनि बनि आये यों कहेंगे कैसी है तेरी मात
जसोदा गहत बहियाँ मोहन करत नहियाँ 'परमानंददास' बलि जात।।

---

१. *चली लै पलना सोआवनि कों (क.घ.) लै जु चली पलना पौढामन अरकसात दृग सुंदर धन,*
२. *सबै असीस देत तेरौ सुत जीयो जो लौं गंग जमुन।। (क. घ),*
३. *भक्त प्रतिपालन (क.घ.)*

१२६ (सोरठ)

नाहिन गोकुल वास हमारौ।
बैरी कंस बसै सिर ऊपर नित उठि करै खगारौ।।
गाँउ–गाँउ प्रति देस–देस प्रति लोक–लोक प्रति जानी।
इह गोपाल कहाँ लै[1] राखौं कहति नंद की रानी।।
सकट पूतना तृनावर्त्त तै तेहि[2] विधाता राख्यो।
कैसे मिटै कह्यो हो संतनि गरग बचन तब भाख्यो।।
जद्यपि परब्रह्म अविनासी महतारी उर[3] मानें।
'परमानंद' प्रीति है ऐसी फुनि फुनि व्यास बखानें।।

१२७ (ईमन)

अब हठ छाँडि देहु रे मेरे बारे कन्हैया।
जो माँगौ सो दैहों लला रे! माखन दूध मलैया।।
चकई भौंरा पाट के लटकन और मँगाइ दैहों फेर कन्हैया।
सब लरिकनि के सँग मिलि खेलौ अरु बलदाऊ भैया।।
दोऊ मैया निरखि निरखि कै फुनि फुनि लेति बलैंया।
'परमानंद' प्रभु बालरूप धरि क्रीडति नँद–अँगनैंया।।

१२८ (बिहाग)

अब मोहि सोबन दे री माई।
गाँइनि के सँग फिर्‌यो हौं बन बन दूखत मेरे पाँइ।।
साँझहि तैं घुरि आइ नींद मेरे नैंननि पैठी आइ।
खुलत नाहिनें पलकहू मेरे खायौ कछुअ न जाइ।।
प्रात जागौं फिरि करौं कलेऊ फिर ही चरावौं गाँइ।
'परमानँद' सुत जननी जसोदा लीने कंठ लगाइ।।

१२९ (धनाश्री)

सब विधि मंगल नंद कौ लाल।
कमलनयन बलि जाइ जसोदा न्हात हु नेंक खसौ जिनि बाल
मंगल नाचौ[1] मंगल गावौ मंगल मुरली सबद रसाल।
मंगल ब्रजवासिनि के घर घर नाचौ गावौ दै कर ताल।
मंगल वृंदावन सुख–सागर मंगल लीला ललित गोपाल
'परमानंददास'[2] कौ ठाकुर सखा मंडली मधि नँदलाल।।

---

१. लौं (च.), २. इहै (इ. ग. घ. ड. च) ताहि याहि, ३. डरु
४. गावत मंगल मूरत, ५. मंगल जस गावै परमानंद मंडली मध्य गुपाल

१३० (बिलावल)

•बालविनोद भावती लीला सुर नर मुनि सब गावें (हो)
किलकत कान्ह घुटुरुअनि टेकत नख प्रतिबिंब जनावें (हो)
पीत झँगुली तन कुलह सुरंग सिर भूषन अँग अँग सोहें (हो)।
बच्छ पूंछ गहि लीनौं मोहन देखत ब्रजजन मोहें (हों)
कटिकिंकिनी और हाथखुनखुना नूपरधुनि सुनि धावें (हो)
'परमानंददास' कौ ठाकुर सब मन मोद बढावें (हो)।।

मृत्तिका भक्षण–

१३१ (सारंग)

देखि गोपाल की लीला ठाटी।
ब्रह्मा महादेव विस्मित भए जसोमति हाथ लियें रजु साटी
ए सब बालक प्रगट कहत हैं, स्याम मनोहर खाई माटी।
बदन उघारि आभ्यंतर देख्यो त्रिभुवन[1] रूप वैराटी।।
केसव के गुन वेद बखानत सेस सहस मुख लाई लाटी।
लख्यौ न जाइ अंत अंतरगति बुधि न प्रवेस कठिन घाटी
जनमु करमु गुनग्राम बखानत समुझि न परत गूढ परिपाटी
ताके[2] सरन गयें भय नाहीं निसंदेह[3] परमानँद' डाटी।।

दधि मंथन–

१३२ (आसावरी)

••दधि मथन करै नंदरानी हो।
बारे कन्हैया आरि न कीजै छाँडि न[4] देहु मथानी हो।।
वारी मेरे मोहन कर पिरायँगे कौन चित्त में ठानी[5] हो।
हँसि मुसिकाइ जननि तनचितयो[6] बुधिसागर की आनी हो
जे गुन सरसुति छंदनि गाए नेति नेति मधु[7] बानी हो।
'परमानंद' जसोदा रानी सुत सनेह लपटानी हो।।

• *इसी तुक से सूरसागर में पद सं० ६२२।*
१. चतुर्दस भुवन रूप (क), २. जाके, ३. सो जसुमति।
•• *नंदरानी हो दधि मंथन करै (क. ख.) अहो दधि–ऐसे भी प्रारंभ हैं*
४. छाँडि अब देहु, ५. मति ठानी हो, ६. चितए सुधि, ७. मृदु

१३३ (बिलावल)

प्रात–समै गाबति नँदरानी।
मिस्रित धुनि उपजति तिहि अवसर
दधि मंथन कर[1] माँट मथानी।।
तीखन लोल कपोल बिराजित
कंकन नूपुर कुनित एक रस।
रज्वाकरषत भुज लागति छबि
गाबति मुदित स्यामसुंदर–जस।।
चंचल अंचल कुच हाराबलि
बेंनी चपल खसित कुसुमाकर।
मनि प्रकास नहिं दीप अपेक्षा
सहज भाव राजति ग्वालिनि घर।।
चढि विमान देवता देखत[2]
गोकुल अमरावती बिसेखी।
'परमानंद' प्रभु घोष कुतूहल
जहाँ तहाँ अद्‌भुत छबि पेखी।।

१३४ (बिलावल)

प्रात समै उठि जसुमति दधि मंथन कीनों।
प्रेम सहित नवनीत लै सुत के कर दीनों।।
औंट्यो दूध घैया कियो हरि हित सों पीनों।
मधु मेवा पकवान मिठाई लै मुख में दीनों।।
इहि विधि नित क्रीडा करें जसुमति जिय भावै।
बाल–विनोद प्रमोद सौं नित 'परमानंद' गावै।।

१३५ (जैतश्री)

• मात जसोदा दह्यौ विलोवै
प्रमुदित बाल गोपाल–जस गावै।
मंद मंद अंबर घनघोरै रई घमर कै लावै।।
नूपुर कंकन छुद्रघंटिका रजु आकर्षित बाजै।
मिश्रित धुनि उपजति तिहि औसर देखि सची पतिलाजै।।

---

१. अरु (ई. घ. ड. च.), २. बिलोकत
• गोरी गुजरिया दह्यौ बिलोबै (क.) ऐसा भी प्रारंभ है।

मंगल घोष सदा कौतूहल अजन–जनम हरि लीनौ।
नंद[1] जसोदा के सुकृत फल बपु दिखाइ सुख दीनौ।।
सिव बिरंचि जाके पद बंदित सो गोकुल में बासी ।
'परमानंददास' कौ ठाकुर पलना झूलै सुखरासी।।

१३६ (विभास)

गोविंद दधि न बिलोवनि देहि।
बार बार पाँइ परति जसोदा कान्ह[2] कलेऊ लेहि।।
बाँधे कटिपट छुद्रघंटिका मुदित नंद जू की रानी।
कंचन[3] चीर हार उर मनि–गन बलय घोष मृदु बानी।।
एककैत होइ देव दैत्य सब कमठ मंदराचल जानी।
देखत देख लच्छमी काँपी जबै गही गोपाल मथानी।।
कृष्णचन्द्र ब्रजराज रमापति भूतल भार उतारे।
'परमानंददास' कौ ठाकुर ब्रज बसि जगत उधारे[4]।।

१३७ (सारंग)

दुरि दुरि देखत मईया हात।
बड़ी वार की दह्यौ बिलोवति खैवे कौ लौनी अकुलात।।
राति जु मोसौं कहि सोई ही माखन रोटी दैहौं प्रात।
'परमानँद' स्वामी की लीला अकथ कथा जानी नहिं जात

१३८ (सारंग)

मोहन उठतहिं रार मचाई।
छाँडिदै झूढौ काम धाम सब माखन रोटी दै मेरी माई।
कबहुँक झटकि गहत नीवी कर[5] कबहुँक कंठ रहत लपटाई
मुख चुंबति जननी समुझावति सद लौनी दैहौं कुँवर कन्हाई
उठि कर गही आपु ही नेती माखन बड़ी बार क्यों लाई
'परमानंद' देखि यह लीला सुधि सागर मथिवे की आई।।

---

१. *ब्रजमंडल में आनि नँद कें सब भक्तनि सुख दीनों (क),*
२. *लाल (छ)*
३. *कनक(च. छ.)*
४. *ब्रजवासी सु उधारे (च)*
५. *लाल*

१३६ (धनाश्री)

• दधि मथत ग्वालि गरबीली।
रुनक[1] झुनक कर कंकन बाजें बाँह डुलावति ढीली।।
कृष्ण देव माखन माँगत हैं नाहिंन देति हठीली।
भरे[2] गुमान बिलोकति ठाढी अपने रंग रँगीली।।
हँसि बोले नँदलाल लाडिले तू तो है रसिक रसीली।।
'परमानँद' ग्वालिनि[3] रस बींधी सरबसु दियौ है छबीली

ऊखल–बंधन–

१४० (सोरठी)

•• गोविंद बार–बार मुख जोबै।
कमलनयन हरि हलकनि रोवै बंधन छोरि जसोबै।।
जो तेरौ सुत खरौ[4] अनेरौ अपनी कूखि कौ जायौ।
कहा भयो जो घरि के लरिका चोरी माखन खायौ।।
नई[5] मटुकिया दह्यौ जमायो जाखुन[6] पूजि न पायौ।
तिहिं घर पितर देव काहे कों जिहिं घर कान्हरु आयौ।।
जाकौ नाँउ कुठार–धार है जम की फाँसी काटै।
सो[7] हरि बांधे प्रेम–जेवरी लकुट[8] लियें कर डाटै।।
'परमानंददास' कौ ठाकुर करत आपनौ[9] भायौ।
देखि दुखी दोउ सुत कुबेर के ता[10] लगि आपु बँधायौ।।

• *अहो दधि० (बंध ३० ।७)*
१. *रुनन झुनुन–० (३० ।७)*
२. *भलें (क),*
३. *नंदनंदन कों सरबस (बं १०१ ।२)*
• *सूरसागर प. सं० ६१७ में भी 'दधि लै मथति ग्वालि गरबीली' तुक से।*
•• *सूरसागर पं. सं. ६६४ में भी 'जसुदा तेरौ मुख हरि जोवै तुक से प्रारम्भ*
४. *खरोई अचगरौ।, ५. कोरी (इ. ग. घ. ड. च.), ६. देवनि पूजि न।*
७. *सो हरि बांधे० तुक के साथ ही इस प्रकार का भी पाठ उपलब्ध हैं–*
'ब्रह्मादिक सनकादिक दुर्लभ ताहि जसोदा डाटै'
८. *जननि साँट लै डाटै।*
९. *भगत कौ (ख.) भक्त मन भाए।*
१०. *लालन आपु बँधाए (इ.)*

१४१ (सारंग)

•मेरे ललना ! तुम ऊपर वारी।
कंठ लगाइ दियौ मुख चुंबन सुंदर स्याम मुरारी।।
काहे कौं दाम उलूखल बाँधे अहो कैसी महितारी।
अति उत्तंग बयारि न लागी क्यों टूटै द्रुम भारी।।
बारंबार बिचारि जसोदा को लीला अवतारी।
'परमानन्द' प्रभु कारज साधक माया देव पसारी।।

फल–विक्रय–

१४२ (सारंग)

ब्रज में काछनि बेचन आई।
नंद–द्वार[1] भरि आइ उतारी ओडी फलनि सुहाई।।
लै दौरे हरि पेट अँजुलिया सुभ कन[2] कुँवर कन्हाई।
रारत[3] ही मुगताफल ह्वै गए जसुमति मन[4] मुसिकाई।।
ए हरि चारि फलनि के दाता फल भक्षत न अघाई।
'परमानँद' वा कौ भाग बड़ौं है बिधि सों कछु[5] न बसाई।।

१४३ (सारंग)

कोउ मईया बेर बेचन आई।
सुनतहि टेर नंद–रावरि में लई भीतर भवन बुलाई।।
सूकत धान परे आँगन में कर अंजुली बनाई।
ठुमकि ठुमकि चलत अपने रसु गोपीजन[6] बलि जाई।।
लिए उठाइ झारि[7] गोद करि मुख चुंबति मुसिकाई।
'परमानंद' स्वामी आनंदे बहुत बेर जब पाई।।

१४४ (सारंग)

कोऊ मईया आम बेचन आई।
टेरि सुनत मोहन उठि धाए[8] भीतर भवन बुलाई।।
मईया ! मोहि आम लै दै री संग सखा बल भाई।
'परमानंद' जसोमति लै दिए खाए कुँवर कन्हाई।।

• सूरसागर पद सं० १००६ में भी 'मोहन हौं तुम ऊपर वारी , तुक से प्रारंभ
१. आनि उतारि धरी नँद आँगन। २. कर। ३. डारत ही। ४. देखि सिहाई। ५. कहा।
६. जसुमति लेति बलाई। ७. हियौ भरि आयो। ८. दौरे।

विवाह–

१४५ (सारंग)

पूजहु साध नंद मेरे मन की।
करहु ब्याहु देखौं अँखियनि भरि दुलहनि अपनें ललनकी
ब्रजपुर माँझ विचारहु कन्या काहू गोप सधन[१] की।
रूप अनूप सकल गुन सुंदरि जोरी साँवल तन की।।
कब देखौंगी मौरु धरें सिर पुर[२] रवि ढाँपि वदन की।
अति उतंग नीली घोडी चढि अरु छबि चौंर ढरन की।।
राई लोंन उतारि दुहूँ दिसि लगै न डीठि दुर्जन की।
'परमानँद' न्योंछावरि कीजै सोभा रूप सदन की।।

१४६ (सारंग)

अपने लाल कौ ब्याह करौंगी बडे गोप की बेटी।
जासौं हमसौं[३] जतियाचारौ भोजन भेटा–भेटी।।
मात जसोदा लाड लडावै अंग सिंगार करावै।
कस्तूरी कौ तिलकु बनावै चंदन सेत चढावै।।
कहि री[४] ! मईया कब लावैगी मोकों दुलहिया नीकी।
परोसि[५] परोसि मोहि खीर जिंवावै रोटी चुपरी घी की।।
ए सब सखा बरात चलहिंगे हौंऽब[६] चढौंगौ डोली।
जन 'परमानँद' पान खवावै बीरा घालें[७] ओली।।

१४७ (सारंग)

ब्याह की बात चलावन आए।
अपने–अपने गाँव तै ग्वालनि
अति[८] आतुर भए दूत पठाए।।
नंद महर मिलि समाधान कियौ
देखि जसोदा आनँद भायौ[९]।

---

१. सदन (ग), २. पुनरथ बदन ढुरन की।
३. अपनौ। ४. धौं. (क. ग. ङ छ.),
५. अरसि परसि कै मोहि खवावै
६. हौं अब चढिहौं घोरी।
७. राखै झोरी भरि–भरि (ब. १३० ।१)
८. कहि कहि दूत, ९. पाए

कब देखौंगी दुलहन[1] की दुलही
अपनौ कुल देवता मनायौ।।
इह[2] सुनि निरखि हँसे संकरषनु
प्रभु प्रतापु कछु हृदै जनायौ।
'परमानँद' मईया श्रीपति की।
तिहि छिनु भूषन वसन बनायौ[3]।

१४८ (गौरी)

छाँडहु मेरे ललन ! अजहुँ लरिकाई।
इहै समै[4] देखिकें तोकों बाबा ब्याह की बात चलाई।।
डरिहै सासु ससुर चोरी सुनि हँसिहै नई दुलहिया सुहाई।
उबटौ नहाउ गुहौ चुटिया बलि देखि भलौ बरु करिहैं बडाई
मात बचन सुनि बिहँसि बोल दै भई बडी बेर कालि तौ नाई
जब सोइबौ कालि तब ह्वै है नैन मूँदि तब पौढे कन्हाई।।
उठि कह्यो भोर भयौ झगुली दै मुदित महरि लखी आतुरताई।
बिहँसि गोपाल जानि 'परमानँद' सकुचि लगे जननी उर धाई।।

१४९ (सारंग)

ब्याह की बात चलावति मईया।
बरसाने वृषभान गोप कें लला की भई सगईया।।
ग्वाल बाल सब बरात चलेंगे और चलै बल भईया।
'परमानंद' नंद के आनँद हँसि–हँसि देति बधईया।।

१५० (बिलावल)

लाल ! तेरी चलत ब्याह की बातें।
मेरौ कह्यो मानि मनमोहन तजि चोरी की घातें।।
लरिका टेब बडे भये हौ तातें सजन सकातें।
दूध दही अपनें बहुतेरौ काहे कों घर–घर जातें।।
सुंदरि नारि सुलच्छन कन्या चंपक बरनी गातें।
'परमानंद' लगन लियें आवत घरी साँझ कै प्रातें।।

---

१. दूलह दुलहिन अपने कुल के देव मनाए।
२. ये सुनिकै हरषे संकरषन प्रभु कछुक प्रभुता जु जनाए।
३. बनाए ।
४. काल्हि (ग. ज.)

१५१ (बिलावल)

मैया मोहि ऐसी दुलहिन भावै।
जैसी यह काहू की टटोनिया रुनक झुँनक घर आवै।।
करि करि पाक रसाल अपने कर मोहि परोसि जिमावै।
करि अंचल पट ओट बाबा सों ठाढी बाँह दुरावै।।
मोहि उठाइ गोद बैठारै करि मनुहारि मनावै।
अहो मेरे लाल ! कहौ बाबा सौं तेरौ कह्यौ करावै।।
नंदराइ नंदरानी हिलिमिलि सुख–समूह बढावै।
'परमानंद; प्रभु की बातें सुनि आनँद उर न समावै।।

१५२ (बिलावल)

आजु लाल की होत सगाई।
आवौ री गोपीजन मिलिकै गावौ मंगलचार बधाई।।
चोटी चुपरि गुहौं तेरी बेंनी छाँडौ चंचलताई।
वृषभानु गोप टीकौ दीयौ सुंदर जानि कन्हाई।।
जो तुमकों या भाँति देखि हैं करि हैं कहा बड़ाई।
पहरि बसन आभूषन सुंदर उनकौं देहुँ दिखाई।।
नखसिख अंग सिंगार महरि मनिमोतिनिकी माला पहिराई
बैठे आइ रतन चौकी पर नर–नारिनि की भीर सुहाई।।
विप्र प्रवीन तिलक करि दियौ मस्तक अछित लियौ अपनाई।
बाजत ढोल भेरी अरु महुबरि नौबत धुनि घनघोर बजाई।।
फूली फिरति जसोदा रानी वारि कुँवर पर बसन लुटाई
'परमानंद' नंद के आँगन अमर गन पुहुपनि झर लाई

१५३ (बिहागरौ)

बरसाने वृषभान कुँवरि कों तेल चढावें गोरी।
नव तरुनी वैसन्धि बाल रूप अनूपम भोरी।।
साल तानि वितान बनायौ कर गहें कुँवरि किसोरी।
ताके मधि पकवान विविध धरि कर कंकन बिबि जोरी।।
सप्त सुहागिनी तेल चढावें सुहागिनी जोरी।
राधा जू तब उवटि न्हवाई छबि की उठति झकोरी।।
भूषन बसन पहिराइ कुँवरि कौं मरुवटि करि मुख रोरी।
स्यामा कर पकवान दिवायो सबकों भरि भरि झोरी।।

ललिता आइ करी तब आरति छबि न बढी कछु थोरी।
अरघ बढाइ लई घर भीतर सखि डारति तृन तोरी।।
.....।
'परमानँद' सँग कृष्णावति कर टहल महल में दौरी।।

१५४ (विहागरौ)

जैंबौ दूल्हे लाल दुल्हैया।
बहु विधि साक सुधारे बिंजन औरु बनायौ घैया।।
कंचन थार कंचन की चौकी परोसत मोद बढैया।
ठाढी पवन करति है रोहिनि आनँद उमगि न समैया।।
करि अँचवन मुख बीरी दीन्ही लेत वारनें मैया।
लाल लाडिली की छबि ऊपर 'परमानँद' बलि जैया।।

१५५ (विलावल)

माँगै सुवासिनी द्वार–रुकाई।
झगरति अरति करति कौतूहल चिरजीवौ तेरौ कुँवर कन्हाई
चिरजीवौ वृषभाननंदिनी रूप सील गुन–सागर माई !
निरखि–निरखि मुख मुख जीवहि सजनी यही नेग बड संपति पाई
दीनी धूमरि धौरी पियरी औ तियनि कों सारी पहिराई
फिरि सबहिनि की महरि जसोदा मेवा गोद भराई।।
आरती कर लियें रतन–चौक में बैठारे सुखदाई।
'परमानँद' आनंदकंद कें भाग बडे घर नवनिधि आई।।

१५६ (विलावल)

चलहु तौ ब्रज में जईये। जहाँ राधाकृष्ण रिझईये।।
ब्रषभानराइ घर आए। तहाँ अति रस न्योंति जिवाँए।।
तहाँ ब्रजवासिनि जुरि आईं। तहाँ बैठे कुँवर कन्हाई।।
तोहि गारी कहा कहि दीजै। यह जसु अपनौ सुनि लीजै।।
द्वै बाप सबै जग जानै। ताहि वेद पुरान बखानै।।
तेरी मैया अति अनजानी। तुम बैठौ हिलिमिलि पाँती।।
तेरी फूफी पंच भरतारी। सो तौ अर्जुन की महतारी।।
तेरी बहिन सुभद्रा वारी। सो तौ अर्जुन संग सिधारी।।

यह जसु सुनि–सुनि कुँवरि किसोरी। तब प्रीति हँसी मुख मोरी
जो यह गारी गावै। सो प्रेम पदारथ पावै।।
यह जसु 'परमानँद' गावै। कछु रहसि बधाई पावै।।

१५७ (षट्)

सो है सीस सुहावनों दिन दूलह तेरे।
मनि–मोतिनि कौ सेहरा बसिया मन मोरे।।
मुख पून्यों कौ चन्द है मुक्ताहल तारे।
उनके नैन चकोर हैं ये सब देखनिहारे।।
पाग बने वारी बनि आई।
परम अंगुरी रूप नागरी रास सब देखनि आईं।।
दुलहिनि रैन सुहाग की दूलह वर पायौ।
नंदलाल कौ सेहरौ 'परमानंद' प्रभु गायौ।।

१५८ (नट)

सजनी री ! गावौ मंगलचार।
चिरजीयो वृषभाननंदिनी दूलह नंदकुमार।।
मोहन के सिर मुकुट बिराजत राधा के उर हार।
नीलांबर पीताबंर की छबि सोभा अमृत अपार।।
मंडप छायौ देखि बरसाने बैठे नंदकुमार।
भाँवरि लेत पिया और प्यारी प्रीतम तनमन दीजै वार।।
यह जोरी अविचल वृंदावन क्रीडत करत बिहार।
'परमानंद' मनोरथ पूरन भक्तनि प्रान–अधार।।

१५९ (बिहागरौ)

कुंज–भवन में मंगलचार।
नव दुलहिनि वृषभानकिसोरी नव दूलह ब्रजराजकुमार।।
नये–नये पुहुप कंज के तोरन नव पल्लव के बंदनवार।
चौरी कदंब खंड बंसीबट सघन लता मंडप विस्तार।।
करत वेद धुनि विप्र मधुपगन कोकिल तिय गावत गुन सार
.....दीनी भूरि 'परमानंददास'।।

4. उराहनौ

गोपिका–वचन, जसोदा जू सों–

१६० (धनाश्री)

जसोदा ! चंचल तेरौ पूत।
आनंद्यौ ब्रज[1] भीतर डोलै करत अटपटौ सूत।।
दह्यौ दूध घृत लै आगें करि[2] जहाँ तहाँ धरौं दुराइ।
अँधियारे घर कोउ न[3] जानें तहाँ पहिलें ही जाइ।।
गोरस के सब भाजन फोरे माखन खायौ चुराइ।
लरिकन के कर कान मरोरे तहाँ तै चले रुवाइ[4]।।
बाँटि देत बनचरन्ह कौतुकी करै विनोद बिचारि।
'परमानँद' प्रभु गोपीवल्लभ भावै मदन मुरारि।।

१६१ (जैतश्री)

ऐसे माई ! लरिकन सों आदेस कीजै।
दूरहि तें भए दरसन देखिये पाँइ लागि माँगि[5] कछु लीजै।।
अबहीं हरि ढँढोरि माँट[6] सब माखन खाइ मौन[7] गहि बैठे
हौं पचिहारी मेरौ कह्यो न मानत विनती करत जात हैं ऐंठे
सुनहु जसोदा करतब सुत के चोरी करि[8] करि साधु कहावै
जद्दपि इह गुन कमलनयन के 'परमानंददास' जिय भावै।।

१६२ (आसावरी)

जसोदा बरजति काहे न माई !
भाजन भानि दही सब खायो बातें कहिय न जाई।।
हौं जु गई री[9] खरिक आपनें मैं जैसें आँगन आई।
दूध दही की कीच मची है सु ढुरतहि[10] देख्यौ कन्हाई।।

---

१. घर. (ङ छ.) २. धरि (ग.)
३. नहिं पावत यह पहिलें लै जाइ. (छ.)
४. पलाइ (इ. घ.), ५. माँगि माँगि (क),
६. सबनि के माखन (इ. घ.) अबहीं ढोरि ढँढोरि माट.,
७. मुनी व्है बैठे (ज.) मौन धरि० (इ. घ.)
८. कै कै (ङ छ.), ९. ही. (ग. च. ज), १०. दुरतहि लख्यो

तब अपने कर सु गह गही[1] हौं तुम ही पें आई।
'परमानंद' भाग्य गोपी कौ सु प्रगट प्रेम–फलपाई।।

१६३ (सारंग)

नेंकु गोपाल कों बरजि।
अपनें घर बैठी तौ बादर ज्यों गरजि।।
हमरे घर दुंद कीनों माखन सब चोर्‌यो।
जब हौं नेंक हटकनि लागी भाजन गहि सब फोर्‌यो।।
गोपिनि के वचन सुनत कोपी नँदरानी।
कृष्ण–कथा जानि जननि मन में मुसिकानी।।
स्यामसुंदर देखनि कौं उरहन मिस आईं।
'परमानंद दास' समुझि[2] इनकी चतुराई।।

१६४ (सारंग)

तेरौ[3] कान्ह कौनैऽब ढंग लाग्यौ।
मेरी पीठि पर मेलि करूरा व है देखि जात भागौ।।
पाँच बरस कौ चपल हठीलौ ब्रज में डोलत नागौ।
'परमानंददास' कौ ठाकुर काँध पर्‌यौ नहिं तागौ।।

१६५ (सारंग)

जसोदा ! तेरौ री बाल गोपाल कह्यो तौ न मानै।
ए बुधि याकी कबहुँ न नासी अपनों परायौ न जानै।
इह ब्रज वास नंद कौ गोकुल कोउ न बसत बटाऊ।
लरिका बहुत भए हैं पाछें ऐसी भई न काहू।।
सुनि कै कथा विचित्र कान्ह की हँसी नंद की रानी।
'परमानँद' स्वामी की चोरी जानि दुराउ सयानी।।

१६६ (सारंग)

अपने रंग लड वावरौ।
राजकुमार कह्यो नहिं मानत चंचल ढोटा रावरौ।।
माखन दूध दही घृत मेवा जहाँ धरौं तहाँ लेई।
ऐसौ चतुर चोर–चिंतामनि लै बनचरनि कों देई।।

---

१. गहे (अ. इ. ग. घ. ड. च. छ. ज.) गहि हरि कों तुम हो पै लै आई।
२. निरखि (इ. घ), ३. तेरौऽब कान्ह. (ग. घ. ङ.)

सुनहु नंद उपनंद महामति याकी अकथ कहानी।
बालक[1] अनूप करम सब गति कछु जात न जानी।।
जाके घर में कछुव न पावै मेहन तहाँ करावै।
'परमानंददास' सँग लीनें उलटी आँखि दिखावै।।

१६७ (सारंग)

जसोदा ! इह कौनें इह ढँग लायौ।
जहाँ दुराइ धरौं नेह लै घर[2] लै सब गोरस खायौ।।
काहू की संका नहिं मानत करत आपनों भायौ।
बनचर सौं अब कहाँ कौ नातौ भाजन फोरि लुटायौ।।
मेहन करै घरौंची ढारै[3] भलौ[4] पूतु पढायौ।
'परमानंददास' सँग लीनें खेलनि ठाट बनायौ।।

१६८ (सारंग)

लियो मेरे हाथ तै छिडाइ।
लावति ही तावनि कों माखनु डार्‌यौ कुँवर खिंडाइ।।
बूझत मोहि कौन की बेटी कहा पाहुनी नाँउ।
देखियत कछु भली सी मानिस कहा है तेरौ गाँउ।।
निरखि रही हौं मोहन मूरति आनन रूप निकाई।
'परमानंद' स्वामी मनमोहन मुसकि ठगौरी लाई।।

१६९ (सारंग)

सुनहु सुनहु जसोदा माई।
आन समै बछरा सब ढीलत तारी देत बिडारत गाइ।।
कबहुक आइब लेत चिहुँटिया सोवत लरिकनु चलत जगाइ
जो बरजौं तौ मोहि डरावत[1] ठाडे होत है फिरि मुसिकाइ
दूध दही सब अजिर में भाजन फोरत चलत पराइ।
ठाढी हँसति गोकुल की गोपी कबहुक चलत अगूँठा दिखाइ
औरहु भाँति करत बहुतेरी मोपें कछुबे कही न जाइ।
'परमानंद' साखि इह जानत तातै तुमसौं कहति हौं आइ

---

१. खाइ पीइ कै भाजि जात है भाजन नावै पानी (ड. छ.)
२. तहाँ सब, ३. ढोरै. (ग),
४. नीकौ, ५. त्राहासत (क.)

१७० (गौरी)

•बरजति काहे तें नहीं।
ह्याँ तौ दिन–दिन प्रति की बातें कौलों परति सही।।
माखन न खाइ दूध गहि ढोरै लेपत आँग दही।
ता पाछें जो घर के लरिकनु भाजत छिरकि मही।।
जो कछु दुराइ धरौं दूरि कै जानत तहीं तहीं।
कहा बसाइ तुम्हारे सुत सों सब पचिहारि रही।।
चंचल चपल चोर–चिंतामनि कथा न परति कही।
'परमानँद' स्वामी[1] के मिलनि कौं ढूँढति गली रही।।

१७१ (कल्यान)

ए भरी दोहनी दूध हाथ तै बरबट ही लै जात छिडाइ।
पूत लाडिलौ जानें नाहीं तैं कियो ढीट जसोदा माइ।।
बाँटि देत सब और ग्वाल कौं सुनि री महरि आपु नहिं खाइ।
आन समै बछरा छोरत है तारीऽब ठोकि बिडारत गाइ
एक जु ढोटा नंद महर कें तापैं मेरौ कछु न बसाइ।
'परमानँद' प्रभु मोहन मूरति बदन सरूप देखि मुसकाइ।।

१७२ (कानरौ)

तेरे लाल मेरौ माखनु खायौ।
द्यौस दुपहरु[2] देखि घरुसूनों ढोरि ढँढोरि अबहि घरु आयौ
खेलि कपाट पैठि मंदिर में सब दधि अपने सखनि खवायौ
छीके हौ ते चढि ऊखल पर अनभावत धरनी[3] ढरकायौ
दिन दिन हानि कहाँ लौं सहिये ए ढोटा जु भले ढँग लायौ
'परमानँद' प्रभु बहुत बचति हौं पूत अनोखो तैं ही जायौ।।

१७३ (कानरौ)

• आवति ही माई ! साँकरि खोरि।
दोऊ हाथ पसारि रहे हरि हौं बलि जाइ रही मुख मोरि।।
बालक सों कहा कहौं सखी लईऽब दोहनी हाथ मरोरि।
ऐसौ चपल हठीलौ ढोटा भाज्यो बहुरि मटुकिया फोरि।।

• अपने गोपाल कों बरजति. (ग. ज.) ऐसा भी प्रारम्भ है।

१. प्रभु या लरिका कों ढूँढत फिरति वही. (ग. ज.)

२. भरी दुपहरी सखि सूनौ घर०। टीक दुपहरी लखि सूनो घर०। द्यौस दुपहरी (ग.ज.)

३. भोयनि (क.) • भावसाम्य–सूरसागर पद सं. ६४६ तथा स. भ. बंध १।१ भी पाठभेद के साथ।

का पर कीरति अटपटी बरनौं ग्रीवा तै हार लियौ मेरौ तोरि
ताकी साखि दास 'परमानँद' इक इक लाल रहे लखिकोरि

१७४ (बिलावल)

ऐसे लरिका कतहुँ न देखे बाउ सु चालि गाँव की माई।
माखन चोरैं भाजन फोरै उलटि गारि दै फिरि मुसुकाई।।
तब हौं दैनि उराहन आई कहा करौं जो नाकहि[1] आई।
अहो[2] जसोदा तुम ठकुराइन तुमसों कहत मेरी बौराई[3]।।
पाछैं ठाढे मोहन चितवत धीरी हो तें चोरी[4] लाइ।
'परमानँददास' कौ ठाकुर पचयो चाहत चोरी खाई।।

१७५ (बिलावल)

बहुत उपजति है या ढोटा पैं[5] कैसी धौं लै लै आवत।
हरि हरि हरि देखहु री माई ! जानि जु आप[6] दुरावत।।
विद्यमान दधि दूध चुरायो फिरि फिरि मोहि बौरावत।
चतुर छैल[7] विद्या सब जानत[8] गढि गढि छोलि बनावत।।
जो न पत्याइ सौंह लै मोपें[9] साँची सौंह[10] करावत।
तेरे बक्ष जात द्वै सिव से तिन पर हाथ धरावत[11]।
बदन मोरि मुसिकाइं चली फिरि उरहन के मिस आवत।
'परमानँददास' कौ ठाकुर स्याम मनोहर भावत।।

१७६ (गौरी)

भाजि गयो मेरौ भाजन फोरि।
कहा करौं[12] सुनि माई[13] जसोदा अरु सब माखन खायौ चोरि।।
या ढोटा की समुझि न परई रोकें रहत गाँव की खोरि।
को उत मारग चलन न पावत दूध हाथ तै लेत मरोरि।।
लरिका एक[14] सहस सँग लीनें रात दिवस गोरखधंधोरि[15]।
आनँद रूप फागु सौ खेलै तारी दै दै हँसै मुख मोरि।।

---

१. अंतहि. (इ. घ.) २. सुनहु. (ग), ३. बसवाई. (च. छ.) कहत मो मति बौराई।
४. चाख्यौ. (ग. ज.), ५. सो (इ. घ.)
६. बात(क), ७. चोर (ग. ज.), ८ पूरन (ग. ज.)
९. सों. (ग. ज.), १०. सपथ (ग. ज.)
११. दिवावत (ग. ज), १२. कहौं. (ग. ज.), १३. मात. (इ. ग. ज.)
१४. सत पचास. (ग. ज.), १५. ढंढोरि. (ग. ज)

को[1] इह कुँवर कवन कौ ढोटा सब ब्रज बँध्यौ[2] प्रेम की डोरि।
'परमानँद' प्रभु[3] मोहन मूरति लेति बलैया अंचर छोरि+।।

१७७ (देवगंधार)

•भली इहि खेलिबे की बानि।
मदनगोपाल लाल काहू की राखत नाहिंन कानि
सुनहु जसोदा करतब सुत के इहे लै माटु मथानि।
ढारि[4] फोरि दधि अजिर में कौन सहै नित हानि।।
अपने हाथ लै देत बनचरनि दूध भात घृत सानि।
जो बरजौं तौ आँखि दिखावत पर घर कूदन दानि।।
ठाढी हँसति नंद जू की रानी मूँदि कमल–मुख पानि।
'परमानंददास' इह जानै बोलि बूझि धौं आनि।।

१७८ (धनाश्री)

••जसुमति ठाढी यों जु कहै।
या ब्रज के सब लोग लाल के गोहन लागि रहें।।
काहुके[5] भवन जाइ नहिं कबहू झूठें आनि गहें।
एक गाँउ कौ बास सखी री[6] कैसें कै निबहै।।
तुम जिनि खीझौ जसुमति[7] रानी सबकी जीवनि यहै।
'परमानंद' आँखि जरौ ताकी[8] टेढी भौंह[9] चहै।।

---

१. *सुंदर स्याम रँगीलौ ढोटा।*
२. *बाँध्यौ. (इ. क. ग. घ. ज.), ३. दास कौ ठाकुर (ग. ज.) सयानी ग्वालिनि*
\+ *भावसाम्य–सूरसागर पद सं० ६४५ में भी पाठ–भेद और तुक परिवर्तन के साथ।*
• *'कौन यह' ऐसा प्रारंभिक पाठ था। चौरासी वार्ता के अनुसार महाप्रभु वल्लभाचार्य द्वारा संशोधित।*
४. *ढोरि. (क.)*
•• *ठाढो जसुदा. (क.) ऐसा भी प्रारंभ है।*
५. *जाके भवन जात (ग. ज) काहू के भवन जाइ चले नहिं झूठी साँची आनि कहै. (क)।*
६. *बसैवौ कैसें. (ग. ज.) एक गाँउ इक ठाँउ सखी री ऐसें क्यों निबहै (क.)*
एक गाँउ एक बास बैसिवौ कैसे कहु निबहै।
७. *मात जसोदा. (ग. ज.) सुनि जसुदा तुहि यह बूझिये सबको० (क.)*
८. *जाकी. (ग. ज.) 'परमानंद' दृष्टि. जरौ ताकी जो बाँकी दृष्टि चहै (क)*
९. *दृष्टि (ग. ज.)।*

१७९ (बिलावल)

सुनि जसुमति ! तेरौ कुँवर कन्हाई।
चोरी मिस नित–प्रति आवत है
बाँह पकरि कै तुम ढिंग लाई।।
इतनौ को नित नुकसान सहैगौ
बसें बास बरसाने जाई।
अपने लाल कौ गुन नहिं जानति
मेरी तनक न करति सुनाई।।
'परमानँद' सुनि बचन ग्वालिनी
स्यामसुंदर मन में मुसिकाई।
मोकों संग लै जाति कुंजनि में
चोरी करन की चाल सिखाई।।

१८० (गौरी)

जसोदा ! बडौ घरानौ तेरौ।
तेरौ पूत स्यामघन सुंदर चंचल चपल तरेरौ।।
तेरौ आयो बाट घाट औघट बरबट करत झँझेरौ।
तेरौ लाल लग्यौ सँग डोलै गहै अबलनि को छेरौ।।
छेरौ बाँधि चले गुरुजन मगु क्यों ब्रज होइ बसेरौ।
मेरौ बचन मानि ब्रजरानी ! कीजै जतन सवेरौ।।
.....।
बेर भई गाँइ आवनि की ब्रज 'परमानँद' देत है फेरौ।।

१८१ (बिलावल)

मैया ! याही कौन निवारै।
ऐसो हठीलौ लाडिलौ तेरौ री ! छीके हू तै टारै।।
तुमहीं बिचारौ हो मात जसोदा ! अति अनीति चलावै।
जद्यपि ऐसौ चपल विनोदी 'जन परमानँद' गावै।।

यशोदा–वचन, गोपी–प्रति–

१८२ (सारंग)

जानिऽब लावहु जिनि दोस।
अबहि कृष्ण की बाल दसा है जियहि धरौ जिनि रोस।।

जो हरि गयो[1] तिहारें चोरी तौ कहा घर[2] हि लै आयौ।
करम बोलि कें मोपें लीजै केतकु माखन खायौ।।
ठाढी हँसति नंद जू की रानी गाँउ बसत कहा कीजै।
'परमानँद' स्वामी लरिका है बोलि सिखाँवन दीजै।।

१८३ (सारंग)

•ग्वालिनि ! तोपें ऐसौ क्यों कहि आयौ।
मेरे घर–घर बात[3] स्यामघन ताहि तें दोसु लगायौ।।
घर हि कौ माखन दूध न भावै तेरौ दह्यौ[4] क्यों खायौ।
वारि डारौं तोसी कोटि त्रिया जिनि मेरौ ललनु खिझायौ
कटुक बचन सुनि ग्वालिनि डोली हरि सौं नेह बढायौ।
'परमानँद' प्रभु बतरस अटकी घर कौ काज[5] बिसरायो।।

१८४ (विहागरौ)

इहि तन नवल कुँवर पर वारौ साँवरिया मोहि भावै री।
चरनकमल की रेंनु जसोदा लै लै सीस चढावै री।।
लै उछंग मुख निरखनि लागी राई–लोंन उतारै।
कौन निरासी दृष्टि लगाई लै–लै आँचल झारै।।
तू मेरौ बालक जदुनंदन तोहि बिसंभर राखै रे।
'परमानंददास' चिरजीवौ बार–बार यौ भाखै रे।।

१८५ (सारंग)

क्यों इह भरों ग्वालिनि सी डोलै।
कैसेंऽब या की गारि समुझिये मेरौ[6] बालक तोतरे बोलै
क्यों इतने ऊँचे पहुँचे सिसु क्यों तेरौ छीकौ खोलै।
सोवत तोहि भयो कछु संभ्रम[7] भूलि परी इहि जो लै।।
मन[8] औरै मुख औरै कहति कछु सूचति लोचन लोलै
'परमानँद' प्रभु सों कछुअ न कहिये गोरस चाहति सो लै

---

१. गए. (क.), २. करहि. (च.)
• तोपें ऐसौ क्यों..... (क), इस धौ तोसों ० (ड. छ.) ..... ऐसे भी प्रारम्भ हैं।
३. जात. (इ.) ४. कैसें खायौ तेरौ क्यों करि।
५. काज सबै (इ), ६. लाल तोतरे० (इ. घ. ड. छ.)
७. सपनौ। ८. तेरे मन औरै. (क.)

१८६ (सारंग)

जबतै ग्वालिनि तू ब्रज आई।
तबही तै दिन देति उराहनौ उलटी चालि चलाई।।
राते नयन रोष में भामिनि लख्यौ न जाई सूतु[1]।
बार बार क्यों नाँउ लेति है कान्ह परायौ पूतु।।
'परमानँद' जसोदा खीझै बार बार यों बोलै।
पाँइ लागौं घर जाहि आपने काहेकौं आँगन डोलै।।

१८७ (सारंग)

• झूठौ दोस गोपालहिं लावति।
जहँ जहँ खेलनि जात मनोहर तहाँ तहाँ उठि धावति।।
कब तेरें दधि माखन खायौ ऐसें हि हाथ नचावति।
'परमानंद' मदनमोहन कौं ब्रज की लीला भावति।।

१८८ (सारंग)

ग्वालिनी ! गोविंद ढौरी लायो।
प्रातकाल उठि तेरें हि आवत ढोटा तैं बौरायौ।।
पाँच बरस कौ स्याम मनोहर बतियनि ही विरमायौ।
दूरि हि तें कर पल्लव मिलवति नैननि सूतु[2] बतायौ[3]।।
समुझि परै नहिं या ढोटा की उलटी चाल चलायौ।
स्रवननि सुन्यौ नयन नहिं देख्यौ निगम न[4] भेद बतायौ
जानति बूझति पूत परायौ अपने भवन बसायौ।
'परमानंद' जसोदा[5] खीझति इह कैसौ जग[6] आयौ।।

१८९ (सारंग)

••मूँगि रहै छाँडि अटपटी रारि।
कहा भयौ जो इतनक ढोटा बारक कीनी आरि।।
कहाँ तू भर जोबन[7] कहाँ सिसु बीतत वत्सर चारि।
ऐसी बात कहत क्यौ आवै हँसि हैं सब ब्रज–नारि।।

---

१. *बदन मुसकाती लख्यो० (क.) बेन मुसिकाते।*
• *झूठें हि दोस गुपालै, ऐसा प्रारम्भ है।*
२. *सत्र (क.), ३. बनायो. (ग. ज.)*
४. *नेति कहि गायो (इ. घ.), ५. जसोमति, ६. जुग*
•• *मूक रहि. (ग. ज.) ऐसा भी प्रारंभ है, ७. यौवन (क.)*

कहाँ नखनि के घाउ परे हैं कहा लागि रही गारि।
'परमानँद' कहति नंदरानी मैं तो[1]सों मानी हारि।।

१६० (सारंग)

गोरस कहा दिखावनि आई।
इतनौ लै खायो नंद जू के ढोटा बदलि लेहि मेरी माई।।
ऐसी कीनी तुम्ह ठीठ कन्हैया मंदिर तैं उठि धाई।
पाँच सखी मिलि देति उरहनौ ए तेरी कौन बडाइ।।
सुंदर कान्ह[2] छबीलौ नागर इहि मिस देखनि आई।
'परमानँद' स्वामी सों हिलि–मिलि हँसति चलति मुसिकाई

१६१ (कान्हरौ)

देखौ या ब्रज कौ चलनु।
तू ग्वालि[3] जोबन मदमाती संग लायौ ललनु।।
खेलत हुतौ गोपबालक सँग तैं दै सैन बुलायौ।
बे ही काज चिहुँरिया लीनी रोवत मोपहँ आयौ।।
चितवति अनत कहति कछु औरै ऊँची नीची डीठि।
तैं कत दूध चुरु भरि मास्यौ कान्ह उघारी पाठि।।
लोक वेद की कानि न मानति तेरे जिय ऐसी भावति।
'परमानंद' जसोदा खीजति ठाढी सीस डुलावति।।

१६२ (कान्हरौ)

मोपर नैन घुरावति आवति।
कहा धौं[4] गोपाल कियो है तेरौ ऊँची आँखि दिखावति।।
राखिऽब राखि अपनी चतुराई नाहिंन भेद जनावति।
कपट उराहनु[5] लै लै पैंठति गढि गढि छोलि बनावति।।
तेरौ मरमु मैं नीकें जान्यों इनि बातनि सचु पावति।
'परमानँद' स्वामी रस अटकी हरि सँग मनहिं खिलावति।

१६३ (गूजरी)

मेरौ माई ! कौन कौ दधि चोरै।
मेरे बहुत दई कौ दीनों खात लोग सब[6] औरै।।

---

१. तोतें (इ. घ.), २. स्याम (ग), ३. ग्वालिनि (ग. ज.)
४. जु (इ. घ), ५. उराहनौ. (इ. ग. ड. च. छ. ज.) उराहने (घ), ६. हैं (छ.)

कहा भयो भूलें भवन तै नेंक पियो जो[1] भोरै।
ता[2] ऊपर कहा गाजति बाजति मानौ चढि आई घोरै।।
माखन खायौ दही सब ढोर्‍यौ गही[3] मटुकिया फोरै।
'परमानंद' सयानौ ढोटा नेह नवल सौं जोरै•।।

१६४ (गूजरी)

ढोटा रंचकु माखन खायौ।
काहे कों हरुई होति री ग्वालिनि ! सब ब्रज गाजि हलायौ
जाकौ जितनौ तुम जानति हौ दूनौ मोंपें लेहु।
मेरौ कान्हर है इकलौतौ सबै असीस मिलि देहु।।
कमलनयन मेरी अँखियनि तारौ कुलदीपक ब्रज गेह।
'परमानंद कहति नँदरानी सुत प्रति अधिक सनेह।।

१६५ (सारंग)

गोपाल निपट हैं भोरे।
काहे कौं तू झूठि लगावति कब कंचुकि बंद तोरे।।
पाँच बरस कौ स्याम मनोहर अति ढोटा[4] सुकुमार।
खेलत फिरत गोप बालक सँग घूँघर बारे बार।।
इहि तेरी बातें सुनि ग्वालिनि मोहि आवति है लाज।
ठाढी खीझति[5] नंद जू की रानी तेरेई सब काज।।
उठि घर जाहि ढीठ मति ईतर बहुतें राखति कानि।
'परमानंददास' इह जानें तोहि परी इहि बानि।।

१६६ (सारंग)

ग्वालिनी घर की बाढी।
रातिं[6] दिवस उराहन के मिसमेरे हि आँगन ठाढी।।
कबहि गोपाल[7] कंचुकी फारी कबहि भए अस[8] जोगु।
अबहि राम सँग घुटरनु डोलत जानत हैं सब लोगु।।

---

१. दधि (ग. ज.),
२. इन बातनि पै कहा गर्जति है मानों (इ. छ.)
३. मही (इ) •सूरसागर पं. सं० ६३६ में भी पाठभेद के साथ।
४. छोटौ. (ग. ज.) ५. हँसति (इ. घ.)
६. रात द्यौस (ग.) नित उठि देति उराहनौ आवति मेरे० (छ.),
७. लाल (इ. घ), ८. ऐसै (क.),

सुनि री ! ग्वालिनि हौं नहिं बूझति तेरे मन कौ गूझ।
साँचु कहे कौ तोहि डरु नाहिंन झूठि कहे कौ बूझ।।
सुंदर स्याम[1] कमल–दल–लोचन रूप देखि रस बीधी।
'परमानंद' अटक नहिं मानत कनक चोर ज्यों[2] गीधी•।।

१६७ (सारंग)

•• मेरे कान्ह कों कछुअ न लागै गंगा कौ सौ पान्यों।
पाँच बरस कौ सूधो साँवरौ तैं क्यों निरवई जान्यों।।
नित[3] उठि आवतिं हाथ नचावतिं कौन सहै नक बान्यों।
चूरी फोरत बाँहि मरोरत माँट दही कौ भान्यों।।
ठाढी हँसति नंद जू की रानी गोपी[4] बचन न मान्यों।
'परमानँद' मुसकाइ चली जब निरखे[5] नंद–गृह रान्यों।।

१६८ देवगंधार

इतनक सौ गोपाल कहा करि जानें दधि की चोरी।
काहें कों आवति हाथ नचावत जीभ न करही थोरी।
कब छीके तै माखन खायौ कब दधि मटुकी फोरी।
अंगुरिनि कर कबहुँ नहिं चाखत घरही धरयौ बहुतेरौ री।।
इतनी बात सुनी जब ग्वालिनि बिहँसि चली मुखी मोरी।
'परमानँद' नँद नँदरानी के सुत सों जो कछु कहै सो थोरी+

१६९ (बिलावल)

स्यामसुंदर मोहि लागत प्यारौ।
मीठे बोल मधुर मुख बोलत समुझत नाहों कान्ह मेरौ वारौ
नित प्रति देंन उराहनौ आवति ग्वालिनी नंदगाम कौ पेंडोई न्यारौ।
दूधदही घर में बहुतेरौ खेलत खा त हँसत मेरौ जगतउज्यारौ
सुनति उराहने कों महतारी चोरी के लच्छन तुम टारौ।
'परमानंददास' कौ ठाकुर ब्रजजन–अँखियनि तारौ।।

---

१. कान्ह (ग. ज.), २. यों. (क)

• भावसाम्य–सूरसागर पद सं० १३६२ में भी 'ग्वालिनि है घर की बाढी" तुक परिवर्तन तथा साधारण पाठभेद से।

•• मेरौं गंगा लाल कौ सौ पान्यों (क) से भी प्रारम्भ है।

३. दिन प्रति देन उराहनौ आवति (ग. ज)।

४. ग्वारिनी । (ग. ज), ५. देखे महर घर रान्यों। (ग. ज.)

+ सूरसागर पद सं. ६११ में भी 'मेरौ गोपाल तनक सौ कहा करि जानै दधि की चोरी'।

जसोदा–बचन, प्रभु–प्रति–

२०० (धनाश्री)

ठाडी बूझति नैन बिसालै।
ताहिं जसोदा सिखवनि लागी त्रिभुवन–गुरु गोपालै।।
बलाइ लेउँ कत तुम जात पराए भवननि दूध दही की चोरी
ए सब ग्वालि कहति हैं मोपें[1] माँट दोहनी फोरी।।
माता ! जिनि पतिआइ तूँ इनिकी बातें जुवति सुभाव न जाई
जो हम पोंच करें काहू कौ तौ बाबा नंद–दुहाई।।
खेलत हुते[2] जहाँ रँग अपने झूठे दोसु लगावै।
'परमानंददास' इह[3] बूझे कौन बात जिय भावै।।

२०१ (आसावरी)

• काहे न कीजतु कह्यौ।
कत हरि जात परायें चोरी घर है दूधु दह्यौ।।
खेलत हुते जहाँ अपने रस जसुमति धाइ[4] गह्यौ।
अब कहाँ भाजि जाहुगे मोहन ! चुप करि कान्ह रह्यौ।।
तेरी चालि चली मथुरा में जो लै गई मह्यौ।
'परमानँद' स्वामी सुनि बालक तऊ न फिरत बह्यो।।

२०२ (सारंग)

सयाने कब लगि होइहौ लाल !
नाहिंन समुझि परति तुम्हारी गति मोहन मदनगोपाल
दिन प्रति[1] घरहि उराहनु आवै अंबुज नैन बिसाल।
नवलछ[2] गोधन नंदराइ कें अजहुँ न छाँडहु चाल।।
कहति जसोदा सुनु मेरे मोहन ! चूँबौं सुंदर गाल।
'परमानँद' प्रभु तजि न सकति छिनु बँधी प्रेम के जाल।।

२०३ (सारंग)

कहा चाहत हौ बाल गोपाल !
कहति जसोदा सोई लीजै नंद[3] गोप के लाल।।

---

१. मोसों. (ग. ज.) मोतें २. हुतौ (इ. घ. च) खेलौं जहाँ तहाँ रंग चपने ३. कौं बूझौ कौन.
• मोहन काहे, मोहन कीजतु नेंक। ऐसे भी प्रारम्भ हैं।
४. आनि, ५. देंन उराहनौ आवै ग्वालिनी नैन०।
६. नौ लख धेनु नंदबाबा कें, ७. बड़े। नंदभूप के

मधुमेवा पकवान मिठाई फल पुनि पक्व रसाल।
खाउ प्रीति करि जाउ रोग बलि चूँबौं सुंदर गाल।।
देखें जीवति कमलमुख तुम्हारौ प्रगट पूतना काल।
'परमानंददास' की जीवनि चंचल बाहु बिसाल।।

२०४ (सारंग)

मैं हरि ! तुम तैं कहा दुरायौ।
सब घर–बार समर्पनु कीनौं चरनकमल चितु लायौ।।
काहे कों तात ! जात काहू कें घर हि उराहनु आयौ।
ताकौंऽब कहा देउँ भाजन भरि जेतकु गोरसु[1] खायौ।।
कहति जसोदा औरनि आगें भवन काज बिसरायो।
'परमानंददास' कौ ठाकुर करत आपुनौं भायौं।।

२०५ (सारंग)

अरी ! मेरे सों कौन लरी ?
ताकौ[2] नाँउ लेहि किनि मोसौ वारि डारौं सगरी।।
चलिं री[3] ! मैया तोहि बताऊँ सबहिनि तें अगरी।
नीलांबर पहिरें तन[4] गोरी चंचल चपल खरी।।
हौं[5] बालक बे षोड बरस की निकसी आइ गरी।
मोहि[6] धकाइ आगैं ह्वै निकसी तोहू तें न डरी।।
बेगि ल्याउ मेरे मोंहौं आगें काढौं सब दुख री।
'परमानँद' प्यारी मुख निरखत बिसरि गई रिसरी।।

२०६ (सारंग)

तेरी लाल ! लेऊँगी बलैया।
काहे बिराने बास जात हो सिख सिखवति है मैया।।
जोवन अरु[7] गोरस की माती ग्वालि पुकारति आवै।
भई निसंक ढीठ ए गोपी वृथा दोषु तुम्हें लावै।।

---

१. माखन (इ. ग ज.) जितनौ गोरस, २. या गिरिधर के चरनकमल पर० (३०५ बं.)
३. चलि मईया हौं तोहि बताऊँ सब सखियनि० (३० ।५बं.)
४. नवनागरि० (च) नीलांबर पीतांबर ओढें० (३० ।५ बंध०)
५. कब ढोटा मैं गारी दीनीं कब मै तोसौं लरी (३० ।५ बंध)
६. झूठी साँची जाइ लगाबै सो तौ लागै बुरी। बंध ३० ।५ में सूरदास की छाप से है।
७. रूप. (च.)

जो कोई[1] आनि ग्रहै तुम बालक कंस पहँ कहा कहिये।
परम विपक्ष सोई है हमारौ समुझि न काहे रहिये।।
'परमानँद' स्वामी की महिमा[2] अलख लखी न[3] जाई।
जासु निमित्त जन्म हरि लीनौं ता पहँ[4] मात डराई[5]।।

२०७ (सारंग)

लालन ! छाँडि दै इहि बानि।
झूँठे ही दोष देति मेरे सुत कौं दही विडरानि।।
तेरी चितहूँ चलन कितहूँ बोलत करै नहीं काहू की कानि।
फेरि–फेरि भवन हमारे आवति निरखति सारंग–पानि।।
कौन गाँउ कौन ठाँउ कान्ह सौं तौ तोहि भई है पहिचानि
'परमानंद' स्वामी सुख दैहें मोसों यह मानि।।

२०८ (विलाबल)

औगुन छाँडि मानि कह्यो मेरौ।
चपल चोर घर–घर डोलत हौ कौन विवाह करैगौ तेरौ।।
सील गहौ तौ सब व्रज कैहें जायौ जसुमति पूत भलेरौ।
कीरतिसुता माँगनों करिहौं श्रीवृषभानु बसत हैं नेरौ।।
मधु मेवा पकवान मिठाई माँगि लेहु मोपें साँझ सबेरौ।
'परमानँद' धौरी धूमरि कौ अपने गृह है दूध घनेरौ।।

गोपिका–वचन, प्रभु प्रति–

२०६ (सारंग)

कमलनयन ! तुम बाढे घरके।
काहू की पीर न जानत मोहन[6] बात करत बोलत ईतरके।।
मांखन दूध चुरावत नीके सब रसु लेत गहत हो करकें।
ऊपर पांइ दिखावत आँखिनि पाँ लागौं अति ढीठ निढरके[7]
गोपी बकति झुकति दुख अपनों पै इह लरिका नाहीं डरके
'परमानंददास' सँग लीने करत फागु–सी तोरत फरके।।

२१० (बिलावल)

•जानी है क्यों छिपि है चोरी।
सूने भवन कछु[8] तुम दधि खाई अरु मटुकिया फोरी।।

---

१. कोउ (ग.) २. लीला (इ. ख.) ३. नहिं जावै (ग), ४. कहँ (इ. ग. घ. ङ. च.)
५. डरावै (स), ६. लालन (क) ७. निठुर के. (च. छ.)
• क्यों छिपि है ये चोरी से भी प्रारंभ है., ८. कछुक दधि खायो नई मटु०

कबहुक बांयें कबहुक दाहिनें कबहुक ऊँचे कबहुक नीचे।
चितवत कान्ह कमलदल-लोचन मोहि देखत ही अखियाँ मीचे।।
गोपिन के मन प्रीति निरंतर स्याम मनोहर देख्योई भावै।
बाल[1]–विनोद नंद–नंदन के इह लीला 'परमानँद' गावै।।

२११ (सारंग)

लाल प्यारे तुम ऊपर हौं वारी।
चले जाहु चपले ढोटा तुम छाँड़ि देहु करतें सारी।।
झुकत कौन पै साँट उठावत देत कौन कों गारी।
चंचल छैल छबीले मोहन हँसति सबै ब्रज–नारी।।
लै जै हों महरि जसोदा आगें[2] बोहोत सह्यो सुकुमारी।
'परमानंद' प्रभु ऐसे न खेलिए लाल गोवरधनधारी।।

२१२ (बिलावल)

अटपटी दीबौ छाँडहु लाल !
नंदराइ की कानि करति हों मोहन मदनगोपाल।।
पाँच बरस के स्याम मनोहर अबहि कहा इह बानि।
इनि बातनि तें निपट घटति है बड़े लोग[3] की कानि।।
हँसि गोपाल कह्यो तू साँची मोहि खेलिबौ भावै।
'परमानंद' धन्य सोई[4] गोपी हरि कौ भलौ मनावै।।

२१३ (बिलावल)

अटपटी बहुतें ही हो देत।
प्रातहि तें उठि मारग रोकत जानति नहिं किंहि हेत।।
लंपट लोल जसोदा–नंदन ! रहो[5] धरम की सेत।
देखि कनक कुच कठिन मनोहर, लाल कहा जिय लेत[6]।।
जो इह सुनि है सो कहा कहि है, चतुर नंद के पूत !
'परमानंद' प्रभु लखै न कोऊ चलिये तेही सूत।।

२१४ (बिलावल)

तुम पें ऐसी कौन करावत।
मेरी गाइनि कौ दूध दुही दुहि सबहि ग्वाल पिबावत।।

---

१. परमानंद स्वामी इह लीला ब्रह्मादिक नित गावें (ड. छ.)
२. पें (ग. ज.)। ३. गोप, बड़े लोगन की, (इ. घ.)
४. इहि, (इ), ५. गहो, ६. देत,

छिनु एक वृंदावन में जाते माखन घरहि[1] लुटाबत।
गोद बिछाइ करों बीनती दूरि हि गारि दिबावत।।
राव[2] करौं जसोदा के आगें लोचन मों[3] पें डुलावत।
'परमानंददास कौ ठाकुर बिरह मेरे[4] जिय भावत।।

२१५ (सारंग)

जमुना तुम्हारे[5] बाँट परी।
या ब्रज में नव[6] नंद महाधन तेउ न कहत हमरी।।
बाहिर हू कौ पानी रोक्यौ घर गो–रस नहिं बाचै।
उराहनौ देति तुम्हारी मईया हाथनि भौंहनि नाचै।।
चलहु जाइ दिखरैये जसोदा हैं रीती सब गगरी।
पान्यो भरन न देत मनोहर कौन टेव यह[7] पकरी।।
जब सब चलीं रिसाइ घोष कों मुरली अधर धरी।
सुनि कें फिरि आईं 'परमानंद' लोचन सजल करी।।

२१६ (बिलावल)

• हौं तकि लागि रही (री माई)।
जब गृह में ते दधि लै निकसे तब मैं बाँह गही।।
हँसि दीनौ मेरौ मुख चितयो मीठी सी बात कही[8]।
ठगि जु रही चेटकु सौ लाग्यो परि गई प्रीति सही।।
बैठहु नेंकु[9] जाउँ बलिहारी ल्याउँ और दही।
'परमानंद' सयानी ग्वालिनि सरबसु दै निबही+।।

२१७ (धनाश्री)

आजु गही है माखन चोरी।
बहुत दिवस तुम खाइ गए हो अब पकरे हो बांह मरोरी।।

---

१. दह्यौ, २. करों पुकार जसोदा० (छ) न्याइ धरों जसुदा।
३. कहा० ४ भरों, ये मेरे मन०। ५. तेरे (ङ छ.)
६. तौ (छ.) ७. इनि (ग. ङ छ. झ)
• माई हों तकि (ग. ज.) री माई हों तकि लागि रही, ऐसे भी प्रारंभ हैं। हों तकि लागि रहीं री माई (ख)
८. कही री। सही री। दही री। निवही री। (क.) ९. लाल (ई. घ.)
+ भावसाम्य सूरसागर प० सं० ८९९ में भी 'माई हौं तकि लागि रही ' तुक से पाठभेद के साथ।

कहुधौं कौन काम कौं आए सखा संग श्रीदामा जोरी।
बहुभांतिनि मनुहारि करतिहों बंक बिलोकनि ही मुख मोरी
सुनि ग्वालिनि तेरौ कछु न बिगार्‌यौ भवननि भीतर देखि टटोरी।
'परमानँद' ठगी इनि बातनि देखौ कहा कछु पढी ठगौरी।।

२१८

माखन चोर री ! मैं पायो।
जैयतु कहाँ जानि कैंसें पावत बहुत दिननहिं खायो।।
श्रीमुख तें उघरी द्वै दतियाँ तब हँसि कंठ लगायो।
'परमानँद' प्रभु प्रानजीवनधन वेद विमल जस गायो।।

२१६ (केदारौ)

काहें कों दुराव करत हो माधौ, मैं देखे तुम अपनी आँखि।
जौ न पत्याउ बचन नहिं मानों, और सखी एक बोलैं[1] साखि
जब हम मथन करन दधि लागीं, तब तुत चितयो कौरैउ झांखि।
पियो सब दूध घरोंची ढाह्यो[2], उपर चलेहो दोहनी ढांकि।।
करत सोंह जसोमतिके आगें, हम बलिरामु हुते दोउ साथ।
'परमानंद' ग्वालिनी झूठी, बे ही[3] काज नचावति हाथ।।

२२० (सारंग)

•गोपालहि माँखनु खान दै।
बाँह पकरि तहां[4] लै जैहों मोहि जसोमति पहियां जान दै।।
रहिरी[5] ! बावरी मौन ह्वै रहिये बदन दह्यो लपटान दै।
उनपें जाय चौगनों लैहोंगी नैननि तृषा बुझान दै।।
तू जु कहति है कछुव[6] न जानत सुनत मनोहर कान दै।
'परमानँद' प्रभु कबहुन छाँडों राखोंगी तनमन प्रान दै।।

प्रभु–वचन जसोदा प्रति–

२२१ (आसावरी)

मैया ! अबहि उराहनें आई।
काम नहीं बाकौं काज नहीं झूठे करत लराई।।

---

१. बोलौं। (ग. ज.), २. ढार्‌यो। (ग), ३. बिना।
• गोपालै माखन..... •से भी प्राप्त है, ४. उहां (क.), ५. सुनि री सखी मौन ह्वै रहिरी।।
६. ज्यों–ज्यों कहति हरि लरिका है। (मु.) सूरसागर सं. ८६२ में भी परिवर्तन के साथ।

हौं[1] जु हुतो सखा संगनि में बल करि बांह गहाई।
चांपि कपोल लपटिया लाई तहाँ श्रीदामउ गहाई।।
गदगद कंठ नीर नैननि में जसुमति उरसौं लाई।
'परमानंद' बाल–लीला[2] कौं सुक मुनि परत न गाई।।

२२२ (ईमन)

• अबहिं उराहनो दै गई अरी ! बहुरयों फिर आई।
मईया याकी टेव लरन की तू सूधी करि पाई।।
या ब्रज में लरिका बहुतेरे कछु हों ही लरिकाई।
मूंड चढाऐं चढि जाति अहीरी सकुचि बेचि सी खाई।।
सुनि सुत की सब बात जसोदा मन ही मन मुसकाई।
'परमानँद' प्रभु द्वारि ग्वालिनी कान्ह ठगौरी लाई।।

5. मिषान्तर–दर्शन

२२३ (सारंग)

+आई हों इनहीं पाँइनु दौरी।
घर के काज सबै बिसराए नंदनँदन रस–बौरी।।
गई री गिराइ करहु[3] तें कंकन द्वारें जाइ सँभारयौ।
ढीली कील निसरि[4] गई क्यों ही जसोमति द्वारें डारयौ।।
ठाढी[5] हँसति नंदजू की रानी ह्याँ तै कछुअ न जाई।
'परमानँद' अस्तुति करै गोपी इह घर इहै बडाई।।

२२४ (सारंग)

ग्वालिनि ! हँसति–हँसति घरु आई।
कहाँ गयौ महरि तिहारौ री ढोटा मेरी मोतिनि लर पाई।।
वे[6] उहिघाट पियावत गईंयां हौं औझिल ह्वै न्हाई।
कंचुकि चीर लपेटि[7] लियो कर अरबंराई उठि धाई।।

---

१. *खेलत हुतो। (ग. ज.), २. रस। (ग. ज.) हरि।*
• *मईया अबहि उराहने आई' से भी प्राप्त है।*
+ *दौरी, अब दौरी री ग्वालिनि इनहीं पाइनु दौरी (वं. ३६ /११) से भी प्राप्त है।*
३. *हाथ तें कंगना घरही जाइ० (वं. ३६/११), ४ . निकरि (ग.घ. छ.)*
५. *हम नहिं गए तिहारें चोरी अब कछु देहु बधाई।*
जसुमति विद्यमान दोउ झगरत परमानंद बलि जाई।। (बं. ३६/११),
६. *आयो री घाट अचावन गईया।, ७. पलेटि (क)।*

नाहिन[४] गयो तिहारें री चोरी दै कछु मोहि बधाई।
जसुमति विद्यमान[५] दोउ झगरत 'परमानंद' बलि जाई।।

२२५ (गौरी)

नेंकु पठै गिरिधर[६] कों मैया।
रहि भिलसाइ पत्याइ न औरें[७] इनके हाथ लगी मेरी गैया।।
ग्वालबाल सब सखा सयाने पचि हारे बलदाऊ भैया।
हूंकि–हूंकि इनही तन चितवति चाटति नाहिन अपनी[८] लैया
सुनि पिया[९] बचन हाथ कौरै रह्यौ दुहुँ दिसि चितवत कुंवर कन्हैया।
'परमानंद' जसोदा मुसिकानी संग[१०] दीने गोकुलके रैया।।

२२६ (गौरी)

जसोदा मांखन देहु उधारौ।
परोस[१] बास हमारौ तेरौ चल्यौ जाइ[२] व्यौहारौ।।
कबहुक लैन मथनियाँ आवति बहुतें मिस बुधि चारौ।
देखें[३] जियें स्यामसुंदर मुख मोहन नंदकुमारौ[४]।।
प्रीति[५] जु एक लाल गिरिधर सौं बिसर्‌यो भवन विचार्‌यौ
'परमानंद' धन्य गोपीजन कान्ह कंठ मनि हारौ।।

२२७ (गौरी)

ग्वालिनी दूरें बेच महौ।
तेरी टेर सुनत मन मोहन हाथहि[६] कौर रह्यौ।।
सुनत गोपाल बाहिर उठि आए जसुमति धाइ[७] गह्यौ।+
'परमानंददास'[८] कौ ठाकुर अब ही आवन कह्यौ।।+

---

१. हम कब गए तिहारें चोरी अब कछु (वं. १३०।१)
२. निकट झगरत दोऊ जन 'परमा०। ३. गिरिधर जु कौं (छ.),
४. काहू (छ.), ५. अपने (ग. ज. ङ छ.) अपनो (इ.),
६. प्रिया (च) पिय, ७. संग दिये (इ.ग.घ.ज.)
८. पास परोस हमारो ९. जात (ग.)
१०. देखों जाइ स्याम सन्मुख मुख।, ११. दुलारौ (ग)
१२. प्रीती एक स्यामसुंदर सों (इ.) १३. हाथ कौ (इ. घ.)
१४. हाथ (इ. घ.), १५. नंद नंदन अब० (बं. २८)
+ इन दोनों चरणों के स्थान पर ज्यों ज्यों उर अंचर सों ढाँपति।

6. खेल

सखीन संग–

२२८ (सारंग)

राधे इह नीकौ है खेलु।
अपने माट कौ दह्यौ जमायो मेरी अंजुरिया मेलु।।
इहै बात नीकी जो लागै एक गाँउ कौ बासु।
जिनि दुराइ[1] मेरे सनमुख है लोगनि के उपहासु।।
इह गोबिंद कह्यौ राधा प्रति जो माँगों सो देहु।
जो इह गोरसु मोहि समर्पे अति बहुते करि लेहुँ।।
जो आज्ञा सो माथे ऊपर, सदा तुम्हारी दासी।
'परमानंद' ग्वालिनी मोही बँधी प्रेम की पासी।।

२२९ (सारंग)

को खेलै ढोटा रहो नहीं।
नंदराय के कुँवर अचगरे अब मैं बहुत सही।।
कबहुँ गहत लट कबहुँ गहत पट, कबहुक तोरत टीक।
कबहुक हँसि मुसिकाई धरत भुज, कबहुक मेलत पीक।।
कहि हों धाइ जसोदा आगे जे जे कर्म तुम्हारे।
बरजौ काहे न, पूत आपुनो इह देखो हाल हमारे।।
जब गोपाल चले घर अपने, धाइ चरन लपटानी।
'परमानँद' प्रभु बात हमारी तुम जु साँचु करि मानी।।

२३० (सारंग)

तुम संग खेलत लर गई टूटि।
रहु ढोटा तुम खरेइ अचगरे मेरो हारु लियो कर सूटि।।
जो रिसाइ कहति हों तुम सों बचन रहत हो घूंटि।
अबही नई पहेरि आई ही चुरिया गई सब फूटि।।
इह विनोद नीकौ करि पायौ मानों पसरी है लूटि।
'परमानँद' प्रभु जौ बीनोंगी तो[1] ऽब करहुगे कूटि।।

---

१. डराय, (ग, ज)
२. तबै। (क.ङ छ.)

२३१ (सारंग)

तुम मेरी मोतिनि लर क्यों तोरी।
रहे ढोटा, तोसों नंदमहर कहा करन कही है जोरी।
मैं जान्यों मेरी गेंद चुराई लै कंचुकि बिच होरी।।
'परमानँद' मुसिकाई चली तब पूरन चंद चकोरी।।

२३२ (गौरी)

रहे गहि भामिनी की बांह[1]।
मदनगोपाल चतुर चिंतामनि जानत हो सब[2] मांह।।
ठाडे बात कहत राधा सों तहाँ जसोदा आई।
झूठे मिसु करि रोबन लागे इन मेरी गेंद चुराई।।
ए कौन टेव तेरे ढोटा की बरजति काहे न माई।
या गोकुल में स्याम मनोहर उलटी चाल चलाई।।
सुनि मृदु वचन स्याम–स्यामा के महरि चली मुसकाई।
'परमानंद' अटपटी हरि की सबै बात मन[3] भाई।।

सखान–संग–

२३३ (सारंग)

खेलत में को काकौ गुसईंयां।
श्रीदामा जीत्यौ तुम हारे बरवटहीं कहा करत बडईयां।।
जातिपाँति कुल बड़े न[4] हमतें अरु हम बसत[5] तुम्हारी छहियां
याही तें ऽब देत अधिकायो हम तें बहुत तुम्हारे गईंयां।।
रूठ करै तासों को खेलै रहहु सखा सब ठांके ठईंया।
'परमानँद' प्रभु खेल्यौ चाहौ तो पोत देहु कर नंद दुहईयां+

२३४ (सारंग)

गोपाल माई खेलत हैं चकडोरि।
लरिका सत पचास सँग लीने निपट साँकरी खोरि।।
चढि धरहरा झरोखा चितयो सखी लियौ मन चोरि।
उहँ[6] ई भयें बलईया लीनी अपनो अंचर छोरि।।

---

१. बांहि। (क. च.) २. जानत हैं जिय मांहि। (च) सब मांहि। (क.)
३. बनि आई। (ङ घ.), ४. नहिं हम तें। (क) ५. रहत। (इ.),
+ सूरसागर पद सं० ८६३ में भी मिलता है, ६. उहँई रहें। (इ.)

चार्‌यों नैन मिले जब सनमुख रसिक हँसी मुख मोरि।
'परमानंद[1] दास' रति नागर[2] चितै लई रति जोरि।।

२३५ (सारंग)

गोपाल माई खेलत हैं चौगान।
ब्रजकुमार बालक संग लीने वृन्दावन मैदान।।
चंचल बाजि नचावत आवत होड लगावत पान।
सव्य इतर[3] हस्त गोइ चलावत करत[4] बबा की आन।।
करत न संक निसंक महाबल हर[5] नृपति–कुल–मान।
'परमानंददास' कौ ठाकुर गुन[6] आनंद–निधान।।

२३६ (सारंग)

गोपाल फिरावत हैं बंगी।
भीतर भवन भरे सब बालक नानाबिधि बहुरंगी।।
सहज सुभाइ डोरि खेंचतही लेत उठाइ करहि कर संगी।
कबहुक डारि देत हैं भों में कबहुक मुखहि बजावत जंगी।।
कबहुक कर लै स्रवन सुनावत नानाभांतिनि अधिक सुंरगी।।
'परमानँद' स्वामी मनमोहन खेलसर्‌यो अरुचले सब संगी।।

२३७ (अड़ानौ)

कान्ह अटा चढि चंग उडावत मैं उततें इत आँगन हेरौ री।
नैन भए विबचारी नराइन भाजत लाज किधौं भट भेरौ री।।
मोहितो इह जक लगी रहति है क्योंउँ क्योंउँ फिरत न फेरौ री।
'परमानँद' प्रभु यहै अचंभौ ऐंचत डोरी किधौं मन मेरौ री।।

२३८ (सारंग)

संग लरिकवन[7] कर जोटी।
खेलत फिरत गोपाल घोख में
धावत सिसु–अंग छोटी।।

---

१. *स्वामी। (इ.)*
२. *नाइक। (इ. घ.)*
३. *हाथ तें गेंद चलावत। बाम हाथ तें।*
४. *हरत नृपति कुल मान। (ङ छ.)*
५. *करत बवा की आन। (ङ छ.)*
६. *आनंद रूप निधान। (च.)*
७. *लरिकन. (ग. ङ च.)*

खोरि–खोरि प्रति, भवन–भवन प्रति,
सैनै[1] दै दै बतावैं[2]।
जाके घर गोरस बहुतेरौ
अंगुरि[3]नि कैं कैं दिखावै।।
इह कुमार–लीला हरि केरी[4]
गोपीजन–मन भावै।
चोरी करत, हरत दधि मांखन
कछु 'परमानंद' पावै।

२३६ (गौरी)

इह जिय बात परस्पर भावै।
खेलत लाल सखा संग लीने खटकोरी मिस कछुक कहावै।।
हट करि हरिजू के हरत खिलौना
गेंदनि उरजनि बीच छुपावै।
रह्यो न परत नंद–नंदन बिनु
याही मिस करि पर मुसक्यावै।।
चोली चीर आप पे फारत
मुदित जसोमति ताहि दिखावै।
'परमानँद' ग्वालिनि मुसिक्याई
चलो ललन ! नंद–नारि बुलावै।।

२४० (सारंग)

लाल आजु खेलत सुरँग खिलौना।
काम सब्द उघटत है पपैया बंगी मधुरे मिलौना।।
प्रेम घुमडि लेत हैं फिरकी झुंझना मानौ हुलसौना।
चट्टा बट्टा चोंकि परत हैं, चकई भोंरा इतनौ करौना।।
झूमर झुकि बाट देखत हथ बंगी मन तो फिरौना।
'परमानंद' ध्यान भक्तन कौ सब ब्रजकौ जु तरौना।।

---

१. सैननि (इ. घ.) दै दै सैन बतावै
२. बुलावै (इ. घ.)
३. अंगुरिन कै कै चखावै (इ. घ.) अंखियन माहि दिखावै।
४. जूं की (इ. घ.) मोहन की।

२४१ (धनाश्री)

मोहन मानु मनायौ मेरौ।
हों बलिहारी कमलनयन की नैकु चितै मुख फेरौ।।
माखन खाहु लेहु कर मुरली ग्वालनु बालनु टेरौ।
न्यारि ये करि करि जोटि आपुनी न्यारि ये गांइ बहों[1] रो।।
कारौ कहि कहि मोहि खिजावत बरजत अधिक अनेरौ।
इंद्र नीलमनि सो तन सुंदर, कहा कहे[2] बल चेरौ।।
मेरौ सुत सिरताज सबनि में सब ते कान्ह बड़ेरौ।
'परमानंद' द्वारे भयौ गावै बिसद बिमल जसु तेरौ•।।

२४२ (कानरौ)

रहु[1] बलि माधौ[2] झगरौ न कीजै।
चुंबनु दै दै कंठ लगावति
मो पहि[3] औरु खिलबनों[4] लीजै।।
कनिया लियें जसोदा ठाढी
अँगुरिनु[5] कै कै चंद दिखावै।
कमल नयन खेलन कह[6] मांगै
वह अकासु इहां क्यों आवै।।
जाके उदर विस्व सचराचर,
सो हरि बालक दसा जतावै[7]।
'परमानंद' स्वामी मन मोहनु
जसोमति 'कान्ह–कान्ह' करि[8] गावै।।

२४३ (धनाश्री)

देखिरी रोहिनी मईया ! ऐसे हैं बल[9] भईया।
जमना के तीर मोकों जु जु आ बुलायौ।।
सुबल श्रीदामा साथ हँसि–हँसि मिलवत[10] हाथ।
आप डरप्यो अरु हौं[11] ही डरपायौ।।

---

१. गायन घेरौ. (ग. घ) २. जानै, (इ. घ.)
• सूरसागर सं. ८३४ में पाठान्तर के साथ छपा है।
३. रहो (इ. ग. घ. ङ च) ४. माधव (क.) ५. मो पें. (इ. ग. घ. च.), ६. खिलोनो।,
७. अंगुरिनि (क.) करि–करि, ८. कों, ९. जनावै (क.), १०. कहि. (ग.),
११. बलदाऊ भैया (ङ), १२. मिलवै (ग.)। सब बूझत बात
१३. मोहिं (ग)। आपु डरपे और मोहू डरपायौ।

जहाँ–जहाँ बोलें मोर, चितवै तिनकी ओर।
भाजो रे भाजो रे ! भईया ओ[1] है देखि आयौ।।
आपु चढे तरु[2] मोहि छाँडि धरु[3]।
धर–धर छाती किये[4] घरहुँ कौ धायौ।।
लपकि[5] लियौ उठाइ, उरसों रही लगाई।
मेरी री ! मेरो कहि हियो भरि आयौ।।
'परमानंद' बोल[6] द्विज वेद मंत्र पढि–पढि।
बछिया की पूछसों हाथ दिवायौ।।

7. यमुना–तीर–मिलन

२४४ (सारंग)

घाट पर ठाढे[7] मदन गोपाल।
कौन जुगति करि भरौं री ! जमुनाजल परे[8] हैं हमारे ख्याल
द्यौंस बढ्यो घर सास रिसै है चलि न सकति एक चाल
'परमानंद' स्वामी चित चोर्‍यौ बेन बजाइ रसाल।।

२४५ (सारंग)

नेंकु गोपाल [9]टेकहु मेरी बहियां।
औघट घाट चढ्यौ नहिं जाई रपटति हों कालिंदी महियां।।
सुंदरस्याम कमलदल लोचन देखि सरूप[10] ग्वालि अरुझानी
उपजी प्रीति काम अंतरगति तब नागर[11] नागरि पहिचानी।।
हँसि ब्रजनाथ गह्यौ कर पल्लव जैसें[12] गगरी गिरन न पावै।
'परमानँद' ग्वालिनी[13] सयानी कमलनयन तन परस्यौ भावै।।

---

१. ओइहे (क.) । वो देखो आयो (नं. ४५/३)
२. तरुवर, (छ.) आप चढिगए तरु। मोहि छाँडौ बाही धर (नं. ४५/३)
३. छाँडे धर पर, (ङ) ४. करै, (ग.) करत दोर्‍यो घर आयो।
५. बोले (क.) द्विज बुलाइ रानीजू मंत्र पढाइ।
६. लिए री उछंगलाइ राखेरी कंठ लगाइ नं. ४५/३)
७. ठाढो (नं. १२/३), ८. पर्‍यो है (नं. १३।३)
९. लाल। (क), १०. स्वरूप। (इ. क. घ. ङ ज.)
११. नागरि नागर पतियानी। (इ.), १२. भरी गगरिया गिरन न (इ. घ.) जैसे गागरि,
१३. ग्वालि सयानी (ख.)

२४६ (सारंग)

जमुनां नदिया के तट[१]।
पान्यो भरति अकेली औघट गहिजु स्याम मेरी लट।।
सिर धरि गगरी मारग डगरी पहरि लिए[२] पीरे पट।
देखत देह अधिक छबि लागी[३] कछुक बने[४] कंचुकी–कट।।
फूल जु एक ग्वालिनिके जिय जनु रन जीते कोऊ भट।
'परमानंद' गोपाल आलिंगी सफल किए कंचन घट।।

२४७ (सारंग)

ललन ! उठाइ देहु मेरी गगरी।
बलि–बलि जाउँ छबीले ढोटा[५] ढीट्यो[६] देत अचगरी।।
जमुना–तीर अकेली ठाडी दूसरौ नाहिन कोऊ।
जाकों [७]ऽब कहों स्यामघन सुंदर संग ऽब नाहिन सोऊ।।
नंद–कुमार कहे नेक ठाढी है कछुक बात करि[८] लीजै।
'परमानंद' प्रभु संग[९] मिलि चलि बातनि कें रस जीजै।।

२४८ (सारंग)

ठाढोई[१०] देखों जमुना[११] घाट।
कहारी[१२] ! भयौ घर गो रस बाढ्यौ अरु गांइनि के ठाट।।
जाति पांति कुल कौन[१३] बडे हो चले जाउ किनि बाट।
'परमानंद' प्रभु रूप ठगौरी लगत न पलक कपाट।।

२४९ (सारंग)

जमुना–जल घट भरि चली चंद्राबलि नारि।
मारग में खेलत मिले घनस्याम मुरारि।।
नैननि सों नैना जुरे मनु रह्यौ लुभाई।
मोहन मूरति जिय बसी पगु धर्‌यौ न जाई।।
तब की प्रीति अधिक[१४] भई इह पहिली भेंट।
'परमानंद' ऐसे मिले[१५] जैसें गुरु[१६] चेंट।।

---

१. टट (ख.), २. लियौ पीरौ (मु.), ३. बाढी (इ. घ.), ४. बने जो कनक घट। (मु.)
५. मोहन। (च.), ६. ढोप्यो (इ.) ठाडे देत।, ७. जासों (इ. ग. घ. ङ. च.)
८. कहि (इ. घ.), ९ संग में लै चलि बातनि के रंग भीजें। (मु.) १०. ठाढेई (घ) ठाढे ही
११. श्रीजमुना (क), १२. कहा भयो (क), १३. कुल के न (ग. ज.),
१४. प्रगट भई यह पहिली (मु.), १५. मिली (घ) १६. गुरु (क)

२५० (सारंग)

नंद–ढिठौना पर हौं वारी।
काहू की कान्ह मरोरत बहियां काहू की फारत सारी।।
जमुना कौ जल भरन जात ही बीच मिले गिरि–धारी।
मटुकी फोरत नौसरि तोरत बहुरि देत है गारी।।
बहुरि स्याम मोहिं बूझन लागे कौन गोप की नारी ?
'परमानंद' प्रभु हौं बस कीन्ही नैन–बान भरि मारी।।

२५१ (कान्हरौ)

तू राधे ! नट[१] नवल नागरी।
गज–गति गवन करति मधु व्यासनि[२]
चली जमुना – जल भरन गागरी।।
उर पर हार सिंगार बन्यो है कटि मेखला चरन झांझरी।
अंबु लैन कहँ चली अकेली संग लाडिलौ करत लागरी।।
देखि बदन मोहे गन गंधर्व गयौ निसापति गगन भागरी !
'परमानंद' प्रभु सब सुखदाइक लालनजू के कंठ लागरी।।

२५२ (गौरी)

•ब्रज की बीथी निपट साँकरी।
इह भली रीति गाँउ गोकुल की
जितही चलिए तितही बांकरी।।
जहिं जहिं बाट घाट बन उपबन
तहिं तहिं गिरिधर रहत ताकरी।
तहाँ ब्रज–बधू निकसि न पावत
इत उत डोलत रारत[४] कांकरी।।
छिरकत[५] पीक, पट मुख दिए मुसकत
छाजें[६] बैठि झरोखें झाँकरी।
'परमानंद' डगमगत सीस घट
कैसे कें जैये बदन ढांक री।।

---

१. नव, २. वासनि (ग. च. ज.)
• ख' प्रति में नहीं है। (क) में मध्य में लिखा गया है।
३. जित चलो सु तितहि (मु.)
४. परत (मु.), ५. निरखि पीत पट मुख (मु.), ६. झाँक झरोखनि बैठ झाँकरी (मु.)

२५३ (सारंग)

काँकरी कान्ह मोहि मारै।
टेढी चितबनि मो तन चितवत लोट पोट करि डारै।।
हौं गुरुजन की लाज सखीरी ! निकसी निपट सवारै।
बरज्यो न मानै तऊ नंद–सुत जो कोऊ कहि पचिहारै।।
कहा करों कहां जाऊं पुकारों को इह न्याउ बिचारै।
'परमानंद' प्रीतमु की बातें एती कौन सँम्हारै।।

8. असुर–मर्दन

२५४ (सारंग)

मोहन री ! जसोदा या बालक कौ करि री ! जतुन।।
एक चरित्र आजु मैं देख्यौ पूतना–पतनु।
तृनावर्त्त लै गयौ अकासै ताहू कौ हतनु।।
जे जे दुष्ट उपद्रो ठानें[1] ताही कौ घतनु।
'परमानंददास' की जीवनि स्याम है सुतनु।।

२५५ (सारंग)

+तेरे लालन सों कहा कहों ?
जे जे करम नयन भरि देखति हों अचामि• रहों।।
तोर्‌यो सकट पूतना मारी तृनावर्त्त बध कीनौं।
सात दिवस[2] तेरे[3] बालक एक[4] हाथ गिरि लीनौं।।
जब तें दाम[5] उलूखल बांधे तरवर तोरि गिराए[6]।
कालिंदी जल निर्बिसु कीनौं गो–सुत मृतक जिवाए[7]।।
है कोउ इह बडो देवता के ब्रह्मा के सिंभु।
'परमानंददास' कौ ठाकुर तिहुँ लोक कौ खंभु।।

२५६ (सारंग)

•• खेलत चले बजावत तारी।
खात ताल फल करत कुलाहल देत परस्पर गारी।।

---

१. ढावें (ग)
+ रानी जु तेरे लालन सों।
• अचंभे, २. बरस (ङ छ), ३. तेरोई ढोटा (ङ छ.)
४. एकहि हाथ (क) ५. हाथ ६. गिरायौ ७. जिवायौ।
•• खेलन चले ऐसा भी प्रारम्भ है।..... ।

बहुत दिवस[1] बन राख्यो[2] रासिभ अब कैं मारन पायौ।
जै जै राम–कृष्ण नंद सुत सब ग्वालनु जसु गायो।।
अब गोधन निर्भय[3] है चरिहै तुअ प्रसाद गोबिंदा।
इह सब कथा चलैगी आगे बलि बलि 'परमानंदा'।।

२५७ (सारंग)

तेरौ गोपाल रन[4] –सूरौ।
जहि[5] जहि फिरत पचारि सांवरौ तहीं परत है पूरौ।।
वृषभ रूप इक दानव आयो सो छिनु में लै मार्‌यो।
दोऊ हाथ विषान गाढ धरि धरनी माँझ पछार्‌यो।।
कहत ग्वाल जसोदा के आगे भलो पूतु तैं जायौ।।
है कोऊ इह बडौ देवता लहनें गोकुल आयौ।
चरन कमल–रज बंदत रहिये निसदिन सेवा कीजै।।
बारंबार दास 'परमानँद' हरि की बलईया लीजै।।

२५८ (सारंग)

अब डर कौन कौ रे भईया।
गल गरजौ गोकुल में बैठे हमरौ[6] मीत कन्हैया।।
कहत ग्वाल सब जसोमति आगे है त्रिभुवन कौ रईया।
तोर्‌यो सकट पूतना मारी को कहि सकै गँवैया।।
नाचहु गाबहु करहु कुलाहल चारहु धौरी गँईया।
'परमानंददास' कौ ठाकुर सब प्रकार सुख दईया।।

२५९ (सारंग)

कोलाहल जमुना के तीर।
कालीनाग कहत हैं नाथ्यो संकरषन के बीर।।
लागी पुकार सकल ब्रजवासी नंद जसोमति संग।
उछटत परत सीस कच छूटत रुदै बिरह के दुँद।।
संकट जाइ भयो इक ठौरे हा हा सबद उचार।
'परमानंददास' कौ ठाकुर जीत्यो नंदकुमार।।

---

१. दिनन (ग. ज.), २. राख्यो इहि रासभ. (क)
३. निरभै (इ. ग. ङ ज.), ४. महारन सूरो। (बंध ३७।२)
५. पांच बरस को सांवरो जेइ तेइ परत है पूरो. (च)
६. अपनौ (ग. ज.)

२६० (कल्यान)

अद्‌भुत गति तेरी बारे कन्हैया।
तुम जु तनक गोवर्द्धन एतौ एकहि हाथ लियो कैसे भैया!
जमुना पैठि गह्यौ पुनि काली भूलि रहे सब लोग दिखैया।
केसी तृनावर्त्त तैं मार्‌यौ अरु पूतना हती जदुरैया।।
बच्छ ग्वाल अघासुर लीनों तुमहिं भये ता ठौर नन्हैया।
'परमानंद' प्रभु बहुतें ऐसी अपनौ मरमु कहौ नंद दुहैया।।

२६१ (सारंग)

हमरें गोकुल आनँद चानु[1]।
दुहियत गांइ दूध परिपूरन कीनौ कछू पसानु।।
कहै ग्वाल सब आनंद माते आंनि बन्यौ है दानु।
कहा करैगो कंस हमारौ जो मथुरा कौ रानु।।
केसी आदि सकल रिपु मारे मेट्यो तृन कौ घानु।
आनंद भयौ दास 'परमानंद' गोपी मंगल गानु।।

२६२ (सारंग)

लाल विनोद हैं[2] एक ठान्यौ।
आपनु बैठि मध्य ग्वालनि में यहै भेद करि बान्यौ।।
जो जिय भायौ सो तिहिं दियौ सबही के मन मान्यौ।
संकरषन कों[3] साथ लेहु जू आगें चलै कन्हायौ,।
चलहु भैया हो जइये तालबन पी[4] जमुना कौ पान्यौ।
कान्ह भैया तै भले उबारे रासभ कौ बल भान्यो।।
हँसिके गँवन कियो गोकुल कों सब गोधूलिक जान्यौ।
'परमानंददास' कौ ठाकुर सेत छत्र सिर तान्यौ।।

9. गो–चारण

२६३ (सारंग)

मैया गाँइ चरावन जैहौं।
तू कहे नंद महर बाबा सों बडौ भयो न डरै हौं।।
श्रीदामा आदि सखा सब अपने अरु दाऊ संग लैहों।
दह्यो भात कावरि भरि लैहों भूखें लागै खैहौं।।

---

१. चानु । पसाउ. दाउ. राउ. ? घाउ. गाउ. २. एक है ठान्यो है. इक।
३. संग लेहु जू. ४. पीजै जमुना पान्यो।

बंसीवट की सीतल छाहियां खेलत अति सुख पैहों।
'परमानंद' तब साथ खेलहु जौ जमुना–जल नैहों[1]।।

२६४ (सारंग)

गांइ चरावन कौ दिनु आयौ।
फूली फिरति जसोदा अँग[2] अँग लालन उबटि न्हवायौ।।
भूषन बसन विविध पहिराए कज्जर तिलकु बनायौ।
विप्र बुलाइ वेद–धुनि कीनी मोतनि चौक पुरायौ।।
देति[3] असीस सकल–ब्रज सुंदरि हरखित मंगल गायौ।
लटकत चल्यौ भाँवतौ बन कौं 'परमानँद' जिय भायौ।।

२६५ (सारंग)

प्रथम गो–चारन चले कन्हाई।
कुंडल स्रवन कपोल बिराजित सुंदरता चलि आई।।
माथें तिलकु पीताम्बर की छबि उर माला पहिराई।
गृह गृह ते दधि छाक लेत हैं संग सखा सुखदाई।।
गो–धन हाँकि आगें सब कीने पाछें मुरलि बजाई।
'परमानँद' प्रभु मदनमोहन ब्रजबासिनि सुरति कराई।।

२६६ (सारंग)

कवन बन जैबौ भैया ! आजु।
कहत गोविंद सुनों रे गोपौ करहु गवन कौ साजु।।
ऐसौ कौन चतुर नँद–नंदन ! जो जाने रस–रीति।
तहाँ चलहु जहां हरखि खेलिये अरु उपजै मन–प्रीति।।
पूरे बेनु विखान महुवरि छीके कंध चढाइ।
रोटी भात दह्यौ भरि भाजन अरु आगे दै गाँइ।।
ठौर–ठौर कूक देत हैं प्रहसित आए जमना–तीर।
'परमानँद प्रभु आनँद रूपी राम–कृष्ण दोउ बीर।।

२६७ (सारंग)

चले ब्रज तें गो चारन गोप ।
प्रात समै सर कमल–खंड तैं जनु हंसनि के ओप।।

---

१. *जब जमुना जल न्हैहों।*
२. *आंगन*
३. *सब जुवतिनि परस्पर मिलिकें हरखित० (नं. ६२।६)*

स्याम पीत पट राम नील, नट जनु काछे सिसु–पुंज।
महुवरि बेनु बिखान बाँसुरी मनु साजें अलि–गुँज।।
तिन मँह नंद–नंदन की सोभा ज्यों उडगन में चंद।
'परमानंद' जसोदा के घर प्रगटे आनँद–कंद।।

२६८ (गौरी)

काँध लकुट धरि नंद चले दोउ बालक दीने आगे।
राम–कृष्ण सों प्रीति निरंतन सुख पायौ बिनु मागे।।
पूरब संचित सुकृत रासि–फल अपनी अँखिनि देख्यो।
मो–समान अब कोऊ नांहिन जनम सुफल करि लेख्यो।।
खेलत, हँसत, पंथ–मँह धावत लरिकाई की बानि।
'परमानंद' भगत बस माधौ चारि पदारथ–दानि।।

२६९ (सारंग)

गांविंद[1] चलत देखियत नींके।
मध्य गोपाल मंडली मोहन काँधनि धरि लिये छीके ।।
बछरा–वृंद घेरि आगै दै जन–जन सृंग बजाए।
मानहु कमल सरोबर तजि कें मधुप उनींदे आए।।
वृंदाबन–प्रवेश अघ मर्दन बालक–लीला भावै।
प्रेम[४] समुद्र लोक त्रै पावन जन 'परमानँद गावै•।।

२७० (सारंग)

आनंदी चरावत गईयां।
प्रेम सुहाई बातें कहि कहि मेरौ मन हर्‌यौ कुंवर कन्हैया।।
चेटकु घालि सबै ब्रज राख्यौ चलहुरे संकरषन के भईया
कछु न सुहाइ तलाबेलि लागी चित चलि गयौ चपल की ठईयाँ।।
मुरली–नाद सुन्यौ जब काननि विसरि गयौ घर हू कौ सईयां।
'परमानंददास' रति बाढी सब तजि जाइ परी है पईयां।।

---

१. गोपाल माई चलत (बं. ६।४)

• सूरसागर सं० १०५० पर भी अन्तिम पदों में पार्थक्य के साथ है पर 'ख' प्रति में होने से परमानंददास कृत ही हैं।

२७१ (मालश्री)

गाँइ चराबनि कौ विसनु।
राधामुख लाइ राख्यो नैननि कौ रसनु।।
कबहुँक घर कबहुँक बन खेलनि कौ जसनु।
'परमानंद' प्रभुहि भावै तेरें ए मुख हँसनु।

२७२ (सारंग)

गोपाल माई कानन चले सकारे।
छीके काँध बाँधि दधि–ओदन गोधन के रखबारे।।
प्रातकाल गो–रंभन सुनि करि गोपनि पूरे शृंग।
विकसे कमल–पत्र संपुट ते निकसि चले जनु भृंग।।
बेनु बेति लीला कर सेली मोर–पंख सिर सोहै
नटबर भेखु धर्‌यौ[1] ब्रज नाइक देखत सुर नर मोहै।।
खग मृग तरु सबहिन सुख मान्यो गोप-बधू बिलखानी।
बिछुरत कृष्ण–प्रेम की बेदन 'जन परमानँद' जानी।।

२७३ (गौरी)

मैया कैसी मैं गांइ चराई।
बूझि देखि बलभद्र ददा सों जो[2] तू मो न पत्याई।।
बिडरि चलीं सघन बन महियां हेरी दै ठहराई।
ग्वालनि के लरिका पचिहारे के सब मेरी दाई।।
भलौ भलौ करि[3] मोहि सराहत फूले अंग न माई।
'परमानँद' प्रभु बीर[4] बचन सुनि जसुमति देत बधाई।।

२७४ (सारंग)

ब्रज ते बनकों चलत कन्हैया।
सखा मंडली–मध्य बिराजित प्रथम चरावन गैया।।
नंद सुनंद गोप गोपीजन जसुमति रोहिनी मईया।
बड़े ग्वाल कौं सुत कों सौंपति प्रमुदित लेति बलैया।।
दधि ओदन भोजन भरि भाजन एकनि कांधे लैया।
इक नाचत इक करत कुतूहल हरि हलधर दोऊ भैया।।

---

१. बन्यो नंदनदन, २. कैसी में टेरि बुलाई (११५।६, १२८/६)
३. कहि महरि हँसति है फूली अँग नं० (११५।६), ४. धीर (११५।६)

बैठे जाइ सघन बन–अंतर दुहि–दुहि लावत घईयां।
आपुन खात खवावत औरनि जन परमानँद' लेत बलईयां।।

२७५ (आसावरी)

सोभित[1] लाल लकुट कर राती।
सूथन कटि चोलना अरुन पट[2] पीतांबर की गाती।।
ऐसे[3] ही गोप–तनय सब बनि–बनि आए स्याम सँगाती।
प्रथम गोपाल चले बछरु चरावनि आसिस पढत द्विज जाती।।
निकट न[4] तजति रोहिनी जसुमति आनंद उमगी छाती।
'परमानंद' नंद आनन्दित दान देत बहु भाँती।।

२७६ (सारंग)

आजु अति आनंदे ब्रजराइ।
धन्य द्यौस बन चलत प्रथम ही कान्ह चरावन गांइ।।
नव पीतांबर लकुट मुरलिका अरु सिर खोरि बनाए।
प्रीति सहित अबलोकि गहत हैं मात पिता के पाँइ।।
गोरोचन अरु दूब दधि माथें रोरी अच्छत लाइ।
निरखति मुख, पावति सब सुख गोपीजन लेति बलाइ।।
ग्वाल विमल भए मिलत परस्पर घर–घर तें सब आई।
हेरी देत बजावत महुबरि उर आनँद न समाई।।
ब्रज जन सब मिलि धेनुहि सोंपत नैन निरखि सचुपाइ।
'परमानँद' प्रभु बानिक ऊपर बारि–बारि बलि जाइ।।

२७७ (सूहो)

गोधन चारत मदनगोपाल।
जूथ जूथ मिलि ग्वाल मंडली कमलनैन कौ ख्याल।।
धौरी, धूमरि, भूहरि, चमरी, नंद–नँदन की गाँइ।
'परमानँद' स्वामी नट–नागर लीला–मानुस रूप।
सिव, विरंचि जाकौ जसु गाबत अब उह भेष अनूप।।

---

१. *सोहत (ग. ज.),*
२. *रंग अरु (क.)*
३. *ऐसे गोप सबै बन आए जो हैं स्याम संघाती।*
४. *निहारति रोहिनी जसुदा आनंद उमगी*

२७८ (आसावरी)

चले हरि बच्छ चरावन माई।
रेंता पेंता तोक, श्रीदामा लीने संग लगाई।।
कहत गोपाल सुनहु रे गोपौ वृंदावन अनुसरिए।
मधु मेवा पकवान मिठाई भूखैं[1] लागै खइए।।
खेलत, हँसत, करत कौतूहल आए जमुना–तीर।
'परमानंददास' कौ ठाकुर रामकृष्ण दोउ बीर।।

२७९ (सारंग)

वे देखो बन धेनु चरावत दोउ जादौ वीर।
कान्ह कान्ह कहि टेरत डोलत फिरत अहीर।।
एक जु शृंगी पत्र बजावत एक धावत एक धीर।
एक जु निर्तत करत कोलाहल कालिंदी के तीर।।
यह मंडली कहा बनि आवै पीबत पिबावत छीर।
'परमानँद' सुर कौतुक भूले नैननि आनँद नीर।।

२८० (सारंग)

कहि कहि बोलत धौरी कारी।
देखहु भाग्य इनि गांइन कौ प्रीति करी बनवारी।।
मोटी भई चलत वृंदावन नंद–सुवन की पाली।
काहे न दूध देहि ब्रज पोखी हस्त कमल की लाली।।
बेनु स्त्रवन सुनि तृन दंतनु धरि गोवर्द्धन तैं चाली।
पवन–बेग आईं 'परमानंद' ते क्यों कहिए टाली•।।

२८१ (सारंग)

मोहन चढि कदंब पर टेरत।
बिडरी गांइ ग्वाल सब ठाढे तिनके न्यइ[2] निवेरत।।
धौरी धूमरि गाँग बुलाई काजर पियरी हेरत।
'परमानंद' दौरि सब आईं पीतांबर के फेरत।।

२८२ (सारंग)

कन्हैया हेरी दै गावै।
नाना बरन नाम गांइनि के बेनु बजाइ बुलावै।।

---

१. *भूख लागै तब खइए।*

• *सूरसागर पद सं० १२३१ पर भी कहि कहि टेरत से प्रारंभ है।*

२. *न्याउ (क)*

सींग आवरी आँख काजरी मोटे जिनके पाठे।
तिनके डरनि सिंघ थर काँपै ब्रज में बिजाहर बाठे।।
जाँघनि पर रोटी धरै दधि सों ओदन सान्यौ।
'परमानँद' स्वामी के संगी दूध पतौअनि आन्यौ।

10. भोजन-समय

छाक

२८३ (सारंग)

छाक लै जाहु री मेरी माई जहाँ री मिलै कुँवर कन्हाई
इह[1] मोदक पकवान मिठाई खीर सँजावलि अधिक बनाई
आनिहु खिचरी बहुत सँधाने पापर सेकि धर्‌यौ गुन[2] लाई।
पूप सस्कुली पूरी दधि ओदन बहुत[3] जुरुचि करि खाई।।
दूरहि तें देखे बलदाऊ कन्हैया छाक है आई।
'परमानँद' मन की सब जानी ऐसी मैया की हौं लेउँ बलाई।।

२८४ (सारंग)

हरि कों टेरति फिरति ग्वाली।
आइ लेहु तुम छाक आपुनी बालक बल बनमाली।।
आजु कलेऊ प्रातहि कीनो बछरा लै बन आए।
मेवा मोदक मात जसोदा मेरे हाथ पठाए।।
जब इहि बानी सुनी[4] मनोहर चहल आए ता पास।
कीनी भली भूख है लागी बलि 'परमानंददास'•।।

२८५ (सारंग)

सिला पखारहु भोजन कीजै।
नीके बिंजन बने कौन के चाखि चाखि सबही कों दीजैं।
अहो अहो सुबल अहो श्रीदामा अर्जुन भोज बिसाल।
अपने अपने ओदन लाबहु आज्ञा दई है गोपाल।।

---

१. घृत (छ.), २. गुर (ग), ३. लालन बहुत जु रुचि (बं.१३० ।२)
४. सुनि मनमोहन चलि (इ. ग. घ. ज)
• सूरसागर प० सं० १०७६ पर भी परिवर्तन के साथ

फर अँगुरिनि अँगुरिनि बिच राखे बाँटि बाँटि सबहिनि कों देत।
'परमानँद' स्वामी—सँग[1] क्रीडत प्रेम पुंज कौ बाँध्यो सेत।।

२८६ (सारंग)

हँसत परस्पर करत कलोल।
बिंजन सबै[2] सराहे माधौ[3] मीठे कमलनयन के बोल।
तोरि पलास—पत्र बहुतेरे पनवारौ जोस्यो बिस्तार।
चहुँ दिसि बैठी ग्वाल मंडली जेंवन लागे नंदकुमार।।
कौतुक देखहि सबै[4] देवता जज्ञपुरुस हैं नीके रंग।
सेस प्रसाद अबहि[5] हम पायौ 'परमानंददास' हौ संग।।

२८७ (सारंग)

बाँटि बाँटि बन[6] चरन्ह कों देत।
ऐसे ग्वाल हठीले[7] भावतु हैं सेस रहत सो आपुन लेत।।
आछौ दूध गाँइ धौरी कौ अहोटि जमायौ अपने हाथ।
हँडिया मूँदि जसोदा माता तुम्हकों दै पठई ब्रजनाथ।।
आनँद मगन फिरत अपने रँग वृन्दावन कालिन्दी तीर।
'परमानंदास' झूठौ लै बाँह पसारि दियौ बलवीर।।

२८८ (गौरी)

आजु दधि मीठौ मदनगोपाल !
भावै मोहि तुम्हारौ झूठौ सुंदर[8] नैन बिसाल।।
बहुतदिवस हम रहे कुमुद वन कृष्ण तुम्हारे साथ।
ऐसौ स्वाद हम कबहुँ न देख्यो सुनु गोकुल के नाथ।।
आने पत्र लगाए[9] दौनाँ दीए सबहिनि बाँटि।
जिनि नहिं पायो सुनु रे भैया ! मेरी हथेली चाटि।।
आपुनि हँसत हँसावत औरन्ह मानोंऽब लीला[10] रूप।
'परमानँद' प्रभु[11] इह जानति हौं तुम त्रिभुवन के भूप।।

---

१. रस रीझे., २. सकल (ग. ज.)
३. मोहन (च. छ.), ४. सकल (ग. ज.)
५. रह्यो सो पायो (बं. १०१६।५),
६. सबहिन कों (ग), ७. हरिहि भावत (ग)
८. चंचल. ६. बनाए (च) अपने हाथ लगाए दौना (बं २६।१)
१०. मानुष (ग. ज.), ११. नीकें जानति (च)

२८६ (आसावरी)

भावति है बन–बन की डोलनि।
मदनगोपाल मनोहर मूरति है है धौरी धेनु की बोलनि।।
कहाँ बैभव बैकुण्ठ लोक कौ भुवन चतुरदस की ठकुराई।
सिव बिरंचि रमा[1] पदबंदित बेद उपनिसद कीरति गाई।।
कर-तल पात भात ता ऊपर बीच–बीच बिंजन धरि राखे।
बालक–केलि सुँदर ब्रजनाइक ग्वालनि दै–दै आपुनि चाखे
जज्ञपुरुष लीला अवतारी आदि मध्य अवसान एक रस।
'परमानँद' स्वामी[2] करुनामय गोकुल–मंडन भगत प्रेमबस।।

२६० (विभास)

खेलन बनहि चले जदुराई।
कर–तल बेनु लकुटिया काँधे कटि मेखला बनाई।।
द्वार–द्वार प्रति सखा बुलाए बछरा ढीलहु भाई !
भोर भएँ तुम अब कहा सोबहु जागहु नंद–दुहाई।।
अपनी–अपनी छाक लेहु तुम बहुत भाँति घृत–सानी।
'परमानँद' स्वामी की लीला इहि बिधि किनहु न जानी।।

२६१ (सारंग)

सुबल पठाइ दियो सुधि लैन अजहुँ छाक किनि आई।
स्रमित भई बिरमी नेकु छहियाँ ग्वारि कदम–तर पाई।।
क्यों री ! कब के मधु चाहत हैं जसुमति–कुँवर कन्हाई।
जीभ दाबि द्रिग भरि लीने हैं उनिहीं पाँइनि धाई।।
सखा वृन्द अंचलु फेरत हैं आगे गई बधाई।
'परमानँद' बलि-बलि पूछनि पर कहि कहा व्यंजन लाई।।

२६२ (सारंग)

दान घाटी छाक आई गोकुल तें
कावरि भरि रावरे की राखी सब घेरि।
जानि तौ तबै दैहों नंद जू की आनि खैहों
भोजन की रही कछू चाखौ एक बेरि।।

---

१. *नारद.*

२. *प्रभु त्रिभुवननायक (ब. ११५।) दास की जीवनि (११६।१)*

कनक[1] बेला कर में लिएँ राजत गिरिराजधरन
बाँटत मेवा हँसि–हँसि हेरत चहुँ फेरि।
'परमानँद' रूप ऊपर बलि–बलि परमानँद है
परमानँद टोक करत सुबल टेरि।।

२६३ (सारंग)

भोजन कीनौ री गिरवर–धर !
कहा[2] कहों मंडल की सोभा मधुवन ताल कदम–तर।।
पहिलें लिए मनोहर विंजन जन जे किए ब्रज घर–घर।
पाछें डला दियौ श्रीदामा मोहन–लाल सुघर वर।।
हँसत सयानौ सुबल सैन दै जब लीनौ दौना कर।
'परमानँद' प्रभु मुख अवलोकत सुरभी भीर परी पर।।

२६४ (सारंग)

स्यामलाल आऔ हो आई छाक सलौनी।
डला लाल के घर तें आयौ मारग में द्वै दौनी।।
सियरे भए स्वाद नहीं पैयतु रस के गएँ रसाइनि नहीं हौनी
'परमानँद' छकहारी बाँकी टेरति टेर सलौनी।।

२६५ (धनाश्री)

गिरि पर चढि गिरिवर–धर टेरें।
अहो भैया सुबल अहो श्रीदामा ! लावहु गाँइ खिरक के नेरें।।
खाएँ छाक अब बार भई है कछु करि घैया पिबहि सबेरें।
'परमानँद' प्रभु बैठि सिलनि पर भोजन करत चहूँ दिसि फेरें।।•

२६६ (धनाश्री)

अकेली वन–वन डोलि रही।
गाँइ चरावत कहाँ रहे हरि काहू ने न कही।।
बडे सवारे निकसे घर तैं पठयो माइ दही।
भूख लगी है है लालन कौ दुपहर जाम सही।।

---

१. अति प्रवीन जानि राय कनक–बेला कर में लिये बाँटत मेवा मन प्रसन्न सकल पाक परमानंद आरोगत परमानंद
टोके करत सुबल टेरि टेरि। (अ. २६२)

२. का बरनों मंडल०

• सूरसागर प० सं० १०८१ पर भी साधारण अन्तर से।

इतनौ वचन सुनत मनमोहन नागरि–बिथा लही।
'परमानंददास' कौ ठाकुर गोकुल रति निबही।।

२६७ (सारंग)

तुमकों टेरि–टेरि हौं हारी।
कहाँ जु रहे अबलौं मनमोहन लेहु न छाक तुम्हारी।।
भूलि परी आवति मारग में क्योंहूँ न पैंडो पायौ।
बूझति–बूझति इहाँ लौं आई तब तुम बेनु बजायौ।।
देखौ मेरे अँग कौ पसीना उर कौ अंचलु भीनौ।
'परमानँद' प्रभु प्रीति जानिकै धाइ आलिंगन कीनौ।।

२६८ (सारंग)

छकहारी री चार–पाँचक आवति मधि ब्रजराजलला की।
बहु प्रकार बिंजन परिपूरन पठवनि बडे डला की।।
ठटकि ठटकि टेरति गोपालहि चहुँ धाँ दृष्टि करै।।
बेनु मधुर सुनि चली री चपल त्रिय परासोली तें परै।
'परमानँद' प्रभु प्रेम मुदित मन टेरि लई लाँबी करि बाँहि
हँसि हरि कसि–कसि फैंट कटिन सों
बाँटत छाक बनढाँक माँहि।।

२६९ (सारंग)

कुमुदवन भली पहुँची आइ।
सुफल भई इहि छाक तिहारी लाल कदम–तर पाइ।।
ह्याँ तैं चले जो मानसरोवर सखा संग सब लाइ।
बैठे ताकि ठौर गिरि ऊपर चरत चहूँ दिसि गाँइ।।
खेलत सखा हँसत परस्पर बातें करत बनाइ।
'परमानँद' बलि–बलि बूझनि की कहा–कहा बिंजन लाइ।।

३०० (सारंग)

रंग रँगीली डलिया पठईं छाक इक ठौर तैं।
विविध भाँति साजि चंद्रावलि पठई अपनी ओर तैं।।
कनक थार बेला परिपूरन झलकत केऊ ठौर तैं।
दधि सिखरन टपकत चहूँ दिसि तैं छकहारिनि की दौर तैं।।
ढाँपे पीत बसन जतननि सों सौरभ पवन झकझोर तैं।
'परमानंद' पत्र औ बीरा छोरि लिए पिय छोर तैं।।

३०१ (सारंग)

मोहन जेंवत छाक सलौनी
सखनि सहित हुलसे दोऊ भइया झपटत कर लै दोहनी।।
आछे बिजन बनै कौन के चाहत हरि की कोहनी।
'परमानंद' प्रभु कहत सखनि सौं पहिलें करि लै बोहनी।।

३०२ (सारंग)

बिहारीलाल आऔ आई है छाक।
गैयाँ बिडरि गई हैं मोहन ! बगदावौ दै हाँक।।
अरजुन भोज सुबल श्रीदामा मधुमंगल एक ताक।
अपनी अपनी पातर लै–लै देवें फैल फराक।।
षटरस खीर खाँड घृत भोजन बहु पकवान पिराक।
'परमानँद' प्रभु जेंवत रुचिकर प्रेम प्रीति के पाक•।।

३०३ (सारंग)

डला भारी कैसे कै उठाऊँ छाक घर–घर की सब पठवन आवै
गिनि देखै गाँठि न हौं जानत कौन–कौन मेवा
बसन सुरंग हा हा री पाँइनि परिकें पठावै।।
आप ब्रजनाथ चित राखै मेरे चित पर
बिंजन ओदन थार बेलनि समावै।
'परमानंद' प्रभु स्याम परस्पर कहि बात
तिहि काल कावर भरि–भरि लावै।।

३०४ (सारंग)

कावरि द्वै भरिकै छाक पठई नंदरानी
आप मोहि मिले मारग में मधुवन के कूल।
सुबल तोक तरुन बैस आवत कछु भोजन
लिएँ चंचल गति चपल दोऊ दरसन फूल।।
कनक थार जगमगात बेलनि की भाँति
कांति भरे हैं नंदरानी आप दोऊ समतूल।
पचरंग पीर पाट की डोरी चौसर चहुँओर खचित
पवन गवन विकसि जात रेसम के झूल।।

• *सूरसागर प० सं० १०८२ पर भी साधारण शब्द तुक भेद से*

छोटी छोटी द्वै गाँठि तामें पठवत सब
ब्रज जन की आसपास लटकि रहे फौंदा मखतूल।
सकल पाक 'परमानँद' अरोगत
परमानँद जानत सब बातनि कौ मूल।।

३०५ (सारंग)

छाक खात गोवर्द्धन ऊपर।
वह बापै बो बा ऊपर झपटत गिरनि न देत भू पर।।
आछे मीठे कहि–कहि नाचत लै–लै कर तैं भाजत।
सुबल सुबाहु तोक श्रीदामा ग्वाल–मंडली राजत।।
विविध केलि करत मन–भाई 'परमानंद' हि दीनी।
रहसि मन मीनी।।

३०६ (मल्हार)

कदम–तर भली भाँति भयो भोजन।
हलधर कहत करौ अब अचबन गैयाँ भूली जोजन।।
जो भावै सो और कछु लैहौ करत सखा सब नाहीं।
चलि गाँइनि देखौ 'परमानँद' घटा चहूँ दिसि छाहीं।।

३०७ (मल्हार)

स्याम ! सुनि हरित भूमि सुखकारी।
बिंजन बाँटि सबनिकों दीजै बिनती लाल ! हमारी।।
बरसि उघर घन नीकौ लागत पवन चलत सुखकारी।
भोजन कौं बैठे 'परमानँद' नवल लाल गिरिधारी।।

३०८ (मल्हार)

चहुँदिसि हरित भूमि बन माँहि।
जोरि मंडली जेंवन लागे बैठि कदम की छाँहि।।
घुमडी घटा दामिनि की बरनत बरनी न जाँहि।
यह सुख स्याम ! तिहारे सँग बिनु और अनत कहुँ नाँहि
धनि–धनि ग्वाल–बाल जिनके हरि कौरहि लै लै खाँहि।
'परमानंद' ब्रह्म सिव विस्मित सिर धुनि–धुनि पछिताँहि।।

३०९ (सारंग)

दुहि दुहि ल्यावति धौरी गैया।
कमल–नयन कौं अति भावतु है मथि–मथि प्यावति घैया।।

हँसि–हँसि ग्वाल कहत सब बातैं सुनु गोकुल के रैया !
ऐसौ स्वाद कबहुँ[1] न चखायौ अपनी सौंह कन्हैया !
मोहन ! भूख अधिक जो लागी छाक बाँटि लेहु भैया !
'परमानंददास' कौं दीजै फुनि–फुनि लेत बलैया।।

भोजन–

३१० (सारंग)

बलि गई स्याम मनोहर गात।
तुम्हरौ बदन सुधाकर सीतल अचवत द्रिग न अघात।।
नैंन[2] ओट जिनि होहु साँवरे कहति जसोदा मात।
छिनु एक खेलनि जात घोष में पल जुग कलप बिहात।।
भोजन आइ करहु दोउ भईया कुँवर लाडिले तात।
'परमानंद' कहति नँदरानी प्रेम लपेटी बात।।

३११ (सारंग)

आजु[3] सवारे के भूखे हो
मोहन ! खाउ कछू मोहि लागौ बलैया।
मेरौ[4] कह्यौ नाहिंन करहुगे तौ[5] हौं अपने बलभद्र की मैया।।
दौरि[6] कें कंठ लगे मनमोहन मेरी सौं मेरी सौं मेरौ कन्हैया।
'परमानंद' कहति नँदरानी अपने आँगन खेलहु दोउ भैया।।

३१२ (सारंग)

नेंकु गोपालहिं[7] दीजहु टेरि।
आजु सवारे कियौ न कलेऊ दुचित[8] भई बड़ी बेरि।।

---

१. *हम कबहुँ न चाख्यो (ग. घ. ङ. च. छ. ज.)*
२. *पलक ओट जिन कबहूँ करिहों कुँवर लाडिले तात*
पलक ओट जिनि जाउ पियारे (बं. १२६।१)
३. *बड़ी वार के भूखे० (बं. ३४।७) बहोत वार के.....जैवौं तौ लैवों बलैया (बं. ३७।१)*
४. *मेरौ कह्यौ तुम जो नहिं मानौ तौ अपने (बं. ३७।१)*
मेरौ कह्यौ तुम लाल नहिं मानत हौं अपने (बं. ३२।१६)
५. *तौ अपने बलदाउ की मैया (बं. ३७।१), ६. दौरि आइ हरि कंठ लपटाने (बं. ३७।१)*
७. *गोद बैठि हरि जेंवन लागे लागे 'परमानँद 'बलि जैया (बं. ३७।१)*
'परमानंद' स्वामी की जीवनि अपने .....(बं. ११६।१)
८. *गुपालै, ६. सुरति (ग)*

ढूँढति फिरति जसोदा माता कान्ह[1] कहाँ धौं डोलत।
यह कहियहु घर आउ साँवरे बाबा नंद तोहि बोलत।।
इतनी बात सुनत ही आए प्रीति जु मन मँहि जानी।
'परमानँद' स्वामी की जननी देखि बदन मुसिकानी।।

३१३ (सारंग)

• गोपालहिं प्रेम उमगि बोलति नँदरानी।
अहो श्रीदामा ! लै आवहु किनि टेरि–टेरि मधु[2] बानी।।
भोजन बार अवार आनि जिय सुरति भई आतुर अकुलानी
ढूँढति घर[3] घर आँगन द्वारे लौं तन की दसा हिरानी।
जसुमति प्रीति जानि उठि दौरे सोभित मुख कच रज लपटानी
'परमानंद' नंद–नंदन कौ अखियाँ निरखि[4] सिरानी।।

३१४ (सारंग)

जसोदा पैंडे पैंडे डोलै।
इत गृह कारज[5] उत सुत कौ डरु दुहूँ भाँति मन तोलै।।
आवहु कुँवर[6] ! तुम करहु कलेऊ जननि रोहिनी बोलै।
'परमानँद' स्वामी[7] फिरि चितयो आनँद हृदय कलोलै।।

३१५ (सारंग)

•देखि धौ री ! कान्ह कहाँ है खेलत।
कै ग्वालनि सँग गए अगाऊ[8] किधौं खरिक बछरुआ मेलत
कहति जसोदा अपनी[9] सखी सौं परोसि धरी है थारी।
भोजन आनि[10] करै बल केसौ बालक छुधित[11] मुरारी।।
ऐसी प्रीति पिता–माता की नैन[12] ओट नहिं कीजै।
बारंबार दास परमानंद' हरि की बलैया लीजै।।

---

१. *कहाँ–कहाँ (क. ग. च. ङ), प्रेम उमगि बोलति (क. ग.), प्रेम मगन बोलति, प्रेमभरी बोलति.... से भी प्रारंभ हैं।*
२. *मृदु (इ. ग.),* ३. *द्वार–द्वार आँगन लौं (बं. ११६।१),*
४. *देखि (ग.) रानी जू पैडे० से भी प्रारंभ है।* ५. *काज उतै*
६. *अहो कुँवर,* ७. *प्रभु फिरि तन चितयो (क. ग. च.)*
• *सखी री ! गोपाल कहाँ० (ग) से भी प्रारंभ है।*
८. *अगम ने खिरक बछरुआ (ग.)* ९. *सखियन आगें परसि धरी*
१०. *आइ करौ दोउ भैया बालक (इ. घ.)* ११. *सहित (इ. घ.)*
१२. *पलक (इ. घ)*

३१६ (सारंग)

बोलति स्याम जसोदा मैया।
अति आनंद प्रेमरस उमगी हँसि–हँसि लेति बलैया।।
उर अंचर लै स्रम–जल पोंछति फुनि–फुनि अपने हाथ।
भोजन करहु लडैते मोहन[1] ! सब ग्वालनि के साथ।।
सुत–मुख चंद्र विलोकि सजल ह्यै (ही) इनहीं मंत्र समाउ
'परमानँद' प्रभु परम मनोहर अति विचित्र ब्रजराउ।।

३१७ (धनाश्री)

भोजन कों बोलति महतारी।
बल समेत आबहु मेरे लालन ! बैठे नंद परोसें थारी।।
खीर सिरात स्वाद नहिं आवै बेगि गसा तुम लेहु मुरारी
हितवत[2] चित नीकें करि जेंबहु पाछै कीजो केलि बिहारी
अहो[3] अहो सुबल अहो श्रीदामा ! बहुत करहु मनुहारी।
'परमानंद' जसोदारानी मुख बिंजन दै जाऊँ बलिहारी।।

३१८ (सारंग)

परोसति पाहुनी त्यों नारी।
जेंवत राम–कृष्ण की[4] जोरी नंदबाबा की थारी।।
मोही मोहन कौं मुख चितबति[5] बिकल भई अति भारी।
भूतल[6] भात कुरै भई ठाढी हँसति चतुर[7] ब्रजनारी।।
मानहुँ[8] काम बिरह तन–व्यापौ नवजोबन सकुँवारी।
'परमानंद' जसोमति[9] ग्वालिनि सैननि बाहिर टारी !

३१९ (सारंग)

हरिहिं ल्याउ री ! भोजन करन।
बडी बार खेलत भई मोहन गिरि गोवर्द्धन–धरन।।
बैठे नंद बाट चाहत हैं ताती खीर सिराई।
बालक सब संगहि लै आबहु कहति जसोदा माई।।

---

१. मेरे (ग.), २. हित चित दै जेंवौ तुम नीकें (बं. ११६।१)
३. सुबल सुबाहु श्रीदामा संग लै बैठे कुँवर जाऊँ बलिहारी (बं. ११३।६)
४. दोउ भैया (बं. २६।५), ५. निरखति (इ. घ.)
६. भू पै भात, ७.सकल,
८. कै याहि आँचि हिए की लागी (बं. ११६।१), ९. सयानी (वं. २७)

रंधनु कियौ दूध अधिकाई सुनहु कान्ह ! इहि बात।
'परमानँद' प्रभु बल–समेत तुम घरहिं आइए तात।।

३२० (धनाश्री)

जेंवत नंद गोपाल खिझावत।
पहरि पन्हैयाँ बाबा जू[1] की निपट[2] निकट डरपावत।।
व्रजरानी बरजति मोहन[3] कौ हरुए–हरुए आवत।
'परमानँद' स्वामी सुख–दाता पूत बबा कौ भावत।।

३२१ (गौरी)

हरि भोजन करत बिनोद सौं।
करि करि कौर मुखारबिंद में देति जसोदा मोद सौं।।
मधु मेवा पकवान मिठाई दूध दही घृत ओद सौं।
'परमानँद' गिरिधर[4] रुचि उपजी भोगलग्यौ चहुँ कोद सौं

३२२ (धनाश्री)

भोजन करत हैं गोपाल।
षटरस धरे बनाइ जसोदा साजे कंचन–थार।।
करत बयारि निहारति हरि–मुख चंचल नैन बिसाल।
जो भावै सो माँगि[5] लेहु हो ! मधुरे मधुर रसाल।।
सो[6] सुख सनकादिक कौं दुर्लभ दुरि देखतिं ब्रजवाल।
'परमानँद' प्रभु रसिक लाडिलौ चिरजियौ मदनगोपाल।।

३२३ (सारंग)

तेरे पैयाँ लागूँ गिरधर ! भोजन कीजै।
उलटत–पलटत झगुलिया भींजे
खीझत खिझाने सुंदर तन छीजै।।
फेनी बाबर खुरमा खाजा गूझा मिस्त्री लडुआ लीजै।
बाँटि देत ग्वाल–बाल कौं 'परमानँद' जननी–कर लीजै

---

१. नंद की (क. ङ) २. निकट आइ डरपावत (बं. ११६।१)
३. गोपालै हौं हरें ढिंग आवत (बं ११६।१)
४. प्रभु भोजन कीन्हौ भोग लग्यो संखोद सो
जेंमत रुचि सों ,, ,, ,, (बं. १३०।२)
५. लेह सेरे मोहन ! माधुरी
६. जो मुख (ग)

३२४ (आसावरी)

जेंबत राम–कृष्ण दोऊ भैया जननी जसोदा जिंवावै री।
खाटे खारे मीठे बिंजन स्वाद अधिक उपजाबैं री।।
करि मनुहारि सखी सहचरी सब मधुर बचन मुख भाखै री।
'परमानंद' मात हित जानी अधिक–अधिक रस चाखै री।।

३२५ (जैतश्री)

इहि तौ भाग्य पुरुष मेरी माई !
मोहन कों गोदी में लीएँ जेंवत हैं नँदराई।।
चुचकारत चूबत अंबुज मुख आनँद उर न समाई।
लपटे कर लपटात थोंद पर दूध लार लपटाई।।
चिबुक केस जब गहत मनोहर तब मैया मुसिक्याई।
माँगत सिखरन दै री मैया ! बेला भरिकै लाई।।
अंग–अंग प्रति अमित माधुरी सोभा सहज निकाई।
'परमानँद' नारद मुनि तरसत घर बैठे निधि पाई।।

३२६ (बिलावल)

जेंऔ मेरे कुँवर कन्हाई !
सखा–मंडली समेत जेंइये बलि जाउँ कहति जसोदा माई।।
खीर खाँड घृत माखन मिस्री जो चाहौ सो लेहौ भाई।
हँसि–हँसि मागि लेत मनमोहन सखा–मंडली सब पधराई।।
चिरजीयौ मेरौ छगनुवा सब गोपीजन लागति पाँई।
'परमानंददास' कौ ठाकुर सब ब्रज–जन के अति सुखदाई।।

३२७ (आसावरी)

लाल कों मीठी खीर जु भावै।
बेला भरि–भरि लावति जसोदा बूरौ अधिक मिलावै।।
कनिया लियें जसोदा जू ठाढी रुचिकर कौर बनावै।
ग्वाल–बाल बनचर के आगें झूठें ही हाथ दिखावै।।
ब्रजरानी जु चहूँधा चितवति जन मन मोद बढावै।
'परमानंददास' कौ ठाकुर हँसि–हँसि कंठ लगावै।।

३२८ (सारंग)

भोजन भली भाँति हरि कीनौ।
षटरस बिंजन मठा सलौनौ माँगि–माँगि हरि लीनौ।।

हँसत लसत परोसति नँदरानी बाल केलि–रस–भीनौ।
'परमानँद' ऊबर्‌यो सो हँसिकै टेरि सुबल कों दीनौ।।

३२६ (देवगंधार)

माखन मोहि खवाइ री मैया !
बडी बार भई है भूखे हम हलधर दोऊ भैया।।
बडी कृपन देखी तू जननी ! देति नहीं अध घैया।
'परमानंददास' की जीवनि ब्रज–जन केलि–करैया।।

३३० (धनाश्री)

रानीजू ! एक बचन मोहि दीजै।
पठवौ सदन हमारे सुत कौं कह्यौ मानि मेरौ लीजै।।
जब कछु नीकी सौंज बनावति तब घर जिय अकुलाइ।
अटकी रहति तिहारे सुत पर इन बिनु लियौ न जाइ।।
पठवौ मेरे संग कान्ह कों बेगि ही फिरि लै आऊँ।
'परमानँद' हँसि सौंपै महरि जब लै गई अपने ठाऊँ।।

३३१ (सारंग)

जसोदा ! एक बोल हौं[1] पाउँ।
राम–कृष्ण दोऊ तुम्हरे सुत सखनि समेत जिवाउँ।।
जो तुम नंद महर[2] तै सकुचौ तौ कत तुमहिं सुनाउँ।
जो तुम आज्ञा देहु कृपा करि भोजन जाइ[3] बनाउँ।।
तब[4] उनके घर गए स्यामघन अपनौ भवन बताउँ[5]।
'परमानंद' प्रेम–भरि उमगी घर बैठें पहुँचाउँ[6]।।

३३२ (सारंग)

कुंज में बैठे जुगल–किसोर।
अरस–परस दोउ खात खवावत रुचि सों दै–दै कौर।।
ललितादिक सब सखी परोसतिं लोचन कियें चकोर।
मधु मेवा पकवान मिठाई लावति हैं चहुँओर।।
हास बिलास विविध रस पीवत मधुर बचन चितचोर।
तन मन धन बारति 'परमानँद' करि अंचल की छोर।।

---

१. जो, २. राइ सों सकुचौ तौ हौं उन्हें मनाऊँ, ३. ठाट
४. जब वाके घर, ५. बतायौ, ६. पहुँचायौ

३३३ (देवगंधार)

कुंज में जेंवत स्यामास्याम।
आस–पास मालती माधवी बिबिधि कुसुम बन्यौ धाम।।
पय पकवान मिठाई मेवा भरि–भरि थाल जु पाए।
रुचि सौ परस्पर खात खवावत जुगल रूप मन भाए।।
सखी एक सनमुख भई अचवति जमुनाजल झारी लै हाथ
बीरी देति सम्हारी दुहुँनि मुख उर आनँद न समात।।
बैठे जाइ कुसुम–सिज्जा पर दंपति सब सुख–रास।
विविध बिहार किये मन भाए बलि 'परमानँददास'।।

अँचवन–बीरी–

३३४ (सारंग)

भोजन करि उठे दोऊ भैया।
हस्त पखारि सुद्ध अँचवन करिकै बीरी लेहु कन्हैया।।
करति आरती मात जसोदा फुनि फुनि लेति बलैया।
'परमानंददास' कौ ठाकुर जन–जन केलि करैया।।

३३५ (सारंग)

कृष्ण कों बीरी देति ब्रजनारी।
पान सुपारी काथौ गुलाबी लौंग कील सँवारी।।
ब्रजनारी जो कुंज लौं ठाढी कंचन की सी बारी।
लै लै बीरी कर–कमलनि में ठाढी करति मनुहारी।।
कहति लाडिले ! बीरी लीजै मोहन नंदकुमार।
'परमानँद' प्रभु बीरी आरोगत ब्रज के प्रान–अधार।।

३३६ (धनाश्री)

बीरी आरोगत गिरिधरलाल।
अपने कर सौं देति राधिका हरि–मुख मधुर रसाल।।
ज्यों–ज्यों रुचि उपजति उर अंतर त्यों–त्यों करति बिहार।
कबहुँक देति दसन खंडन करि कबहुँक देति उगार।।
सहचरि ओट भईं सब निरखति हिय में हरष अपार।
जै–जै राधिके ! जस गावति हैं 'परमानँद' सुख–सार।।